राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-४, अंक-७ लखनऊ अप्रेल २०१८ विक्रमी सं. २०७५ युगाब्द ५१२० पृष्ठ-३२ निःशुल्क

अनु.जाति/जनजाति अधिनियम के दुरुपयोग पर सर्वोच्च न्यायालय के नये दिशा निर्देश

नई दिल्ली। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम १९८९ के अन्तर्गत अपराध में सुप्रीम कोर्ट ने दिए दिशा निर्देश दिए हैं. सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि इस तरह के मामलों में अब कोई स्वतः गिरफ्तारी नहीं होगी, गिरफ्तारी से पहले आरोपों की जांच जरूरी है. गिरफ्तारी से पहले जमानत दी जा सकती है.

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि यदि कोई आरोपी व्यक्ति सार्वजनिक कर्मचारी है, तो नियुक्ति प्राधिकारी की लिखित अनुमति के बिना, यदि व्यक्ति एक सार्वजनिक कर्मचारी नहीं है तो जिला के वरिष्ठ अधीक्षक की लिखित अनुमति के बिना गिरफ्तारी नहीं होगी. कोर्ट ने कहा कि ऐसी अनुमतियों के लिए कारण दर्ज किए जाएंगे और गिरफ्तार व्यक्ति व संबंधित अदालत में पेश किया जाना चाहिए. मजिस्ट्रेट को दर्ज कारणों पर अपना दिमाग लगाना चाहिए और आगे आरोपी को तभी हिरासत में रखा जाना चाहिए जब गिरफ्तारी के उचित कारण हो. इन निर्देशों का उल्लंघन करने पर अनुशासनात्मक के साथ-साथ अवमानना कार्रवाई होगी. कोर्ट ने कहा कि संसद ने कानून बनाते वक्त ये नहीं सोचा था कि इसका दुरुपयोग किया जाएगा.

सुप्रीम कोर्ट ने माना इस एक्ट का दुरुपयोग हो रहा है और केस दर्ज करने से पहले डीएसपी स्तर का पुलिस अधिकारी प्रारंभिक जांच करेगा. ■

बहुविवाह और हलाला का मामला संविधान पीठ को

नई दिल्ली। तीन तलाक को असंवैधानिक ठहराने के बाद अब मुस्लिम विवाह से जुड़े दो और विवादित मामले सर्वोच्च अदालत के सामने आए हैं। मुस्लिम समाज में प्रचलित बहुविवाह और निकाह हलाला के मामलों पर सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर हुई है, जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने इसे संविधान पीठ के हवाले कर दिया है। चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा की बेंच ने सोमवार को इस मसले पर विचार किया और संविधान पीठ बनाने का फैसला किया। साथ ही अदालत ने केंद्र सरकार व कानून मंत्रालय से जवाब भी मांगा है।

चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा, जस्टिस एएम खानविलकर और जस्टिस धनंजय वाई चंद्रचूड़ की तीन सदस्यों की बेंच ने समता के अधिकार का हनन और लैंगिक न्याय सहित कई बिंदुओं पर दायर जनहित याचिकाओं पर विचार किया। पीठ ने इस दलील पर भी विचार किया कि २०१७ में पांच सदस्यों की संविधान पीठ के फैसले में तीन तलाक को असंवैधानिक करार देने वाले मामले से बहुविवाह और निकाह हलाला के मुद्दे बाहर रखे गए थे।

अदालत ने कहा कि बहुविवाह और निकाह हलाला के मुद्दे पर विचार के लिए पांच जजों की संविधान पीठ बनाई जाएगी। बहुविवाह प्रथा में मुस्लिम व्यक्ति को चार बीवियां रखने की अनुमति है जबकि निकाह हलाला प्रथा में शौहर द्वारा तलाक दिए जाने पर उसी शौहर से दोबारा निकाह करने से पहले महिला को एक अन्य व्यक्ति से निकाह करना होता है। ■

अंतरिक्ष में भारत की एक और ऊंची उड़ान, सैन्य बलों को मिलेगी मदद

श्रीहरिकोटा। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत ने २९ मार्च को एक और ऊंची उड़ान भरी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने जीसैट-६ए संचार उपग्रह को सफलतापूर्वक निर्धारित कक्षा में स्थापित कर दिया। भूस्थैतिक रौकेट जीएसएनवी-एफ ०८ के जरिये इसका प्रक्षेपण किया गया। इस प्रक्षेपण यान में तीसरे चरण का स्वदेश विकसित क्रायोजेनिक इंजन लगा था।

इसरो के अध्यक्ष के सिवन ने मिशन को सफल बताया और इस कार्य में लगे वैज्ञानिकों को बधाई दी। जीसैट-६ए उच्च क्षमता वाला एस-बैंड संचार उपग्रह है। इससे सैन्य बलों को उनके ऑपरेशन में भी बहुत मदद मिलेगी। इसकी सबसे बड़ी खासियत मल्टी बीम कवरेज सुविधा है। इससे नेटवर्क मैनेजमेंट तकनीक में मदद मिलेगी। इस उपग्रह के प्रक्षेपण से सेटेलाइट आधारित मोबाइल कम्युनिकेशन उपकरणों के संचालन में काफी मदद मिलेगी। ■

इच्छा मृत्यु की वसीयत को कानूनी मान्यता

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसले में मरणासन्न व्यक्ति द्वारा इच्छा मृत्यु के लिए लिखी गई वसीयत (लिविंग विल) को गाइडलाइन्स के साथ कानूनी मान्यता दे दी है। मरणासन्न व्यक्ति को यह अधिकार होगा कि कब वह आखिरी सांस ले। कोर्ट ने कहा कि लोगों को सम्मान से मरने का पूरा हक है। लिविंग विल एक लिखित दस्तावेज होता है जिसमें कोई मरीज पहले से यह निर्देश देता है कि मरणासन्न स्थिति में पहुंचने या रजामंदी नहीं दे पाने की स्थिति में पहुंचने पर उसे किस तरह का इलाज दिया जाए। इच्छा मृत्यु वह स्थिति है जब किसी मरणासन्न व्यक्ति की मौत की तरफ बढ़ाने की मंशा से उसे इलाज देना बंद कर दिया जाता है। ■

कर्नाटक में विधानसभा चुनाव की घोषणा

नई दिल्ली। चुनाव आयोग के अनुसार कर्नाटक में विधानसभा की २२४ सीटों पर १२ मई को मतदान और १५ मई को मतगणना होगी।

इस चुनावी लड़ाई में कांग्रेस, भाजपा और जनता दल (सेकूलर) प्रमुख दल हैं। कर्नाटक उन तीन राज्यों से एक है जहाँ मुख्यमंत्री सिद्धरमैया के नेतृत्व में अभी भी कांग्रेस की सरकार है। अपनी इस सरकार को बचाना कांग्रेस के सामने एक बड़ी चुनौती है। कांग्रेस यहां अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है।

दूसरी ओर भाजपा भी २०१९ के लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए दक्षिण के इस राज्य को जीतकर अपना दावा मजबूत करना चाहती है। इस राज्य के चुनाव परिणामों का मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों पर भी प्रभाव पड़ेगा, जो इस वर्ष के अन्त में होने वाले हैं। कर्नाटक हारने की स्थिति में कांग्रेस का बढ़ा हुआ मनोबल बीजेपी के लिए मुश्किलें खड़ी कर देगा। यही कारण है कि कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी से लेकर बीजेपी के चाणक्य अमित शाह का लगातार कर्नाटक दौरा जारी है। प्रधानमंत्री मोदी भी यहाँ चुनाव प्रचार के लिए आने वाले हैं।

पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा की पार्टी जनता दल (एस) भी कर्नाटक में सत्ता की दौड़ में है और मुकाबले को तिकोना बना रही है। ■

चारा घोटाले में लालू को १४ साल की जेल, ६० लाख जुर्माना

रांची। चारा घोटाले से जुड़े चौथे मामले में दुमका ट्रेजरी केस में सीबीआई स्पेशल कोर्ट ने लालू प्रसाद यादव को १४ साल की सजा सुनाई। उन पर ६० लाख का जुर्माना भी लगाया। सीबीआई के वकील ने शनिवार को आए इस फैसले के बारे में बताया कि कोर्ट ने लालू को आईपीसी और करप्शन एक्ट के तहत ७-७ की सजा सुनाई है, जो अलग-अलग चलेंगी।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले चारा घोटाले के तीन मामलों में भी लालू प्रसाद को सजा सुनाई जा चुकी है और वे रांची जेल में सजा काट रहे हैं। वैसे इस मामले में सजा सुनने के लिए लालू की पेशी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से हुई, क्योंकि वे अस्पताल में भर्ती हैं। ■

२० लाख तक की ग्रेच्युटी टैक्स फ्री

नई दिल्ली। प्राइवेट सेक्टर में काम रहे कर्मचारियों के लिए प्रसन्नता भरा समाचार आया है। लोकसभा में गुरुवार को ग्रेच्युटी भुगतान संशोधन विधेयक २०१७ पास हो गया है। इस बिल से प्राइवेट सेक्टर में काम रहे लोगों को काफी फायदा होगा। इस विधेयक में केंद्र सरकार ने अवकाश प्राप्त कर रहे लोगों के लिए २० लाख रुपए तक की ग्रेच्युटी को कर मुक्त कर दिया है।

वैसे इस विधेयक का लाभ सरकारी और अर्द्धसरकारी संगठनों के लाखों कर्मचारियों को भी मिलेगा। अभी तक कर मुक्ति की यह सीमा केवल १० लाख रुपये थी। ■

पंकज कुमार शर्मा 'प्रखर' सम्मानित

बीकानेर। मरु नगरी में यूथ वर्ल्ड ग्रुप द्वारा ११ मार्च को नेशनल डायमंड अचीवर्स अवॉर्ड समारोह आयोजित किया गया। समारोह के कोर्डिनेटर एवं यूथ वर्ल्ड के संयोजक भैरु सिंह राजपुरोहित ने कोटा के युवा साहित्यकार पंकज प्रखर को उनके द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं के लिए अनेक विषयों पर लिखे गए सारगर्भित आलेखों एवं आम जनजीवन से जुड़ी लघुकथाओं के लिए बीकानेर के अमर रंगमंच पर नेशनल डायमंड अचीवर्स अव र्ड से नवाजा गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि केंद्रीय बाल श्रम बोर्ड भारत सरकार के पूर्व उपाध्यक्ष शिशुपाल सिंह निम्बाड़ा, दिल्ली सिविल डिफेंस के सीनियर चीफ व र्डन राजेंद्र कपूर, हरियाणा की समाज सेवी वीना अरोड़ा सहित कई विशिष्ट जन उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में अवॉर्ड समारोह की स्मारिका का विमोचन भी किया गया। ■

(पृष्ठ ३ का शेष) **औरत की आजादी...**

और ममता की देवी कहकर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाया जाता है ताकि वह सहनशील बनी रहे। यह एक तरह की साजिश है जो रची गई है स्त्री के खिलाफ। स्त्री को अपेक्षित कर्तव्यों के पालन के लिए मानसिक रूप से विवश किया जाता है। स्त्रियाँ अपना कर्तव्य निभाते हुए और मर्यादाओं का पालन करते हुए दम तोड़ देती हैं।

समाज का निर्माण कदापि मुमकिन नहीं अगर स्त्री को समाज से विलग कर दिया जाए। पुरुष का भी महत्व है, परन्तु पुरुष के वर्चस्व का खामियाजा न सिर्फ स्त्री बल्कि पूरा समाज भुगतता है। मानवता धीरे-धीरे मर रही है। असंतोष, आक्रोश और संवेदनशून्यता की स्थिति बढ़ती जा रही है। परिपेक्ष्य में चाहे कुछ भी हो परन्तु संदेह के घेरे में सदैव स्त्री ही आती है और आरोपित भी वही होती है। ऐसा नहीं कि सदैव स्त्रियाँ ही सही होती हैं और हर पुरुष गलत। अक्सर मैंने देखा है कि जहाँ पुरुष कमजोर है या स्त्री के सामने झुक जाता है वहाँ स्त्रियाँ इसका फायदा उठाती हैं। वैसे ही जैसे स्त्री की कमजोरी का फायदा पुरुष उठाता है।

आखिर क्यों नहीं स्त्री-पुरुष एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते और एक दूसरे को बराबर समझते, ताकि कोई किसी के अधीन न रहे? ऐसा हो तो हर दिन महिला दिवस होगा और पुरुष दिवस भी। ■

कार्टून ...के घुँघरू टूट गये -- मनोज कुरील

सुभाषित

एकाकिना तपो द्वाभ्यां पठनं गायनं त्रिभिः।
चतुर्भिगमनं क्षेत्रे पंचभिर्बहुभिरणे।। (चाणक्य नीति)

अर्थ– तप अकेला करे, अध्ययन दो मिलकर करें, गाना तीन से अच्छा होता है, यात्रा में चार हों, खेती में पाँच और युद्ध में बहुत लोग साथ हों तभी काम बनता है।

पद्यार्थ– तप एक करे वन में बसके, अरु पाठ सदा मिल दो करना।
बिन तीन मिले नहिं गान बनें, मिल चार सदा जग में फिरना।
जब पाँच मिलें तब खेत करे, बिन पाँच न खेत कभी करना।
रण रोप सदा बहु लोगन ते, यदि एक लड़े तब हो मरना।।

(आचार्य स्वदेश)

आपके पत्र

सभी विधाओं के सुंदर संकलन के साथ, सामाजिक सरोकारों, राजनीतिक व स्वास्थ्य समस्याओं का बेबाक आकलन करते हुए अति सुंदर अंक के लिए बधाई.

-- लीला तिवानी

बहुत सुन्दर अंक! – **मुकेश कुमार ऋषि वर्मा, प्रदीप कुमार तिवारी, शोभित तिवारी, प्रणव कुमार गोस्वामी**

हार्दिक धन्यवाद! – **संजय सिंह राजपूत, अरुण निषाद, आशीष कुमार त्रिवेदी, नीतू सुदीप्ति, आकांक्षा पाण्डेय, प्रीति श्रीवास्तव, सोमेन्द्रश्री, हरमिंदर सिंह, रवि रश्मि अनुभूति**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! – सम्पादक)

सम्पादकीय

सामाजिक विभाजन का दुर्भाग्यपूर्ण प्रयास

अनुसूचित जाति/जनजाति कानून के दुरुपयोग के सम्बंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों पर कुछ तथाकथित दलित संगठनों द्वारा जो हायतौबा मचाई जा रही है और हिंसा की जा रही है, उसका कोई औचित्य नहीं है। माननीय न्यायालय ने इस कानून को निरस्त नहीं किया है, बल्कि उसके दुरुपयोग पर रोक लगाई है, क्योंकि यह एक सर्वज्ञात तथ्य है कि इस कानून का अधिकतम उपयोग इन जातियों के व्यक्तियों द्वारा केवल सवर्णों के उत्पीड़न के लिए किया जाता है।

स्वयं कई न्यायालयों ने विभिन्न फैसलों में टिप्पणियाँ की हैं कि इस कानून के अन्तर्गत लगाये जाने वाले आरोपों में ६० प्रतिशत झूठे होते हैं। इसका तात्पर्य है कि इतने निर्दोष आरोपियों को अकारण ही जेल की सजा और अपमान भुगतना पड़ता है। निश्चित रूप से यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के विरुद्ध है, जिनमें स्पष्ट कहा गया है कि किसी भी निर्दोष को दंडित नहीं किया जाना चाहिए।

माननीय न्यायालय ने उचित ही यह दिशा निर्देश दिया है कि इन आरोपों में तत्काल ही गिरफ्तारी नहीं होगी, बल्कि पहले आरोपों की प्राथमिक जाँच होगी और उनमें तथ्य पाये जाने पर ही गिरफ्तारी होगी, वह भी सक्षम अधिकारी की अनुमति से। इतना ही नहीं, हिरासत में रखने की अति आवश्यकता न होने पर आरोपी को जमानत भी दी जा सकती है। इस पर कोई रोक नहीं है।

इन स्पष्ट दिशानिर्देशों का हिंसक विरोध करना एक प्रकार से इस बात की स्वीकृति है कि वास्तव में इस कानून का दुरुपयोग किया जाता है और ये तथाकथित दलित संगठन इस दुरुपयोग को जारी रखने के पक्ष में हैं। लोकतंत्र में विरोध करने का भी एक तरीका होता है। किसी भी पक्ष को अपनी बात रखने का पूरा अधिकार है और इसके कई विकल्प भी हैं। लेकिन सड़कों पर उतरकर हिंसा करने, वाहनों को जलाने और सरकारी या निजी सम्पत्तियों को हानि पहुँचाने की अनुमति किसी को नहीं दी जा सकती। ऐसे तत्वों के विरुद्ध शासन को कठोर कार्यवाही करनी चाहिए।

सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि तथाकथित दलित संगठनों के विरोध प्रदर्शनों में मुसलमान समुदाय के लोग खुलकर भाग ले रहे हैं और हिंसक कार्यवाहियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं, जिनका इस कानून से कोई लेना-देना नहीं है। इससे यह आशंका गहरी हो जाती है कि कुछ देशविरोधी तत्व हमारे बृहत् हिन्दूसमाज को विभाजित करके अपनी रोटियाँ सेंकने में रुचि ले रहे हैं। उनको देश के अन्दर और बाहर की उपद्रवी, आतंकवादी तथा देशद्रोही शक्तियों का पूरा समर्थन मिल रहा है। इस स्थिति को किसी भी हालत में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

इसलिए अम्बेडकरवादी, बौद्ध और अन्य दलित संगठनों को चाहिए कि वे अपने बीच में उन तत्वों को न आने दें, जो हिंसा फैलाकर उनको बदनाम करना चाहते हैं। ऐसे तत्वों पर नजर रखना और उन्हें उचित सबक सिखाना उनका अपना कर्तव्य है। यदि समाज में खाई बढ़ाने वाली ऐसी घटनाओं को न रोका गया, तो देश में सामाजिक विभाजन गहराने की पूरी संभावना है, जिसका दुष्परिणाम देर-सबेर पूरे देश को भुगतना पड़ेगा। इसलिए इससे बचना ही बुद्धिमानी है। ■

औरत की आजादी का मतलब

डॉ जेन्नी शबनम

'हमें चाहिए आजादी'। सोचने की आजादी, बोलने की आजादी, विचार की आजादी, प्रथाओं से आजादी, परम्पराओं से आजादी, मान्यताओं से आजादी, काम में आजादी, हँसने की आजादी, रोने की आजादी, प्रेम करने के आजादी, जीने की आजादी, जन्म लेने की आजादी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की शुरुआत के १०६ साल हो रहे हैं। हर साल स्त्रियों की उपलब्धि और सम्मान के लिए दुनिया भर में न सिर्फ महिलाएँ बल्कि पुरुष भी इस दिन को मनाते हैं। परन्तु यह अब एक ऐसा दिन बन कर रह गया है जब सरकारी और गैर सरकारी संगठन स्त्रियों के पक्ष में कुछ बातें कहेंगे, कुछ नई योजनायें बनाई जाएँगी, विचार विमर्श होंगे और फिर 'दुनिया की महिलाएँ एक हों' के उद्‌घोष के साथ ८ मार्च के दिन की समाप्ति हो जाएगी। फिर वही आम दिन की तरह कहीं किसी स्त्री का बलात्कार, किसी का दहेज उत्पीड़न, किसी का जबरन विवाह, कहीं कन्या भ्रूण हत्या, कहीं एसिड से जलाया जाएगा तो कहीं परम्परा के नाम पर बलि चढ़ेगी।

महिला दिवस मनाने का अब मेरा मन नहीं होता है। न उल्लास होता है न उमंग। सब कुछ यांत्रिक-सा लगने लगा है। टी वी और अखबार द्वारा महिला दिवस के आयोजन को देखकर मुझे यूँ महसूस होता है जैसे हम स्त्रियों का मखौल उड़ाया जा रहा है। बड़े-बड़े बैनर और पोस्टर जहाँ स्त्रियों की शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए जैसे बीज मंत्र लिख दिया गया हो। प्रचार पढ़ो और देखो फिर मान लो कि स्त्रियों की स्थिति सुधर गई है। बाजारीकरण का स्पष्ट असर दिखता है इस दिन। कपड़े, आभूषण इत्यादि पर छूट! तरह तरह के प्रलोभन! न कुछ बदला है न बदलेगा!

सही मायने में अब तक स्त्रियों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है, भले ही हम स्त्री सशक्तीकरण की कितनी भी बातें करें। स्त्री शिक्षा और उसके अस्तित्व को बचाने के लिए ढेरों सरकारी योजनाएँ बनी। तमाम सरकारी और गैर सरकारी दावों के बावजूद स्त्रियों की स्थिति सोचनीय बनी हुई है। हालात बदतर होते जा रहे हैं। महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की परियोजनाएँ फाइलों में ही खुलती और बंद होती हैं। ग्रामीण और निम्नवर्गीय महिलाओं की स्थिति में महज इतना ही सुधार हुआ है कि उनके हाथों में झाड़ू और हँसुआ के साथ ही मोबाइल भी आ गया है। निःसंदेह मोबाइल को प्रगति का पैमाना नहीं माना जा सकता है।

सामाजिक मूल्यों के ह्रास का असर स्त्री के शारीरिक शोषण के रूप में और भी विकराल होकर सामने आया है। शारीरिक अत्याचार दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। मेरा अनुमान है कि ९९ प्रतिशत महिलाएँ कभी न कभी अवश्य ही शारीरिक शोषण का शिकार हुई हैं। चाहे बचपन में हो या किसी अन्य उम्र में। घर, स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, अस्पताल, बाजार, सड़क, बस, ट्रेन, मंदिर, कहीं भी स्त्रियाँ सुरक्षित नहीं हैं। शोषण करने वाला कोई भी पुरुष हो सकता है- रिश्तेदार, पति, पिता, दोस्त, पड़ोसी, परिचित, अपरिचित, सहकर्मी, सहयात्री, शिक्षक, धर्मगुरु आदि-आदि।

परतंत्रता को झेलना स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। स्त्री को त्याग

(शेष पृष्ठ २ पर)

शेखूलर हिन्दू

डॉ विवेक आर्य

आजकल हिन्दुओं में साईं संध्या बुलाने का बड़ा प्रचलन चल गया है। साईं संध्या में साईं के भजन गाने के लिए हमसर हयात निजामी को बुलाया जाता है। बहुत कम लोग जानते हैं कि हमसर हयात निजामी के पूर्वज ख्वाजा हसन निजामी के खादिम (सेवक) थे। दिल्ली के एक कोने में निजामुद्दीन औलिया की दरगाह है। १९४७ से पहले इस दरगाह के हाकिम का नाम था ख्वाजा हसन निजामी। आज के मुस्लिम लेखक निजामी की प्रशंसा उनके उर्दू साहित्य को देन या बहादुर शाह जफर द्वारा १८५७ के संघर्ष पर लिखी गई पुस्तक को पुनः प्रकाशित करने के लिए करते हैं। परन्तु निजामी के जीवन का एक और पहलू था। वह था मतान्धता।

धार्मिक मतान्धता के विष से ग्रसित निजामी ने हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए १९२० के दशक में एक पुस्तक लिखी थी- 'दाइये इस्लाम'। इस पुस्तक को इतने गुप्त तरीके से छापा गया था कि इसका प्रथम संस्करण कब प्रकाशित हुआ और कब समाप्त हुआ पता ही नहीं चला। इसके द्वितीय संस्करण की प्रतियाँ अफ्रीका तक पहुँच गई थीं। एक आर्य सज्जन को उसकी प्रति अफ्रीका में प्राप्त हुई जिसे उन्होंने स्वामी श्रद्धानंद को भेज दिया। स्वामी जी ने इस पुस्तक को पढ़कर उसके प्रतिउत्तर में पुस्तक लिखी जिसका नाम था 'खतरे का घंटा'। निजामी की पुस्तक में उस समय के २१ करोड़ हिन्दुओं में से १ करोड़ हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित करने का लक्ष्य रखा गया था।

इस पुस्तक के कुछ सन्दर्भों के दर्शन करने मात्र से लेखक की मानसिकता का बोध आसानी से हो जाता है कि हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए मुस्लिम समाज के हर सदस्य को किस हद तक प्रोत्साहित किया गया था। जिससे न केवल धार्मिक द्वेष के फैलने की आशंका थी अपितु दंगे भड़कने के पूरे असार थे। आइये इस पुस्तक के कुछ अंशों का अवलोकन करते है।

१. फकीरों के कर्तव्य- जीवित पीरों की दुआ से बेऔलादों के औलाद होना या बच्चों का जीवित रहना या बीमारियों का दूर होना या दौलत की वृद्धि या मन की मुरादों का पूरा होना, बद्दुआओं का भय आदि से हिन्दू लोग फकीरों के पास जाते हैं, बड़ी श्रद्धा रखते है। मुस्लमान फकीरों को ऐसे छोटे-छोटे वाक्य याद कराये जावें, जिन्हें वे हिन्दुओं के यहाँ भीख मांगते समय बोलें और जिनके सुनने से हिन्दुओं पर इस्लाम की अच्छाई और हिन्दुओं की बुराई प्रगट हो।

२. गाँव और कस्बों में ऐसा जुलूस निकालना जिनसे हिन्दू लोगों में उनका प्रभाव पड़े और फिर उस प्रभाव द्वारा मुसलमान बनाने का कार्य किया जावे।

३. गाने बजाने वालों को ऐसे गाने याद कराना और ऐसे नये गाने तैयार करना जिनसे मुसलमानों में बराबरी के बर्ताव की बातें और करामातें प्रगट हो।

४. गिरोह के साथ नमाज ऐसी जगह पढ़ना, जहाँ उनको दूसरे धर्म के लोग अच्छी तरह देख सके।

५. ईसाईयों और आर्यों के केन्द्रों या उनके लीडरों के यहाँ से उनके खानसामों, बहरों, कहारों चिट्ठीरसारों, कम्पाउन्डरों, भीख मांगने वाले फकीरों, झाडू देने वाले स्त्री या पुरुषों, धोबियों, नाइयों, मजदूरों, सिलावतों और खिदमतगारों आदि के द्वारा खबरें और भेद मुसलमानों को प्राप्त करनी चाहिए।

६. सज्जादानशीन अर्थात दरगाह में काम करने वाले लोगों को मुसलमान बनाने का कार्य करे।

७. ताबीज और गंडे देने वाले जो हिन्दू उनके पास आते हैं उनको इस्लाम की खूबियाँ बतावें और मुसलमान बनने की दावत दें।

८. देहाती मदरसों के अध्यापक अपने से पढ़ने वालों को और उनके माता पिता को इस्लाम की खूबियाँ बतावें और मुस्लमान बनने की दावत दें।

९. नवाब रामपुर, टोंक, हैदराबाद, भोपाल, बहावलपुर और जूनागढ आदि को, उनके ओहदेदारों, जमींदारों, नम्बरदार, जैलदार आदि को अपने यहाँ पर काम करने वालों को और उनके बच्चों को इस्लाम की खूबियाँ बतावें और मुस्लमान बनने की दावत दें।

१०. माली, किसान,बागबान आदि को आलिम लोग इस्लाम के मसले सिखाएँ क्यूंकि साधारण गरीब लोगों में दीन की सेवा करने का जोश अधिक रहता है।

११. दस्तगार जैसे सोने, चांदी, लकड़ी, मिट्टी, कपड़े आदि का काम करने वालों को अलीम इस्लाम के मसलों से आगाह करे जिससे वे औरों को इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करें।

१२. फेरी करने वाले घरों में जाकर इस्लाम की खूबियां बतायें, दूकानदार दुकान पर बैठे-बैठे सामान खरीदने वाले ग्राहक को इस्लाम की खूबियाँ बतायें।

१३. पटवारी, पोस्ट मास्टर, देहात में पुलिस आफिसर, डाक्टर, मिल कारखानों में बड़े ओहदों पर काम करने वाले मुसलमान अपने नीचे काम करने वालों में इस्लाम का प्रचार करके बड़ा काम कर सकते हैं।

१४. राजनैतिक लीडर, संपादक, कवि, लेखक आदि को इस्लाम की रक्षा एवं वृद्धि का काम अपने हाथ में लेना चाहिये।

१५. स्वांग करने वाले, मुजरा करने वाले, रण्डियों, गाने वाले कव्वालों, भीख मांगने वालों सभी को इस्लाम की खूबियों को गाना चाहिये।

यहाँ पर सारांश में निजामी की पुस्तक के कुछ अंशों को लिखा गया हैं। पाठकों को भली प्रकार से निजामी के विचारों के दर्शन हो गये होंगे।

१९४७ के पहले यह सब कार्य जोरों पर था। हिन्दू समाज के विरोध करने पर दंगे भड़क जाते थे। अपनी राजनैतिक फूट, कांग्रेस की नीतियों और अंग्रेजों द्वारा प्रोत्साहन देने से दिनों दिन हिन्दुओं की जनसँख्या कम होती गई जिसका अंत पाकिस्तान के रूप में हुआ।

अब पाठक यह सोचें कि आज भी यही सब गतिविधियाँ सुचारु रूप से चालू हैं। केवल स्वरूप बदल गया है। हिंदी फिल्मों के अभिनेता, क्रिकेटर आदि ने कव्वालों, गायकों आदि का स्थान ले लिया है और वे जब भी निजामुद्दीन की कब्र पर माथा टेकते हैं, तो मीडिया में यह खबर ब्रेकिंग न्यूज बन जाती हैं। उनको देखकर हिन्दू समाज भी भेड़चाल चलते हुए उनके पीछे-पीछे उनका अनुसरण करने लगता है।

देश भर में हिन्दू समाज द्वारा साईं संध्या का आयोजन किया जाता है जिसमें अपने आपको सूफी गायक कहने वाला कव्वाल हमसर हयात निजामी बड़ी शान से बुलाया जाता है। बहुत कम लोग यह जानते हैं कि कव्वाल हमसर हयात निजामी के दादा ख्वाजा हसन निजामी कव्वाल थे और ठीक वैसा ही प्रचार इस्लाम का करते थे जैसा निजामी की किताब में लिखा है। कहते हैं कि समझदार को ईशारा ही काफी होता है। यहाँ तो सप्रमाण निजामुद्दीन की दरगाह के हाकिम ख्वाजा हसन निजामी और उनकी पुस्तक पर प्रकाश डाला गया है।

हिन्दू समाज कब इतिहास और अपनी गलतियों से सीखेगा? ईश्वर हिंदुओं को सद्बुद्धि दे। ■

भारत या इंडिया

डॉ देविदास प्रभु

आपमें यह अंधविश्वास किसने जगाया है कि भारत के बाहर इस देश का नाम इंडिया है? इंडिया नाम अंग्रेजी हुकूमत का नतीजा है। अरब देश भारत को हिंद कहते है, तुर्की में हिंदिया कहते हैं। हिंदिया का ग्रीक में इंडिया होकर यूरोपीय भाषाओं में प्रचलित हुआ। मगर सभी यूरोपीय देश इण्डिया नहीं कहते हैं, फ्रेंच में भारत को इन्डे (Inde) कहते हैं! मगर यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अनेक देश इंडिया के अलावा और अन्य नाम से भी भारत को पुकारते हैं! ये हैं वे सब नाम-

Indiska, Indistan, Ende, Igitia, Innia] Indyaje, Hindia, Hindistan, Hind, Indiakondre, Initia, Indien, Lhend, Intia, Yindu, Indii, Ando, Lindan, End, Indeje, Indie, Into, Indjiya, Inde.

भारत को विदेशी क्या कहते हैं वो मायने नहीं रखता, हम क्या कहते हैं वो मायने रखता है। हमारे लोग इस देश को पुराने जमाने से भारत कहते आए हैं, वही नाम होना चाहिए! अंग्रेजी में Germany कहते हैं इसलिए हम भी जर्मनी कहते हैं। मगर जर्मनी के लोग अपनी देश को Deutschland कहेते हैं। सभी अरब देश जर्मनी को अल्मानिया कहते हैं जो जर्मनी का पुराना नाम है ।

अपने देश को विदेशियों द्वारा रखे नाम से पुकारना देश के साथ की जानेवाली गद्दारी है। ■

महिला दिवस पर पुरुषों से बात हो

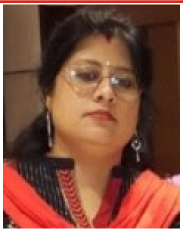

डॉ नीलम महेन्द्र

'हम लोगों के लिए स्त्री केवल गृहस्थी के यज्ञ की अग्नि की देवी नहीं अपितु हमारी आत्मा की लौ है।' --रबीन्द्र नाथ टैगोर।

८ मार्च को जब सम्पूर्ण विश्व के साथ भारत में भी 'महिला दिवस' पूरे जोर शोर से मनाया जाता है और जब २०१८ में यह आयोजन अपने १००वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है तो इसकी प्रासंगिकता पर विशेष तौर पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

आधुनिक विश्व के इतिहास में जब सर्वप्रथम १९०८ में १५००० महिलाओं ने न्यूयार्क शहर में एक विशाल जुलूस निकाल कर अपने काम करने के घंटों को कम करने, बेहतर तनख्वाह और वोट डालने जैसे अपने अधिकारों के लिए अपनी लड़ाई शुरू की थी तो, इस आंदोलन से तत्कालीन सभ्य समाज में महिलाओं की स्थिति सामने आई थी। उससे भी अधिक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य यह है कि अगर वोट देने के अधिकार को छोड़ दिया जाए तो पुरुषों के मुकाबले महिलाओं के वेतन और समानता के विषय में भारत समेत सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं की स्थिति आज भी चिंतनीय है।

विश्व में महिलाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति से सम्बन्धित एक रिपोर्ट के अनुसार २०१७ में लैंगिक असमानता के मामले में भारत दुनिया के १४४ देशों की सूची में १०८ वें स्थान पर है, जबकि पिछले साल यह ८७ वें स्थान पर था। किन्तु केवल भारत में ही महिलाएँ असमानता की शिकार हों ऐसा भी नहीं है इसी रिपोर्ट में यह बात भी सामने आई है कि ब्रिटेन जैसे विकसित देश की कई बड़ी कंपनियों में भी महिलाओं को उसी काम के लिए पुरुषों के मुकाबले कम वेतन दिया जाता है।

वेतन से परे अगर उस काम की बात की जाए जिसका कोई वेतन नहीं होता, जैसा कि हाल ही में अपने उत्तर से विश्व सुन्दरी का खिताब जीतने वाली भारत की मानुषी छिल्लर ने कहा था और जिसे एक मैनेजिंग कंसल्ट कम्पनी की रिपोर्ट ने काफी हद तक सिद्ध भी किया। इसके मुताबिक, यदि भारतीय महिलाओं को उनके अनपेड वर्क अर्थात वो काम जो वो एक गृहणी, एक माँ, एक पत्नी के रूप में करती हैं, उस के पैसे अगर दिए जाएं, तो यह भारतीय अर्थव्यवस्था में ३०० बिलियन अमेरिकी डालर का योगदान होगा। इस मामले में अगर पूरी दुनिया की महिलाओं की बात की जाए तो यूनाइटेड नेशन की रिपोर्ट के अनुसार उन्हें १० ट्रिलियन अमेरिकी डालर अर्थात पूरी दुनिया की जीडीपी का १३ प्रतिशत हिस्सा देना होगा।

जब हर साल महिला दिवस पर महिलाओं की लैंगिक समानता की बात की जाती है, सम्मान की बात की जाती है, उनके संवैधानिक अधिकारों की बात की जाती है, लेकिन १०० सालों बाद भी धरातल पर इनका खोखलापन दिखाई देता है, तो इस बात को स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि महिला अधिकारों की बात पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के प्रति पुरुषों की सोच में बदलाव लाए बिना संभव नहीं है। लेकिन जब महिला अधिकारों की बात होती है, तो वे पुरुष विरोधी या फिर उनके अधिकारों के हनन की बात नहीं होती बल्कि यह तो सम्पूर्ण मानवता के, दोनों के ही उन्नत हितों की, एक सभ्य एवं समान समाज की बात होती है। इसलिए इस बार महिलाओं दिवस पर पुरुषों से बात हो ताकि महिलाओं के प्रति उनके नजरिए में बदलाव हो।

जिस प्रकार कहा जाता है कि एक लड़की को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है, उसी प्रकार एक बालक को महिलाओं के प्रति सम्मान और संवेदनशीलता की शिक्षा देने से उन पुरुषों का और उस समाज का निर्माण होगा जो स्त्री के प्रति संवेदनशील

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

स्वप्नदोष - कारण और निवारण

विजय कुमार सिंघल

यह अधिकांश नवयुवकों को होने वाली शिकायत है, परन्तु संकोचवश या लज्जावश वे किसी से इसकी चर्चा नहीं करते। जब यह शिकायत बहुत बढ़ जाती है तो वे तथाकथित यौन रोग विशेषज्ञों के पास जाकर अपना धन और समय नष्ट करते हैं, फिर भी उनको कोई लाभ नहीं होता और शिकायत बढ़ते-बढ़ते उनके स्वास्थ्य का सर्वनाश करने लगती है।

प्राकृतिक चिकित्सा में स्वप्नदोष का उपचार बहुत ही सरल और साधारण है। यह वास्तव में शारीरिक कम मानसिक दोष अधिक है। आजकल का उत्तेजक वातावरण और प्रदूषण बहुत सीमा तक इसके लिए उत्तरदायी है। स्वप्नदोष के प्रमुख कारण हैं- विषय-वासना का चिन्तन करना, उत्तेजक फिल्में देखना या चर्चा करना, मिर्च-मसाले से भरपूर खाद्यों का सेवन करना, हानिकारक पेयों चाय, कॉफी, शीतल पेय, तथाकथित शक्तिदायक पेयों आदि का सेवन करना, घर के बने ताजा भोजन के बजाय बाजारू फास्ट फूड अधिक खाना आदि।

इन सब कारणों से उनका वीर्य पतला होकर समय-बेसमय निकलने लगता है। जब रात में सोते-सोते उत्तेजक सपने देखते हुए अचानक बड़ी मात्रा में निकलता है तो वह रोग बन जाता है। जो नवयुवक अपने हाथ से अपना वीर्य नष्ट करते हैं और फिर किसी के कहने से बंद कर देते हैं, तो उनको स्वप्नदोष की बहुत अधिक शिकायत शुरू हो जाती है।

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि शरीर में वीर्य का निर्माण होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और नवयौवन के समय महीने में एक-दो बार उसका निकल जाना भी लगभग स्वाभाविक है। अतः इतने से घबराने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि स्वाभाविक रूप से जितना वीर्य निकलता है, वह अपने आप बनता रहता है और उसका स्वास्थ्य पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन उत्तेजनावश बार-बार अपने हाथ से ही अपना वीर्य नष्ट करना एकदम अस्वाभाविक है और उसका कुप्रभाव देर-सबेर स्वास्थ्य पर पड़ना अवश्यंभावी है।

इसके कारणों को समझ लेने के बाद इसका उपचार करना बहुत सरल हो जाता है। सबसे पहले तो ऊपर बतायी गयी सभी तामसी वस्तुओं को त्याग देना चाहिए और अपना आहार-विहार सात्विक रखना चाहिए। अपने भोजन में फलों और सलाद की कुछ मात्रा अवश्य रखें। नित्य अधिक से अधिक सामान्य शीतल जल पीना और कम से कम आधा-पौन घंटे व्यायाम करना अनिवार्य है। केवल इतना करने से ही इस समस्या की जड़ कटने लगती है और धीरे-धीरे यह शिकायत समाप्त हो जाती है।

इसके साथ ही निम्नलिखित उपाय करने से यह समस्या जड़ से चली जाती है-

१. सबसे पहले अपने मलाशय को साफ रखने का उपाय करें। इसके लिए प्रातः उठते ही एक गिलास गुनगुने पानी में आधा नीबू का रस निचोड़ लें और चाहें तो उसमें एक चम्मच शुद्ध शहद मिलाकर पियें। इसके बाद ५ मिनट टहलकर शौच जायें।

२. शौच के बाद अपने पेडू पर २-३ मिनट खूब ठंडे पानी से पौंछा लगायें और फिर या तो टहलने निकल जायें या ऐसा व्यायाम करें जिससे पसीना आ जाये। ऐसा करने से कुछ ही दिन में आपकी पाचनशक्ति और मलनिष्कासन तंत्र मजबूत हो जाएगा। यदि साथ में कुछ प्राणायाम भी करें तो सोने में सुहागा हो जाये।

३. रात को सोते समय दूध न पियें। इससे अच्छा है कि दूध का सेवन प्रातः जलपान के साथ करें। रात में गर्म दूध पीने से स्वप्नदोष की शिकायत बहुत होते देखी गयी है। इसका कारण यह है कि दूध उत्तेजक होता है।

४. रात को सोने से पूर्व अधिक जल पीना भी उचित नहीं है। केवल आधा गिलास जल ही पियें। सोने से पूर्व मूत्र विसर्जन अवश्य कर लें। यदि रात को भी मूत्र विसर्जन के लिए उठते हैं, तो मूत्र विसर्जन के बाद फिर आधा गिलास साधारण शीतल जल पिया जा सकता है। हालांकि यह आवश्यक नहीं है।

इन साधारण उपायों को अपनाकर और अपना आहार-विहार सुधारकर स्वप्नदोष जैसे रोग से सहज ही मुक्ति पायी जा सकती है। ■

मैं जागता रहा मगर उसको खबर न थी
पलकों पे उसकी ख्वाब थे मुझ पे नजर न थी
आकर किसी ने मुझको अचानक बचा लिया
वरना ये जान जाने में कोई कसर न थी
पाने की उसको चाह थी पर जिद न कर सका
बच्चे सा मन जरूर था उस पर उमर न थी
कोहरे ने आफताब की पहचान छीन ली
पहले तो इस तरह
कभी शामो-सहर न थी
छूकर जिसे न 'शान्त'
हुए हों दिलो-दिमाग
गंगा में आज तक
उठी ऐसी लहर न थीं

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

सब्ज सपने हलाल मत करना
सजन अब तो मलाल मत करना
क्या खुशी है इस पल नैनों में
लूट कर दिल सवाल मत करना
आज फिर से हवा चली आयी
धार अंधड़ बवाल मत करना
प्यार चाहत चुरा न लेना तुम
आँख फरके उबाल मत करना
यदि पड़ी नजर किरकिरी कोई
रगर आँखें गुलाल मत करना
बे फिक्र डगर मतलबी छाहें
गैर गम्मत बहाल मत करना
घुंघुना नहिं खुद बजता गौतम
आसमानी खयाल मत करना

-- महातम मिश्र गौतम गोरखपुरी

पहले जैसी चेहरों पर मुस्कान कहाँ
बदला जब परिवेश वही इंसान कहाँ
लोकतन्त्र में जात पात का विष पीकर
जीना भारत मे है अब आसान कहाँ
लूट गया है फिर कोई उसकी इज्जत
नेताओं का जनता पर है ध्यान कहाँ
भूंख मौत तक ले आती जब इंसा को
बच पाता है उसमें तब ईमान कहाँ
भा जाता है जिसको पिंजरे का जीवन
उस तोते के हिस्से में सम्मान कहाँ
दिल की खबरें अक्सर उसको मिलती हैं
दर्दो गम से वो मेरे अनजान कहाँ
मान गया होगा वह गैरों की बातें
उसको अब तक सच की है पहचान कहाँ
तोड़ दिया जब दिल मेरा तुमने हंसकर
बाकी मुझमें अब कोई अरमान कहाँ

-- नवीन मणि त्रिपाठी

कुंडली

दीदी दौरा कर रही, और भरे हुंकार
एक मंच पर आइए, गदहे श्वान सियार
गदहे, श्वान, सियार, रहे जो हिंदूद्रोही
बिल्ली के गठबंधन में शामिल हों वो ही
कह सुरेश काटें मिल शेर, मने बकरीदी
पीएम बनने की चाहत, पगलाई दीदी

-- सुरेश मिश्र

जन्नत में आँगन की खुशबू मिलती है कि नहीं
ईश्वर को भी माँ की जरूरत पड़ती है कि नहीं
लाख सुखी हो बेटा माँ को फिक्र सताती है
बेटे को परदेस में रोटी मिलती है कि नहीं
जब कोई बेटा माँ को पीड़ा पहुँचाता है
तब भी माँ के दिलसे दुआ निकलती है कि नहीं
नये-नये रिश्ते हैं जो मैं उनसे पूँछ रहा
सबसे बढ़कर जग में माँ की हस्ती है कि नहीं
माँ का प्यार बदल जायेगा कैसे सोच लिया
गुस्से में भी माँ की
ममता रहती है कि नहीं
आप बतायें शम्आ को
क्या हासिल होता है
शम्आ अंधकार से फिर
भी लड़ती है कि नहीं

-- डॉ डी एम मिश्र

तंज सुनना तो विवशता है, सुनाये न बने
दर्द दिल का न दिखे और दिखाए न बने
पाक से हम करें क्या बात बिना कुछ मतलब
क्यों करे श्रम जहाँ कि बात बनाए न बने
क्या कहूँ उनके हुनर की, है अनोखा अनजान
यही तारीफ कि हमको न सताए न बने
कर्म इंसान का हो ठीक सितारा जैसा
कर्म काला किया तो चेहरा दिखाए न बने
हाथ की रेखा बताती है कि आगे क्या है
मर्द तकदीर जो बिगड़े तो बनाए न बने
प्रेम करने गया था पर बना बेचारा बैर
नफरतों की जो लगी
आग बुझाए न बने
न हुई गंगा सफाई
कई सालों के बाद
भक्त जाते हैं नहाने
तो नहाए न बने

-- कालीपद 'प्रसाद'

जो दिखता है अक्सर धोखा होता है
हर चेहरे के पीछे चेहरा होता है
बतलाते हैं गर्दिश के दिन हम सबको
जो अपना है कितना अपना होता है
वक्त पड़ेगा तो समझोगे सच्चाई
हर रिश्ता मतलब का रिश्ता होता है
कोशिश लाख करे इंसा लेकिन फिर भी
होकर रहता है जो होना होता है
सिर्फ हकीकत में जीना सीखो यारो
सपना सपना है कब सच्चा होता है
अपना कोई खास गया तब ये जाना
दर्द किसी के जाने का क्या होता है
मखमल के गद्दे बिस्तर हैं कुछ दिन के
आखिर तो मिट्टी में सोना होता है
महर खुदा की हो जाए जिसके ऊपर
दुनिया में उसका ही जलवा होता है
पद बढ़ने से बढ़ता है केवल रुतबा
अच्छे कर्मों से कद ऊँचा होता है

-- सतीश बंसल

सारे चेहरे हैं अनजाने किसको दूँ आवाज यहां
हो गए अपने भी बेगाने किसको दूँ आवाज यहां
महफिल खत्म हुई अपने-अपने रस्ते सब यार गए
मुझको डसते हैं वीराने किसको दूँ आवाज यहां
पीने लगे लहू भाई-भाई इक दूजे का जबसे
बंद हुए सारे मयखाने किसको दूँ आवाज यहां
अंधे हो कर दौड़ रहे हैं ख्वाहिशों के पीछे-पीछे
सारे के सारे दीवाने किसको दूँ आवाज यहां
भूल गई दुनिया मेरा किस्सा बीते कल की तरह
कैसे कोई मुझे पहचाने
किसको दूँ आवाज यहां
दो पल मेरे पास बैठने
का भी इनको वक्त नहीं
बच्चे होने लगे सयाने
किसको दूँ आवाज यहां

-- भरत मल्होत्रा

रंगमंच की डोर खिंची तो, नाम सभी बदनाम मिले
कुछ झंडों में छिपे हुए कुछ सिक्कों में नीलाम मिले
थाम के उँगली हमने जिनकी, ईश्वर को पाना चाहा
उनके चर्चे, गली-गली में, कौड़ी-कौड़ी दाम मिले
वतनफरोशों की आँखों में, झाँक रूह भी काँप उठी
एक तिरंगे के टुकड़े में, लिपटे रहमत-राम मिले
प्यार-मोहब्बत, भाई-चारे की महँगी दुकानों पर
बड़े ही सस्ते खूनी खंजर नफरत के पैगाम मिले
भक्त समझकर जब जा पहुँचे, बहुरुपियों की बस्ती में
कंठीमाला हाथ में थामे, सौ-सौ आसाराम मिले
नमकहलाली क्या होती है, उन्हें सिखाना बड़ा कठिन
जहाँ विभीषण की सूरत में,
व्यक्ति नमकहराम मिले
घर, मरघट को समझ के
हमने, भूल बड़ी नादानी की
यहाँ 'शरद' से जानेवाले
कहते 'सत्य हैं राम' मिले

-- शरद सुनेरी

मिल पायें न मिल पायें पर याद जरूरी है
थोड़ा ही सही फिर भी संवाद जरूरी है
रिश्तों का पौधा है ये सूख नहीं जाये
कुछ पानी जरूरी है कुछ खाद जरूरी है
घायल से मत पूछो है चोट लगी कैसे
सबसे पहले उसकी इमदाद जरूरी है
सुनना कि नहीं सुनना ये उसके ऊपर है
फिर भी उससे करना फरियाद जरूरी है
जो बात कही तुमने अच्छी होगी लेकिन
सबको समझाने को अनुवाद जरूरी है
ऊँचाई दिखानी है दुनिया को दिखा देना
उसके पहले गहरी
बुनियाद जरूरी है
यों शेरो-सुखन सारा
मौजूद किताबों में
पर उसको समझने
को उस्ताद जरूरी है

-- डॉ कमलेश द्विवेदी

(पहला भाग)

विदाई

नीतू सिंह

आंगन में चारो ओर लाइटें लगा दी गई हैं। अब मंडप खड़ा करने की तैयारी चल रही थी जब चिंटू भागता हुआ आँगन में आकर खड़ा हो गया और दोनों हाथ कमर पर रखकर चिल्लाने लगा- 'यहाँ उमा देवी कौन है? उमा देवी! उमा देवी!' इतने में राकेश ने एक जोर का चांटा उसकी खोपड़ी के पीछे जड़ दिया।

'नालायक! अपनी दादी का नाम इस तरह लेता है कोई?' बरामदे में भरी बाल्टी ले जा रही सपना को उसने कहा- 'कहाँ से इतना नालायक बेटा तुमने पैदा कर दिया?'

'मुझे क्या पूछते हो। तुम जानो। बेटा तुम्हारा है।' राकेश ने फिर एक बार हाथ उठाया ही था कि चिंटू बोल उठा 'मुझे क्या मालूम कि दादी का नाम दादी नहीं। कोई आया है। उमा देवी से मिलना है। हमारे घर में इतने लोग हैं। पता ही नहीं कौन-कौन है।'

'अम्मा से मिलने!'

'हां, वही तो मैं कह रहा हूँ। कोई सुन ही नहीं रहा।'

राकेश आँगन से ही जोर से चीखा- 'अम्मा! देख तो कोई है। तुम्हें पूछ रहा है।'

उमा सर पर पल्ला रखकर रसोई से बाहर निकली। सशंकित हृदय से पूछा- 'कौन है? क्यों पूछ रहा है?'

'पता नहीं। बैठक में है।'

उमा ईश्वर का स्मरण करते हुए बैठक की और बढ़ गई। मन ही मन कहती चली जा रही थी कि अब शादी में कोई अड़चन न आए भगवान। यहां तो रह-रह कर रिश्ते टूट जाते हैं। उमा ने लोगों को मण्डप तक से उठकर जाते देखा है। अड़ोस-पड़ोस में तो किस-किस बात पर शादियां नहीं टूटी। कहीं डिमांड पूरी नहीं हुई, तो कहीं लड़का इंजीनियर की जगह मैकेनिक निकला। कहीं लड़का ऐन मौके पर किसी के साथ भाग गया, तो कहीं दुल्हन को कोई भगा ले गया। अरे पिछली गली के पांडे जी के घर से तो केवल इसलिए बारात लौट गई क्योंकि भेजे गए लड्डू ससुराल में पूरे नहीं पडे और बरात को पनीर की सब्जी कम पड़ गई तो बस नहीं करनी ऐसे कंजूस घर में शादी। अब लड़के वाले हैं चाहें जो कहें। भट्टा तो लड़कीवालों का बैठता है।

यहाँ भी रमा की शादी की पूरी तैयारी हो गई है। बहुत खर्चा न सही, मगर जो भी थोडा बहुत हुआ है उस पर पानी नहीं फिरना चाहिए। लड़का बहुत अच्छा है। उमादेवी के पति भी कहके गए थे कि यह रिश्ता हाथ से जाना नहीं चाहिए, वरना फिर इतना अच्छा लड़का ढूँढना। मगर इस वक्त कौन हो सकता है? शादी वाली शाम। कहीं लड़के वालों की तरफ से कोई डाह रखनेवाला रिश्तेदार तो नहीं, जो झूठ-सच की आग लगाकर ऐन मौके पर शादी तोड़ने के लिए आ गया हो।

ये रमा के बापू भी अब तक नहीं आए, वरना इन सब पचड़ों में मुझे नहीं पड़ना पड़ता। भला बेटी की शादी में किसे छुट्टी नहीं दी जाती है।

इन्हीं सब ख्यालों में डूबती-उतराती उमा बैठक में पहुंची। अरे यह तो दुबे भाई साहब हैं, वो भी यूनिफॉर्म पहनकर। लेकिन रमा के बापू नहीं दिख रहे। हे भगवान! अब यह न हो कि शंभू भाई साहब उनकी छुट्टी न मिलने की खबर लाए हों। भगवान कोई भी खबर हो मगर यह न हो कि उन्हें छुट्टी नहीं मिली। रमा की शादी तो उनका सपना ही है। पूरा होते नहीं देखेंगे, तो कितना बुरा होगा। उस पर मैं अकेले क्या-क्या संभालूँगी। लड़के वाले क्या सोचेंगे कि कैसा पिता है।

'नमस्ते!' शंभू भाई साहब का चेहरा जरूरत से ज्यादा नहीं लटका। चाहें जो भी हो। जितना नाटक कर लें। वो नहीं आए तो इन्हीं के ऊपर अपनी भड़ास निकालूँगी, मगर निकालूँगी जरूर। छोड़ूँगी नहीं।

'नमस्ते भाई साहब!'

शंभू फटी-फटी आँखों से उमा को देखे जा रहा था। उमा भी सकपका गई। उसने सोचा कोई चाल नहीं चलने देगी और ताबड़-तोड़ तीर छोड़ने शुरू कर दिए।

'भाई साहब। अब आप मुँह लटकाकर उनका पक्ष मत लीजिएगा। मुझे खूब पता है कि आपको भेजकर वो मेरे गुस्से से बचना चाहते हैं। मगर यह कोई बात नहीं बनती है कि सारी जिन्दगी फौज को दे दी और फौज आपको अपनी बेटी के लिए एक दिन भी न दे। देखिए कितना काम पड़ा है। कैसे होगी शादी?'

शंभू ने लगभग रोते हुए कहा- 'रोक दीजिए यह शादी भाभी जी! नहीं होगी यह शादी।'

उम्मा भौंचक्की सी शंभू को देखकर भोली- 'हे प्रभु।'

'हां भाभीजी। वे शहीद हो गए।'

कुछ पलों के लिए उमा का दिमाग सुन्न हो गया। फिर आँखों से अनायास अनवरत धारा बहने लगी। उमा के आगे एक पूरा जन्म घूम सा गया। यकीन ही नहीं हो रहा था कि जो अब तक कहीं था, अब कहीं नहीं है। इस पल इस घड़ी उमा को जिसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी उसका अस्तित्व खत्म हो चुका था। उमा ने अपने आंसू पोंछते हुए कहा- 'कहाँ रखा है शरीर?'

'कुछ ही घंटों में पहुँचता होगा यहाँ। मैं जल्दी निकल आया आपको खबर करने।'

बैठक में निस्तब्धता छाई थी। बैठक के दरवाजे से बाहर आँगन में उमा की नजरें थमीं थीं, मगर जाने किस दुनिया में थी वो अब। आँगन में सभी मंडप को घेरकर खड़े थे और मंडप छवाया जा रहा था। कुछ लोगों ने छप्पर को हाथ लगाया था और बाकी लोग नजरों से ही योगदान दे रहे थे। अपलक ऐसे देख रहे थे जैसे पलक झपक लेने से छप्पर गिर जाएगा और सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। इतना सारा ध्यान पाकर छप्पर चढ़ाने वाले भी घबरा रहे थे कि कहीं छप्पर सरक न जाए और उनकी इज्जत भी। हुआ भी वही। राकेश का हाथ फिसला और सबके मुंह से हाय निकल पड़ी। पर उसने ऐन मौके पर कस के पकड़ लिया और पूरा छप्पर गिरने से बच गया। हाँ टेड़ा जरूर हो गया।

जहां आँगन में इतनी हुल्लड़ मची हुई थी वहीं इस घर का बैठक उपेक्षित सा एक कोने में पड़ा था जहाँ अब भी निस्तब्धता छाई थी। उमा अब भी आँगन में कुछ देखकर भी नहीं देख रही थी। मगर जब रमेश के हाथ से छप्पर छूटा था तब अन्य सुधि दर्शकों की हाय सुन उमा का ध्यान भी आँगन की गतिविधियों पर जा टिका। एक लंबी नींदय शायद एक जन्म जैसी लंबी नींद से लगभग जागते हुए उमा ने कहा- 'नहीं भाई साहब। उनका शरीर अभी नहीं लाईये।'

शंभू चौंके, 'यह क्या कह रहीं है भाभी जी!'

'हाँ भाई साहब। ये शादी हो जाने दीजिए। कल सुबह-सुबह रमा की डोली उठ जाएगी तब तक के लिए रोक लीजिए।'

'यह शादी कैसे हो सकती है?'

'बस जैसे हो रही है हो जाने दीजिए। अब तो ऐसे-जैसे-तैसे इस शादी को निपटाना ही है।'

'अरे भाभी। उनका पार्थिव शरीर यहां पहुंचता ही होगा। ऐसे में शादी कैसे होगी?'

'उनके जन्म भर का सपना थी ये शादी। ये शादी उनके जन्म भर की कमाई है भाई साहब। अगर हो जाएगी तो उनकी आत्मा भी चैन से यह शरीर छोड़ सकेगी। वैसे भी उन्हें यह रिश्ता बहुत पसंद था। लड़का ऐसा हीरा है कि चूक गए तो फिर मिलना मुश्किल।'

'भाभी जी, अपनी रमा को तो कई ऐसे हीरे मिल जाएंगे।'

'नहीं भाई साहब। हमने कई लड़के देखे। आजकल सब लड़के बड़े शिष्ट, ईमानदार और आदर्शवादी हैं। मगर तभी तक हैं जब तक उनकी शादी की बात न हो। बाकी तो वो अपनी माता-पिता की पसंद का एक कपड़ा भी न पहनें, दुनिया में क्रान्ति ला दें, मगर जब बात शादी की आती है तो माँ-बाप की डिमांड के आगे सब चुप्पी साध लेते हैं। सारी भगत सिंहगीरी भूल जाती है। और क्यों न हो। बाहर तो किसी का एक रुपया लेते शर्म आती है। मगर यहां का तो रिवाज बन पड़ा है कि लड़की से शादी करना मतलब उसके बाप-भाई की सम्पति पर मालिकाना हक जमा लेना होता है। यह भी नहीं सोचते कि फौज का एक मामूली जवान कहाँ से इतना लाएगा। मगर नहीं इन्हें तो जो पड़ोसी की शादी में मिला है उससे ज्यादा ही चाहिए। एक पैसा कम हुआ तो नाक कट जाएगी। इन्ही रिवाजों से जूझकर तो राकेश सपना को उसके घर से ही उठा लाया। न होगा बांस न बजेगी बांसुरी।'

(शेष अगले अंक में)

बर्मा के बाद श्रीलंका में बौद्ध-मुस्लिम टकराव

राजीव चौधरी

बर्मा में बौद्ध और रोहिंग्या मुसलमानों के बीच हुई हिंसा की चिंगारी अब श्रीलंका तक जा पहुंची है। निकट भविष्य में स्थिति क्या होगी इसकी कल्पना ही की जा सकती है। खबर है श्रीलंका में मुस्लिम भीड़ के हमले में एक सिंहली बौद्ध व्यक्ति की मौत की खबरों के बाद चार मार्च को कैंडी जिले में हिंसा भड़क उठी थी। इस घटना के बाद सिंहली बौद्ध समुदाय के लोगों ने मुसलमानों के घरों और दुकानों पर हमले किए, जिसके बाद वहां आपातकाल लागू किया गया था।

कहा जाता है मध्यकाल के अंधकारपूर्ण दौर में दो धर्मों के बीच लंबी लड़ाई चली थी। आज एक बार फिर से दुनिया उसी ओर जाती दिख रही है लेकिन अब अलग धर्म आमने-सामने हैं। इस्लाम का एक उग्र चेहरा दुनिया के सामने देखने को मिल रहा है। आज की समस्या यह है कि क्रूसेड काल के विपरीत यह टकराव सिर्फ ईसाईयत और इस्लाम का नहीं रह गया है। जो सोच और धारणाएं बन रही हैं, उनमें इस्लाम आज बाकी दुनिया के दूसरे धर्मों और पंथों के साथ टकराव की हालत में दिखता है। यही नहीं विरोधी यह तर्क भी देते हैं कि खुद इस्लाम का अपने ही भीतर दूसरे विचारों से टकराव चल रहा है। इस्लामी आतंकवाद और इस्लाम के भीतर अतिवाद जैसी सोच पिछले कुछ दशकों में पूरी दुनिया में धड़ल्ले से चल रही है। चाहे इसमें पेरिस के नीस में हमला हो, भारत में ताज होटल हो। म्यांमार, लंका, बाली, इंडोनेशिया में यही स्थिति है, यूरोप, रूस और अमेरिका भी इसकी चपेट में हैं।

आज विश्व में जहाँ भी टकराव है, हिंसा है उसके पीछे कहीं न कहीं इस्लाम का जरूर दिखाई देता है। यदि मध्यकाल में इस्लाम के नाम पर हुई हिंसा को अलग रखकर भी बात करें तो हिंसा या आतंकवाद की जड़ें बीसवीं सदी के मुस्लिम विचारकों तक पहुंचती हैं, जिन्होंने यह विचार दिया था कि इस्लाम एक पूर्ण व्यवस्था है और राजनीतिक शक्ति इसका एक जरूरी हिस्सा है, क्योंकि इसके बगैर इस्लाम को एक संपूर्ण जीवन पद्धति के तौर पर लागू नहीं किया जा सकता। जब उन्होंने देखा कि राजनीतिक पद तो पहले से किसी और समूह के कब्जे में है, तो उन्हें लगा कि इस्लामी राज्य की स्थापना के लिए मौजूदा शासकों को पद से हटाना अनिवार्य है। इसके लिए संख्या बल बढ़ाना जरूरी है। जो लोग राजनीतिक इस्लाम में विश्वास करते थे, उन्होंने पुराने शासकों को हटाने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लिया, जो अभी तक जारी है।

दरअसल यह टकराव आज लुका-छिपी का नहीं रहा। एशिया से लेकर यूरोप और अमेरिका भर में, धार्मिक अतिवाद बढ़ रहा है। कुछ समय पहले बीबीसी से जुड़ी धार्मिक संबंधों की पत्रकार केरोलिन व्हाइट का इस संबंध में एक विस्तृत आलेख प्रकाशित हुआ था। वह कहती है, एक बात सर्वविदित है कि सभी पंथों की जननी एशिया महाद्वीप की भूमि है, लेकिन विज्ञान और आधुनिकता का अधिकतम रिश्ता यूरोप से जुड़ा हुआ रहा है। यहीं से संघर्ष प्रारम्भ होता है। आधुनिकता की व्याख्या से इस प्रकार के टकराव केवल इस्लाम का अन्य पंथों से ही नहीं, बल्कि उनके अपने पंथ और सम्प्रदाय भी आपस में झगड़ते हैं और समय आने पर युद्ध के मैदान में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने से नहीं चूकते। इसलिए शिया सुन्नी टकराव तो इस्लाम के बहुत प्रारम्भ में ही शुरू हो गया था। यह टकराव खिलाफत को लेकर हुआ था। वहां से सुन्नी और शिया के रूप में मुसलमानों का बंटवारा होता चला गया। जब सत्ता मिलने लगी तो भी उनका यह बुखार नहीं उतरा बल्कि दिनों दिन बढ़ता चला गया। आज भी विश्व राजनीति में शियाओं का नेता ईरान है और सुन्नियों का सऊदी अरब। मामला शिया-सुन्नी तक के विभाजन का होता तो यह मान लिया जाता कि अन्य पंथों की तरह यहां भी वैचारिक और व्यक्ति के आधार पर दो फाड़ हो गए, लेकिन इस्लाम तो इतने फिरके और पंथ में बंटा है कि सारी हदों को पार कर गया है। हर फिरके की अपनी सोच है जो कहीं न कहीं राजनीति से जुड़ी हुई है। अपने पंथ की हुकूमत कायम हो जाए बस यही उलझन बनी रहती है।

केरोलिन व्हाइट लिखती है कि दुनिया का शायद ही कोई धर्म हो जिसका दो फाड़ हुआ हो लेकिन इस्लाम के पंथ तो इतनी बड़ी तादाद में हैं कि अब उनकी गिनती भी कठिन है। न जाने कौन सा मौलवी उठे और अपनी सनक के अनुसार फिर एक नया फिरका बना ले। इसके पीछे मजहबी भावना कम और सत्ता हड़पने की भावना अधिक होती है। भले ही वह किसी देश या जमीन के भाग पर अपनी सल्तनत स्थापित न कर सके, लेकिन व्यक्तियों के समूह पर तो अपने विचार लादकर अपने मन को शांत कर ही सकता है!

अतः मामला राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय अथवा स्वयं इस्लाम के सम्प्रदायों के बीच, वह दो भागों में विचारधारा के नाम पर बहुत जल्दी बंट जाता है। अधिक तादाद होने पर वह किसी देश की मांग करने लगता है। इसलिए धरती का बंटवारा जो राष्ट्रों के बीच में हुआ है, उन्हें तो येन-केन प्रकारेण अपने देश चाहिए, जहां वे अपने नियमों और सिद्धांतों के आधार पर भौतिक सुखों का आनंद ले सकें।

केरोलिन यहीं नहीं रुकतीं। वे आगे कहती हैं कि कहने को कहा जाता है कि दुनिया में ५६ मुसलमान राष्ट्र हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि एक देश में जितनी विचारधारा के मुसलमान हैं, वे अपनी सत्ता स्थापित करने की जुगाड़ लगाते रहते हैं। इसलिए इन देशों में मुसलमानों के अनेक गुट सत्ता हथियाने के लिए लड़ने और युद्ध करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। जिन देशों में उनकी संख्या कम होती है वे पहले तब्लीग और कन्वर्जन के नाम पर अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। इस संख्या को बढ़ाने के लिए कन्वर्जन से लगाकर अधिक बच्चे पैदा करने की मुहिम चलाकर वे अपना संख्याबल बढ़ाते हैं और फिर कुछ ही वर्षों में एक नए देश की मांग करने लगते हैं।

एशिया को विजय कर लेने के बाद वे अफ्रीका की ओर बढ़े। अवसर मिला और यूरोप में भी घुसे। आज इस्लाम परस्तों की यह लालसा है कि वे नम्बर एक पर पहुँच जाएं। वे किसी न किसी बहाने युद्ध को निमंत्रण

(शेष पृष्ठ २२ पर)

कब्रों द्वारा भारत के इस्लामीकरण का षड़यंत्र

डॉ विवेक आर्य

कल कार्य विशेष से चंडीगढ़ गया था, आज वापिस आया हूँ। हरियाणा में मुसलमानों का एक गिरोह सुनियोजित तरीके से पीरों की कब्रों को बनाने में लगा हुआ है, जिससे हिन्दू जनता को मूर्ख बनाकर उनके पैसे ठगे जा सकें, मन्नत मांगने आई लड़कियों और औरतों को बहकाया या भगाया जा सके, हिंदुओं के मन में उन्हीं के महान पूर्वजों श्रीराम और श्रीकृष्ण के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न कर सकें और उनका धर्मांतरण कर उन्हें मुसलमान बनाया जा सके।

ध्यानपूर्वक देखने पर सरलता से समझ आता है कि कब्र बनाने की प्रक्रिया कैसे आरम्भ होती है? पहले किसी सुनसान स्थान पर सड़क किनारे पेड़ों से नीली झंडियां बांध दी जाती हैं। फिर वहाँ पर एक कच्ची कब्र बना दी जाती है।

कुछ दिनों बाद उस कब्र को पक्का कर दिया जाता है। फिर कहीं से एक मुसलमान वहाँ पर आकर बैठ जाता है। कुछ अगरबत्ती आदि जलाकर हाथ में झाडू लेकर दुआ मांगने लगता है। उसका चेला सड़क पर बैठ कर टोकड़ी में फूल, अगरबत्ती, प्रसाद आदि बेचने लगता हैं। कुछ समय बाद अक्ल के अंधे और धर्म की वास्तविकता से अनभिज्ञ हिन्दू गाड़ियां रोक-रोककर उस कब्र पर अपना माथा पटकने लगते हैं।

गरीब से गरीब, अनपढ़ से अनपढ़ मुस्लमान कभी हिंदुओं के अराध्या देवी देवताओं के प्रति श्रद्धा भाव नहीं दिखता और पढ़े लिखे हिन्दू सबसे अधिक मुसलमानों कि कब्रों पर सर पटकते हैं।

१९४७ में हरियाणा से सभी कब्रों का सफाया कर दिया गया था। आज फिर से हर सड़क के किनारे, हर बड़े संस्थान के निकट कब्रें कुक्कुरमुत्तों के समान उगने लगी हैं। ऐसी जाति का भविष्य कैसे सुरक्षित हो सकता है जिसने इतिहास से कुछ नहीं सीखा और जो वर्तमान में मूर्खतापूर्ण कार्य करने से पीछे नहीं हट रही है? ■

रात की तन्हाईयाँ और मैं अकेली
परछाईयों से लड़ती-जूझती हुई
हर तरफ पसरा घनघोर अंधेरा
डसने लगा रात काले नाग सा
सुबकते कोने में डरी सहमी सी
वक्त कटने का करने लगी मिन्नतें
हर लम्हा सन्नाटे की सनसनी आवाजें
मेरी धड़कनों को तेज बढाने लगी
घेरता गया डर का साया चारों ओर से
चीख भी दब गई कंठ के किसी कोने में
आँखें मुंदे कांपते थरथराते होंठ मेरे
करने लगे इंतजार हिम्मत की मुठ्ठी बांधे
आखिर, कभी तो होगी सुबह इस काली रात की

-- बबली सिन्हा

हाँ वो मारी गयी/बहुत पहले ही
नहीं बच पायी/लाख कोशिश करने के बाद भी
कसूर तो कुछ नहीं था/बस हाँ वो सुन्दर थी
सुशील थी, मनमोहक थी
यही शायद उसकी कसूर था
तभी दुनियां की अ खों में
किरकिरी की भांति गड़ गयी
और जैसे ही बालावस्था से
किशोरावस्था में कदम रखा
हो गयी शिकार जंगली भेड़ियों की!

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

मैं प्रीत हूँ स्निग्ध प्रकृति/युवा दिलों में धड़कती
सदियों से महकती/तरुणाई को सौन्दर्य के रँग देती
प्रेम गीतों में/रागिनी बन घुली स्वरलहरियाँ
बहारों में बहकती/फूलों में गमकती
फुनगियों पर/चिड़िया बन फुदकती
प्रवाहित प्रवाहिनी में/झरनों सी फूट पड़ती
अंदर से बाहर की ओर अविरल धार
तरलतम, सरलतम होती जाती
नित पिघलती भावनाएं/जीवंत रूप
आनन्दित करता जड़ को
चेतन करता स्पर्श प्रीत का
जिन्दगी में प्राण ढालता!

-- रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

सुन रही है जमीं, सुन रहा आसमां
प्रेम की बात को, बुन रहा आसमां
तुम चली हो किधर आ जरा इस डगर
राह कांटे इधर, चुन रहा आसमां
ना लडो इस समय, साथ मेरे चलो
देख बातें सभी, सुन रहा आसमां
चांद की चांदनी में, गले आ मिलें
आज तो प्रेम ही, गुन रहा आसमां
इन लता कुंज में, चांद से चांदनी
प्यार ही प्यार कर, धुन रहा आसमां

-- प्रदीप कुमार तिवारी

नारी एक चट्टान है/जो तूफान आने पर
अपनी जगह पर/अडिग रहती है!
नारी एक संकल्प है/जो अपना काम
सही समय पर पूरा कर लेती है!
नारी एक भावना है/जो हर दिल की
भावना को भाँप लेती है!
नारी एक हिम्मत है
जो लाख कष्ट झेलने पर भी
कष्ट सहने की हिम्मत रखती है!/नारी एक बाग है
जिसमें रंग बिरंगे/फूल खिले रहते हैं!!
नारी एक फूल है/जो हमेशा खुशबू बिखेरे रहती है!
नारी लक्ष्मी है जो हर धर को स्वर्ग बना देती है!
नारी एक सागर है जिसकी तुलना अतुलनीय है!

-- बिजया लक्ष्मी

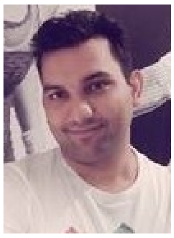

जब पौ फटने के बाद/चिड़ियों का स्वरवंदन होता है
जब सिकर दोपहर में/पसीने को छिटक कर
किसान बीज बोता है
हल के फालों से
धरती सुसज्जित होती है
जब गुड़िया गरीब की
कुटिया में रोटी के लिए रोती है
ऐसे बनती है कविता

-- परवीन माटी

एक प्यारा सा परिवार मिला मुझे
एक प्यारे से पिता जिनकी राजदुलारी हूँ मैं
एक प्यारी सी माँ मिली जिनकी लाड़ली हूँ मैं
एक प्यारी सी बड़ी बहन मिली
जो हर पल नई राह दिखाती है मुझे
एक प्यारा सा भाई मिला
जो हर मुश्किल में साथ है मेरे
एक प्यारी सी छोटी सी बहन भी है
जो सबके आंखों का तारा है
मेरे दिल पर मेरे इन सबका राज है
ये नही तो मेरा कहाँ संसार है
मेरा परिवार ही मेरी जिंदगी है
ये नही तो एक अधूरी सी कहानी हूँ मैं
कोई पूछे जो मुझसे कि रब कैसा मैं कहती हूँ
मेरे मम्मी पापा के जैसे होता है

-- उपासना पाण्डेय 'आकांक्षा'

सीढ़ी का पहला पायदान हूँ मैं
जिस पर चढ़कर/समय ने छलाँग मारी और
चढ़ गया आसमान पर/मैं ठिठककर तब से खड़ी
काल चक्र को बदलते देख रही हूँ,
कोई जिरह करना नहीं चाहती
न कोई बात कहना चाहती हूँ
न हक की न ईमान की
न तब की न अब की।
शायद यही प्रारब्ध है मेरा
मैं पायदान/सीढ़ी की पहली पायदान।

-- डॉ जेन्नी शबनम

सहमकर सिर नीचे झुकाना/बोलने में हिचकिचाना
आँखों में ही डर जाने वालीं/लडकियां बोलने लगी हैं!
जितनी दबी उतनी उठ गयी
जितनी डरी उतनी संभल गयी
खुलकर जीने की चाह में
लडकियां बोलने लगी हैं!
कबतक घुट-घुट कर जीतीं
कबतक सह-सह कर रोतीं
रस्मों का बोझ उतारने के लिए/लडकियां बोलने लगी हैं!
व्याकुल मन की व्यथा सुनाने/अपने को परिपक्व बनाने
काँपते लफ्जों को छोड़कर/लडकियां बोलने लगी हैं!

-- जयति जैन 'नूतन'

बचपन की यादें कितनी अच्छी होती हैं
आज उन यादों को ताजा करना अच्छा लगता है
कहा खो गया वो बचपन वो हसीन दिन
जब न होती थी कोई फिक्र/खेल में दिन बीतते थे
न पढ़ने की फिक्र न कुछ करने की फिक्र
पापा की डाँट माँ का लाड/सब बहुत याद आता है
अब सब कुछ कहीं खो गया है
न वो बचपन रहा और न वो लाड़
वो स्कूल जाना और
माँ के हाथ का पराठा खाना
बड़ों की बातें सुनना
उनको हँसी में उड़ाना
रात में दादी से कहानी सुनना सब बहुत याद आता है

-- गरिमा

मेरी नन्हीं सी, कली हो तुम
जीतीं हूँ जिसके लिए, वो जिंदगी हो तुम
सीचा है बडे प्यार से जिसे
मेरे प्यार की वो छवि हो तुम
मेरी अर्ध-जिंदगी का, पूर्ण ख्वाब
मेरी आत्मा, मेरी वो परछाईं हो तुम
जन्म दें तूझें जैसे खुद को पा लिया
जीती हूँ मै, वो हर पल जो तुझे दिया
जब से तू, जिंदगी में आई
इक बार फिर, मै खुदसे रू-ब-रू हो पाई
सच जैसे कोई, ख्वाब हुआ हो
अर्ध-जिंदगी में, पूर्ण कोई आज हुआ हो
कह सकूं जिसें अपना, वो अंश तुम
मेरे घर की रोशनी, मेरा गुरूर तुम
जीती हूँ मैं हर घड़ी जिसमें/मेरी वो जिंदगी हो तुम

-- रीना सिंह गहलोत (रचना)

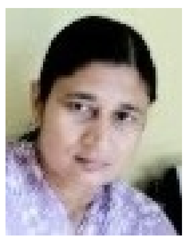

जुनून की जड़ों में/मैंने डाली थी खाद उत्साह की
दिया था पानी त्याग का
तब कहीं लगा था पौधा उम्मीदों का
जिस पर खिले थे
वही फूल कल्पनाओं के
जिसे तुम हर रात
ख्वाब में देखा करती थी माँ!

-- सीमा सिंघल 'सदा'

पुजारिन

आज कला-मंच का एक चित्र प्रतियोगिता का परिणाम आने वाला था. अपनी बड़ी-बड़ी कजरारी आंखों को अपने छोटे-से घर की खिड़की के पास कला-मंच की ओर से आने वाली राह पर बिछाए खड़ी थी. उसके मन में अनेक विचार उमड़-घुमड़ रहे थे.

वह कभी मंदिर नहीं गई थी. आस-पास के सब लोग रोज मंदिर की देहरी पर माथा रगड़ते और वहां से लौटते समय उसकी बातें करते हुए कहते- 'इसकी मां तो ऐसी न थी, यह न जाने किस पर गई है?'

वह सुनती, पर कोई प्रतिक्रिया नहीं देती. देती भी कैसे? हर उसके मन से टकराकर परावर्तित जो हो जाती थी. इधर कुछ दिनों से वह भी पुजारिन हो गई थी. एक दिन मेले से चूड़ियां, नथनी, बालियां और बिंदिया ले आई थी. मनिहारी ने जिस अखबार में चूड़ियां लपेटकर दी थीं, वह उसी दिन का अखबार था. अखबार के उस टुकड़े पर कला-मंच का एक चित्र प्रतियोगिता का विज्ञापन था. एक महीने के अंदर एक श्वेत-श्याम सुंदर-सार्थक चित्र बनाकर भेजना था. उसने कभी कोई चित्र बनाया नहीं था, पर उसे प्रतियोगिता में प्रतिभागी तो बनना ही था.

'एक महीने में यह सब कैसे संभव होगा?' उसने खुद से प्रश्न किया था. 'एक महीने में तो भगवान राम ने सीता की खोज कराई, रामेश्वरम पुल का निर्माण करवाया, लंका पार करके रावण को मारा और सीता को बचा भी लिया.' जवाब उसने खुद ही ढूंढ निकाला था.

उसी दिन से वह कला की पूजा में लग गई थी. कई चित्र बने, पर उसकी संतुष्टि नहीं हो पाई थी. आखिरी दिन उसकी पूजा रंग लाई थी. उसे अपना बना चित्र ही बोलता-सा लगा था. उसे लगा सुंदर-सार्थक चित्र बन गया था. बड़े जतन से वह अपना चित्र जमा कर आई थी.

जाने किसकी किस्मत खुलेगी? बड़े-बड़े धुरंधरों के सामने उसकी भला क्या बिसात है?, विजयश्री किसके कंठ को मेडल पहनाएगी? ऐसे अनेक प्रश्न उसके सामने आते-जाते रहते। एक दिन सामने वाले बजरंगी चाचा उसको आवाज लगाकर पूछा- 'जानकी बिटिया, तुमने किसी चित्र प्रतियोगिता में भाग लिया था क्या?'

'जी हां चाचाजी, आपको कैसे पता लगा?'

'अरी बिटिया, तेरा फोटू देखकर सूचना बोर्ड पर देखा- तेरे चित्र को प्रथम पुरस्कार मिला है.'

'सच कह रहे हैं चाचा जी?' कहने को वह इतना ही कह पाई थी, पर उसका अंतर्मन कह रहा था- 'आज पुजारिन की पूजा कुबूल हो गई.'

-- लीला तिवानी

अपने अपने एहसान

'क्या प्रीति बड़ी खुश नजर आ रही हो, कोई खास बात?' अपनी सहायिका को खूब चहकता देख मैं उसकी खुशी का कारण पुछने से खुद को रोक ना पाई। बदले में मुस्काकर वो बोली- 'क्या बताऊँ दीदी कल करवाचौथ था ना, और पहली बार ऐसा हुआ कि राकेश पीकर नहीं आया, बल्कि नहा धोकर साफ कपड़े पहनकर मेरे और बच्चों के लिए मिठाई भी लेकर आया। ऐसा दस सालों में पहली बार हुआ दीदी!' कहते कहते उसकी आवाज भर्रा गई।

'पर प्रीति उसका ये रूप एक रील का ही होगा, देखना आज फिर वही दारू मार कुटाई। मैं समझ नहीं पाती क्यूँ बर्दाश्त करती हो ये सब? खुद कमाती खाती हो, अपने दम पर अपनी, बच्चों की और उसकी भी जिंदगी चला रही हो। फिर भी उसकी धौंस सहती हो, छोड़ दो उसे। तब अक्ल ठिकाने आएगी उसकी।'

बदले में वो जैसे कुछ याद करते हुए मुस्कुराई और फिर से बोल पड़ी- 'छोड़ तो वो सकता था मुझे दीदी! जब उसका भाई मेरा पति रोड एक्सिडेंट में चल बसा था। दो बेटियों वाली की ना ससुराल मे जगह थी, ना मैके में। दूर तक मुझे अपने और अपनी बच्चियों के लिए कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। उस वक्त इसी राकेश ने अपनी आठ दिन बाद होने वाली शादी को कैन्सल करके पूरे समाज के आगे अपने माँ बाप की इच्छा के खिलाफ जाकर मेरे ऊपर चुन्नी डाली थी। वो दिन भूल जाऊँ, तो जिंदगी ही बेमानी हो जाए। आज उसी की वजह से तो जिंदा हूँ। अपने बारे में सोच पा रही हूँ। उसके इस एहसान के बदले तो मैं उसके सौ खून माफ कर सकती हूँ दीदी!'

तब से उधेड़बुन में हूँ। राकेश ने शादी करके एहसान किया, प्रीति उसे मनमानी करने की आजादी

देकर एहसान कर रही है। प्रीति सही है या उसका पति या उनके एहसान एक दूसरे के लिए?

-- मीनू झा

घायल खिलौने

रत्ना अस्पताल के बरामदे में बैठे बाहर दूसरे बच्चों के साथ बगीचे में खेलती बेटी वर्षा को देख फूली नहीं समा रही थी, उसका आपरेशन सफल रहा। बगीचे की तरफ देखते-देखते उसकी आँखों के आगे एक एक घटनाक्रम चल चित्र की भाँति घूम गया, जब वो घर में ब्याह कर आई थी। बिन माँ के घर की जो हालत होती है वो किसी से भी छुपी नहीं थी। ऊपर से बड़ी होती वर्षा का सभी काम रत्ना को खुद करना होता था। अस्त व्यस्त घर को सम्भालने में रत्ना दिन-रात एक कर लगी थी कि अचानक उसकी नजर वर्षा के टूटे-फूटे खिलोनों के बक्से पर पड़ी तो उसकी सफाई में लग गई।

'मम्मी आप मेरे सभी खिलौने फेंक दोगी क्या?'

'वर्षा, देखो तुम्हारी गुडिया और बहुत से खिलौने पुराने और जगह-जगह से टूट गए हैं, तो हम इन सभी की जगह नए खिलौने लायेंगे।' रत्ना बोली।

'मम्मी आप भी तो मुझे गुड़िया बुलाती हो और मेरा एक पैर भी खराब है, तो क्या आप मुझे भी बदलकर दूसरी वर्षा लाओगी?'

'नहीं! मैं तुम्हारी दूसरी माँ जरूर हूँ पर मेरे लिए तुम सिर्फ प्यारी गुडिया रहोगी और हम तुम्हारा...।'

अचानक वर्षा ने झकझोरा तो रत्ना खुशी के आंसू लिये बोली, 'कुछ घायल खिलौनों का इलाज धरती के भगवान ही करते हैं।'

-- संयोगिता शर्मा

बड़ा अफसर

सुनीता ने पहले अपने सामने रखे अदालती कागज को देखा, फिर सामने बैठे अपने पति को देखा। सचमुच पहले से रंगत बहुत बदल गई थी। शहर जाकर परीक्षा की सही तरह से तैयारी करने का लिए सुनीता ने अपने गहने देकर भेजा था। अब वह एक आईएएस अधिकारी था। उसके पति ने उसे समझाते हुए कहा- 'दस्तखत कर दो। घबराओ मत, उसके बाद भी मैं तुम्हारा पूरा खयाल रखूंगा।'

तभी उसका फोन बजा। कॉलर का नाम देखकर उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह एक तरफ जाकर बात करने लगा।

'मेरे बिना जी नहीं लग रहा है। ...हाँ जल्दी लौटूँगा। बस मेरा काम हो जाए।'

बात करके जब वह सुनीता के पास आया तो उसने कागज उसके हाथ में थमा दिया। 'तो दस्तखत कर दिया?' कहकर उसका पति कागज देखने लगा।

'नहीं किया। कम पढ़ी हूँ। पर बेवकूफ नहीं।' सुनीता का चेहरा स्वाभिमान से जगमगा रहा था।

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

ग़ज़ल

हाले दिल अपना बता ना सके
राजे दिल अपना छुपा ना सके
इंतजार करते रहे सुबह शाम
इंतजार उसी का है जता ना सके
गीत गाता रहा गजल सुनाता रहा
सुनाना था जिसको सुना ना सके
आंखों से भी कुछ कह ना पाए
जुबां से भी कुछ बता ना सके
सबको मालूम है उसे खबर ही नहीं
बात दिल की उस तक पहुंचा ना सके

-- राजेश सिंह

अनोखा उपहार

कल्पना रामानी

'सुनो नीलू डियर, आज शाम को माँ-पिताजी से मिलने चलना है, मैं जल्दी आऊँगा, तुम तैयार रहना।' कहते हुए आशीष दफ्तर के लिए निकल गया।

पति के जाते ही नीलिमा प्रसन्न-मन घर के काम-काज जल्दी-जल्दी निपटाने लग गई। उसके कालेज की दो दिन छुट्टी थी। सोचा कि वृद्धाश्रम से वापस आते समय मायके भी होती आएगी। मायका है तो इसी शहर में, लेकिन ससुर जी की बीमारी के कारण जाने का समय ही नहीं निकाल पाती थी। बड़ी मुश्किल से उनसे छुटकारा मिला है। छोटू के स्कूल से आते ही वह उसे साथ लेकर मायके वालों के लिए उपहार खरीदने बाजार चल दी। ठण्ड के दिन थे तो माँ के लिए एक सुन्दर सा शाल खरीदा। पति के घर आते ही वे निकल पड़े। चलते-चलते उसने मायके होते हुए आने की बात पति के कानों में डाल दी थी, तो भोजन भी वहीं होना ही था। अतः आराम से घर वापसी होगी।

कार सरपट भागी जा रही थी। चूँकि वृद्धाश्रम शहर के बाहरी हिस्से में था, तो वहाँ पहुँचने में एक घंटा लग जाता है। नीलिमा आज बहुत प्रसन्न थी। ठण्ड के दिन, शाम का समय, साथ ही आसमान में बादल और कोहरा वातावरण को खुशनुमा बना रहे थे। रास्ते में हरे भरे उद्यान दिखते तो उसका मन फूलों सा खिल जाता, झील के पुल से गुजरते हुए, लहरों को देखकर उसका तन-मन भीगने लगता, पहाड़ियों की कतार देखकर तो वह कल्पनाओं में ही उड़कर वहाँ पहुँच गई और बादलों के साथ उड़ने लगी। उड़ते-उड़ते वह १५ दिन पहले के उन पलों में जा पहुँची, जब उसकी सहेली सुधा ने उसकी जिन्दगी की किताब में खुशियों का अध्याय जोड़ दिया था।

सुधा और वह एक ही कालेज में व्याख्याता के पद पर थीं। लेकिन उसकी लगातार अनुपस्थिति से वह सोच में पड़ गई थी कि न जाने क्या समस्या है। उसने फोन पर पूछा था तो नीलिमा ने अपने ससुर जी की तबियत खराब होना बताया था, पर इतने से सुधा को संतोष नहीं हुआ और वह उसका हालचाल लेने उसके घर पहुँच गई थी।

नीलिमा का बुझा चेहरा देखकर वह पूछ बैठी थी- 'क्या बात है नीलू? सदैव मुस्कुराता हुआ यह चाँद सा चेहरा आज इतना मुरझाया सा क्यों है?

'कुछ नहीं सुधा, घरेलू समस्याएँ जोंक बनी हुई हैं। समझ में नहीं आता इनसे पीछा कैसे छुड़ाया जाए?'

'फिर भी कुछ बताओ तो सही, हो सकता है मैं कुछ सहायता कर सकूँ।'

'वह क्या है न सुधा, सब कुछ अच्छा चल रहा था, मैं केवल नौकरी पर ही ध्यान देती थी। ससुर जी बाहर से सामान, सब्जी, दूध वगैरह लाने का कार्य करते थे और सासुमाँ छोटू को सँभालने और घर की देखरेख के अलावा महरी से घर के सारे काम अपनी देखरेख में करवा लेती थीं। मुझे कोई चिंता ही नहीं रहती थी। लेकिन एक दिन बारिश में बाजार से सौदा लाते समय ससुर जी पैर फिसलने से सड़क पर गिर गए और उन्हें घुटने में गहरी चोट आ गई। उस दिन के बाद लगभग ६ महीने हो गए, पर सारे इलाज होते हुए भी वे ठीक नहीं हो सके, बल्कि उन्हें अर्थराइटिस ने भी जकड़ लिया है।

सासु-माँ पूरा समय उनकी देखरेख में लगी रहती हैं। अब तो वे भी परेशान और थकी-थकी रहने लगी हैं, घर सँभालने में बहुत परेशानी होने लगी है। मेरे सिर पर दोहरी जवाबदारियाँ आ गई हैं। छुट्टियाँ भी आखिर कितनी ली जाएँ? आशीष से सहयोग के लिए कहती हूँ, तो वे नौकरी छोड़ देने की बात करने लगते हैं। लेकिन मुझे यह मंजूर नहीं। इसी कारण हमारे बीच भी मनमुटाव बढ़ गया है। तुम्हीं बताओ सुधा, मैंने इतनी पढ़ाई घर बैठने के लिए तो नहीं की न, आखिर मेरे भी कुछ सपने हैं। क्या करूँ कोई रास्ता नहीं सूझ रहा!'

'हाँ, समस्या तो है, लेकिन नौकरी छोड़ने से भी शायद बात नहीं बनेगी, गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।'

इतने में उसे परदे से बाहर सासुमाँ की झलक दिखाई दी थी, शायद वे ससुरजी के किसी काम से उठकर कमरे से बाहर आई हैं। तभी अचानक नीलिमा के मन में एक विचार कौंधा था और उसी क्षण मात्र में उसके मनोमस्तिष्क पर स्वार्थ ने अपना अधिकार जमा लिया था। वह माँ-पिता से मिले हुए सारे संस्कार, सास-ससुर का सहज अपनापन, स्नेह त्याग, सब ताक पर रखकर कुछ ऊँची आवाज में, ताकि सासुजी सुन सकें, बातचीत को आगे बढाते हुए बोली थी- 'वैसे तो सुधा, आजकल नौकरीपेशा दम्पतियों के समयाभाव को देखते हुए वृद्धाश्रमों का विकास तेजी से हो रहा है, लेकिन लोग संज्ञान में लें तब न। बेटे तो पतली गली से बच निकलते हैं और लात बहुओं के सीने पर ही पड़ती है। जबकि होना तो यह चाहिए कि अक्षम होने पर बुजुर्ग स्वयं आगे रहकर अपने जैसों के बीच रहने का मार्ग चुनें ताकि बेटे-बहुओं पर अतिरिक्त भार न पड़े। खैर! तुम परेशान न हो डियर, जो होना है वह होकर रहेगा, मैं चाय बनाती हूँ।'

'रहने दो नीलू, मैं बस तुम्हारा हालचाल जानने ही आई थी, मुझे थोड़ा बाहर का काम है। मैं चलती हूँ, अपना हालचाल बताती रहना।'

नीलिमा का तीर निशाने पर बैठा था। दूसरे दिन ही आशीष को कमरे में बुलाकर ससुर जी ने कहा था- 'मैं सोचता हूँ बेटे कि मेरी बीमारी अब आजीवन पीछा नहीं छोड़ने वाली। तुम्हारी माँ से भी अब अधिक काम नहीं होता और तुम दोनों की दिनचर्या भी प्रभावित हो रही है, तो हमें वृद्धों के सेवाश्रम में रहकर सन्यास आश्रम का पालन करना चाहिए'।

आशीष भी प्रतिदिन की चिकचिक से परेशान हो गया था, तो थोड़ी ना-नुकुर के बाद इसके लिए तैयार हो गया था।

आजाद होते ही वह इतनी खुश हुई थी जिसकी कोई सीमा नहीं थी। पहली कक्षा में पढ़ने वाले छोटू की देखरेख के लिए आया तो थी ही, अतः अब कोई चिंता नहीं थी। सास-ससुर के सामने कितने लिहाज से रहना पड़ता था, उफ! न मन का पहनना ओढ़ना, न कभी ऊँची आवाज में म्युजिक सुनना, जिसका उसे बचपन से शौक था। अब तो जब भी घर में अकेली होती बेफिक्र होकर गुनगुनाने और ऊँची आवाज में म्युजिक सिस्टम पर अपने मनप्रिय गीत लगाकर झूमने और गाने लगती थी। तंद्रा टूटते ही उसने एक नजर छोटू पर डाली, उसे नींद आ गई थी।फिर मोबाईल पर अपना मनप्रिय गीत लगाया और झूमने लगी-

पंछी बनूँ, उड़ती फिरूँ मस्त गगन में।
आज मैं आजाद हूँ दुनिया के चमन में।

अँधेरा घिरने लगा था, वृद्धाश्रम पहुँचे तो पता चला सास-ससुर कॉमन हाल में शाम का कीर्तन सुनने गए हैं। वे उनके कमरे के बाहर ही रखी हुई बेंच पर बैठकर इंतजार करने लगे। इतने में नीलिमा को बाहरी गेट पर एक कार रुकती हुई दिखी, लेकिन जब उसने भाई को उतरकर कार से माँ को सहारा देकर उतारते देखा तो आश्चर्यचकित रह गई, पर अगले ही पल उसका मन खुशी से भर गया।

सोचा- शायद आशीष ने ही उन्हें बुलाया होगा और वे भी उसके सास-ससुर से मिलने आए होंगे। एक सप्ताह ही तो उनको यहाँ आए हुआ है और वे भी पहली बार ही उनसे मिलने आए हैं। नीलिमा लगभग दौड़कर माँ के गले लग गई और सहारा देकर बेंच तक लाकर बिठा दिया। छोटू भी नानी से चिपककर वहीं बैठ गया और उधर आशीष उसके भाई के साथ बातचीत में व्यस्त हो गया।

'अरे माँ! कैसी हैं आप? बहुत दिन हुए हमें मिले। हम स्वयं यहाँ से वापसी में आप सबसे मिलने आ रहे थे। अब आप आई हैं तो हम आपके साथ ही चले चलेंगे, सबसे मिलना हो जाएगा। वैसे तो घर से निकलना ही नहीं हो पाता था, जॉब के साथ ही घर, बच्चे और सास-ससुर की देख-रेख ने मेरी कमर ही तोड़ दी थी, अब जाकर कुछ राहत मिली है। देखो न मैंने सबके लिए उपहार भी खरीदे हैं।'

कहते हुए नीलिमा ने बैग खोला और माँ के लिए खरीदा हुआ शाल निकालकर उनके कंधे पर डालकर बोली- 'यह आपके लिए ही लिया है माँ, कितनी सुन्दर लग रही हो माँ इस शाल में।!'

लेकिन माँ का कोई उत्तर न पाकर उसने गौर से उनकी ओर देखा तो वे कुछ गंभीर सी दिखीं।

(शेष पृष्ठ २८ पर)

आँखें जिस पल को तरसी थीं, वह दर्श दिखाया योगी ने
उस सदन बीच खुलकर हिन्दू उत्कर्ष दिखाया योगी ने
निज धर्म-कर्म पर गौरव है, ये सिखा दिया है योगी ने
जो मोदी नहीं दिखा पाये, वो दिखा दिया है योगी ने
बेशर्म जनेऊधारी थे, जो इफ्तारों में जाते थे
हाथों से तिलक मिटा करके, जो टोपी गोल लगाते थे
वोटों की भूख जिन्हें मस्जिद-दरगाहों तक ले जाती थी
खुद को हिन्दू कहने में जिनकी जुबान शर्माती थी
उन ढोंगी धर्म कपूतों की छाती पर चढ़कर बोल दिया
क्यों ईद मनाऊँ? हिन्दू हूँ, ऐलान अकड़कर बोल दिया
जड़ दिया तमाचा, और लिखी इक नयी कहानी योगी ने
लो डूब मरो, बंटवा डाला, चुल्लू भर पानी योगी ने
संकेत दिखा है साफ-साफ, अब इस महंत की बातों में
अब होना दर्द जरूरी है, आजम खानों की आंतों में
पूरे प्रदेश में शांति अमन का दौर मिला है यूपी को
लगता है जैसे पहला बब्बर शेर मिला है यूपी को
हिन्दू गौरव पर ग्रहण लगा जो, जल्दी हटने वाला है
जेहादी कुनबा सदमे में अब शीश पटकने वाला है
वह राजनीति के नव युग में बजरंगी का अवतारी है
थोड़ा सा बाल ठाकरे है, थोड़ा सा अटल बिहारी है
दीवाली फिर से चमकी है, होली फिर से मुस्काई है
शिवरात्रि लगी महकी महकी, हर उत्सव में तरुणाई है
यह कवि गौरव चौहान कहे, यह स्वाभिमान की बेला है
हर हिन्दू मिलकर साथ खड़ा,
योगी अब नहीं अकेला है
आरंभ हुआ है लो प्रचंड,
हम दिव्य चमकते बिंदू हैं
खुलकर के आज सभी बोलो,
हम हिन्दू हैं, हम हिन्दू हैं

-- कवि गौरव चौहान

क्लेशों का हर कल्मष हर लो, बरसाओ रस-धारा।
स्वागत है, हे नव संवत्सर! सौ-सौ बार तुम्हारा।
पूरब में प्रकटे सूरज की कुछ ऐसी अरुणाई।
जागे जिसे देखकर सोये भारत की तरुणाई।
छिन्न-भिन्न हो क्रूर विचारों, कुण्ठाओं के कारा।
हृदय-सरोवर में सद्भावों के सरसिज मुस्काएँ।
मन-मानस से तमस, तनावों की, जो दूर भगाएँ।
गली-गली महके जीवन की, महके हर चौबारा
प्रान्त-प्रान्त में सुलग रही अलगावों की चिनगारी।
कातर दृग से देख रही है मातृभूमि बेचारी।
समाधान दो, यह चिनगारी, बने नहीं अंगारा।
राजनीति कर रही कलंकित सारी धर्म-ध्वजाएँ।
तोड़ रहे हैं धर्म-धुरन्धर शाश्वत परम्पराएँ।
तुम्हीं पतन के इस युग में, प्राणों का बनो सहारा।
जीवन-मूल्यों की गिरती जाती है नित्य प्रतिष्ठा।
विहँस रही वंचना चतुर्दिक, सिसक रही है निष्ठा।
संहारो अन्याय, अनय तुम, लेकर कुलिश-कुठारा।
प्राणों में विलसे आशाओं की हँसमुख हरियाली।
जीवन के संकल्प सजाएँ वैभव की दीवाली।
कर्तव्यों के प्रति प्रमाद तज जाग उठे जग सारा।
इस धरती का कोई मानव रहे न भूखा-नंगा।
दहे दैन्य, दारिद्र्य परस्पर, बहे प्रेम की गंगा।
गौरव का शिरमौर बने, फिर भारत देश हमारा।

-- आचार्य देवेन्द्र देव

अँधियारे से लड़कर हमको, उजियारे को गढ़ना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर, आगे को नित बढ़ना होगा
पीड़ा, गम है, व्यथा-वेदना, दर्द नित्य मुस्काता
जो सच्चा है, जो अच्छा है, वह अब नित दुख पाता
किंचित भी ना शेष कलुषता, शुचिता को अब वरना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर, आगे को नित बढ़ना होगा
झूठ, कपट, चालों का मौसम, अंतर्मन अकुलाता
हुआ आज बेदर्द जमाना, अश्रु नयन में आता
जीवन बने सुवासित सबका, पुष्प सा हमको खिलना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर, आगे को नित बढ़ना होगा
कुछ तुम सुधरो, कुछ हम सुधरें, नव आगत मुस्काए
सब विकार, दुर्गुण मिट
जाएं, अपनापन छा जाए
औरों की पीड़ा हरने को,
खुद दीपक बन जलना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर,
आगे को नित बढ़ना होगा

-- प्रो. शरद नारायण खरे

टुकड़ों-टुकड़ों में धरती को अब मत बांटो रे
बांट लिया घर, खेत, बाग, मत अम्बर बांटो रे
गगन चूमते लम्बे तरु बादल पास बुलाते
गरज-गरज खूब बरसते भू की प्यास बुझाते
वृक्ष हमारे जीवन दाता, इन्हें न काटो रे
ऊंचे उठे पहाड़ देश का स्वाभिमान गाते
जड़ी-बूटियां, फूल, फूल नग-तन महकाते
संस्कृति के संवाहक, रक्षक, भूधर मत काटो रे
लोगों के मन परिवर्तित बदले हैं आचार सभी
धन के परितः घूम रहें मानवीय व्यवहार सभी
उगी विष-बेल हृदय में आज, उसको छांटो रे
निहित स्वार्थ की दीमक
हर उर में आज पली है
और अर्थ की चकाचौंध
में फंसी सुमन-कली है
समरसता ममता से
मन की खाई पाटो रे

-- प्रमोद दीक्षित 'मलय'

किचन में मिल गए हो तुम सहारा हो तो ऐसा हो
जिधर देखूं तूम्हीं तुम हो नजारा हो तो ऐसा हो
पडे हैं रात के बर्तन, मगर महरी नहीं आई
नहीं कोई फिकर मुझको, तूम्हीं निपटाओगे भाई
समझ जाओ निगाहों को नजारा हो तो ऐसा हो।।१।।
बड़ी सांसत में हम तो थे, गई छुट्टी पर महराजिन
फिकर होती थी हमको भी, कटेगा कैसे पूरा दिन
अगर मंज जाएं सब बरतन पिला दो चाय भी भाई
बड़े ही प्यार से अपना गुजारा हो तो ऐसा हो।।२।।
तुम्हें ऑफिस भी जाना है,
मुझे खाना भी खाना है
जो मैंके वाले आएंगे
उन्हें भी कुछ दिखाना है
है पूरा साफ सुथरा घर
बहारा हो तो ऐसा हो।।३।।

-- मनोज श्रीवास्तव

उत्तर प्रदेश कै आल्हा

बड़े लड़ैया सैफइ वाले, जेकरी लाज रखइं करतार
लट्ठ बजइ हर दिन यूपी मा, निसरइ बल्लम अउर कटार
पाँच डकैती, पचपन हत्या, राहजनी केउ गिनइ न भाइ
लखनउवा कइ अइसन हालत, छोटकी गल्ती गिनी न जाइ
थर-थर थर-थर पुलिसा काँपइ, गजब बनल यूपी कइ सीन
डीएम, एसपी साँझ सकारे, बइठइं लइ ठर्रा-नमकीन
गुंडा सगरे मौज मनावइं, अधिकारी मिलि माल कमाइं
सिसकी भरि-भरि पब्लिक रोवइ, जियरा मा नहिं दर्द समाइ
कैराना कइ हालत देखा, काश्मीर पिछवा छुटि जाइ
जबसे टिपुवा सीएम बनिगा, जगह-जगह हिंदू कुटि जांइ
हथिया कइ बतिया मत पूछा, जब चाहा सुनिल्या फुफकार
जेकरा चाहइ पूँछि मरोड़इ, टिकस न बेचइ एक उधार
भइल चुनवना एमलेवाला, अइसन सबके फुटल कपार
हाथिया बैठि गइल धरती पे, मिसिर बेचारू भएन बिमार
बेटवा सइकिल लइके भागल, मुल्लाएम जी गिरेन उतान
फूटि-फूटि शिवपलवा रोवइ, टिपुवा लइगा मोर निशान
योगी, मोदी, मौर्या कूदइं, अमित शाह अस बनएन प्लान
छप्पर फारि के सीट थम्हउलेन, जइसे खुद आके भगवान
फूटि-फूटि आजम अस रोवइं, बहिगा कइयो कब्रिस्तान
निकुरा टेढ़ भइल टिपुवा के, डिम्पल भउजी गिरिन उतान
कमल खिलल यूपी मा फिनि से, बाकी सबइ निपोरेन खींस
अबकी तुष्टिकरण पे भइया, लागल हिंदू परिगै बीस
बलबलबलबल ललई रोवइं, सिसकी भरिभरि रामगोपाल
गंगा मइया जान बचावा, बिलखइं सगरे नटवरलाल
गुंडा रोवइं फफकि-फफकि के, फूटि-फूटि सब ठेकेदार
यशभारती मिले अब कइसे, पूछइं मक्खन के सरदार
जाति बिरादर अइसन रोवइ, जइसे छीनि लिहेन रोजगार
धारा फूटि पड़ल अँखियाँ से, भरिगै सगरे ताल-इनार
कहइं मुलायम अब का होई, तनिक बतावा हे शिवपाल
जइसन भी बा आपन बेटवा, तब काहें तू किह्या बवाल
कोप भवन मा माया गइलीं, हथिया बिलखइ सूँढ़ उठाइ
राह बतावा हे सतीशजी, नाहीं रजवा हँसे ठठाइ
कांग्रेस कइ लुटिया डूबल, चरणपुत्र गइलेन मुरझाइ
सोंढ़ि उचरि गइ बब्बरवा कइ, अमर सिंह रहि रहि मुसकाइं
हक्का बक्का छक्का सगरे, चोर उचक्का चलेन पराइ
भ्रष्टाचारी फरिका खोलइं, भागइं तस्कर पूँछि दबाइ
कहो गजोधर अब का होई, पूछइं अपने आजम खान
विजयी रथ योगी कइ रोका, आवा बनई नवा पलान
एक अकेलवा कुछु ना होई, मिलि के लड़बइ अबकी वार
यूपी मा वैसेइ जीतब हम, जइसे लालू लिहेन बिहार
गधा-लोमड़ी-खच्चर-भालू, जेतना रहिलेन रँगल सियार
कइसे पार लगे बबुआ हो, येहिपे लागेन करइ विचार
नइया डूबे हमरी-तोहरी, भूलि अतिथिगृह का सत्कार
बबुआ तोहके हम जितवाइब, तू हमरा कइह्या उद्धार
फूलपुरा मा डंका बाजल, गोरखपुर मा बजि गइ बीन
योगी साहेब योग भूलि गै, टेंशन मा आइल सरकार
रुपिया-पइसा काम न आइल, कट्टा, बल्लम अउर कटार
पंचर सइकिल दौड़इ लागल, सुनिके हथिया के ललकार
कमल सूखिगा दुनहू जगहा, योगी रोवइं छोड़ि भोकार
अमित शाह मनवां मा सोचइं, बबुआ ई हौ दांउ हमार
बुआ जितउलिन बबुआ जी के, योगी भइया गिरेन उतान
अब यूपी के तुहीं बचावा, हे नटवर नागर भगवान

-- सुरेश मिश्र

शान्तिदूत

(बाईसवीं कड़ी)

विजय कुमार सिंघल

इन शब्दों ने द्रोपदी को बहुत सांत्वना पहुंचायी। फिर उसे अपनी सासु मां की याद आ गयी। इसलिए बोली- 'ठीक है, भैया। आप वहां माताश्री से मिलेंगे तो उनके चरणों में मेरा प्रणाम निवेदन करना। इसी प्रकार चाचा विदुर और चाची से भी मेरा प्रणाम निवेदन करें।' द्रोपदी ने भीष्म, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, धृतराष्ट्र, गांधारी आदि के प्रति अपना प्रणाम निवेदन करने के लिए नहीं कहा। उसकी आवश्यकता भी नहीं थी।

'अवश्य। कृष्णा, तुम अपना ध्यान रखना और मेरे आने की प्रतीक्षा करना।' यह कहकर कृष्ण ने द्रोपदी से विदा ली और बाहर आ गये। कुछ समय पश्चात् भोजन करने के बाद ही वे सात्यकि के साथ रथ में बैठकर हस्तिनापुर के लिए प्रस्थान कर गये।

जैसे ही रथ उपप्लव्य नगर की सीमा से बाहर निकला, वैसे ही सात्यकि ने अपनी जिज्ञासा, जो बहुत समय से दबा रखी थी, प्रकट कर दी- 'भैया, अब मुझे पूरी बात बताओ। आप हस्तिनापुर क्यों जा रहे हैं?'

'मैं बता तो चुका हूँ कि शान्ति प्रस्ताव लेकर जा रहा हूँ ताकि युद्ध रुक सके।'

'लेकिन कौरवों ने पहले ही हमारा प्रस्ताव पूरी तरह ठुकरा दिया है। क्या आप कोई नया प्रस्ताव रखने वाले हैं?'

'नहीं, कोई नया प्रस्ताव तो अभी नहीं है मेरे पास। मैं केवल उनको समझाने के लिए जा रहा हूँ।'

'क्या आपके समझाने से वे समझ जायेंगे? जिन्होंने भगवान वेदव्यास की नहीं सुनी, पितामह भीष्म का परामर्श नहीं माना, वे आपकी बात क्या सुनेंगे?'

'मुझे ज्ञात है कि वे मेरी बात को नहीं मानेंगे, फिर भी मैं प्रयत्न करना चाहता हूँ।'

'क्यों?'

'क्योंकि मैं नहीं चाहता कि इतिहास यह कहे कि कृष्ण ने समर्थ होते हुए भी युद्ध रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।'

'हूँ। यह बात तो सही है, भैया। इतिहासकार आपको दोषी ठहरा सकते हैं।'

'इतना ही नहीं, वे मेरे ऊपर यह दोष भी लगा सकते हैं कि मैंने ही कौरवों और पांडवों को आपस में लड़वाकर मरवा दिया।'

'आपकी यह आशंका भी सच है। इतिहासकार तो श्रेष्ठ पावन चरित्रों को भी कलंकित करते हैं।'

'हाँ, इसीलिए मैं एक बार प्रयत्न करके देख लेना चाहता हूँ।'

'भैया,क्या आपको विश्वास है कि इसमें सफलता मिल जाएगी?' सात्यकि के स्वर में निराशा स्पष्ट थी।

'नहीं, मुझे सफलता की कोई आशा नहीं है। दुर्योधन की अभी तक की प्रवृत्तियों को देखते हुए उसे युद्ध से विरत करना लगभग असम्भव कार्य है। फिर भी मैं असफलता के लिए मानसिक रूप से तैयार हूँ और इसके लिए अपनी आलोचना सहने में भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।'

'भैया, मुझे एक भय है। क्या आपका अकेले कौरवों के क्षेत्र में जाना उचित है? क्या आपको अपनी सुरक्षा की कोई चिन्ता नहीं है? आपको पता ही है कि दुर्योधन कितना दुष्ट है। वह आपको शारीरिक हानि पहुँचाने और बन्दी बनाने की चेष्टा कर सकता है।'

'मुझे अपनी सुरक्षा की चिन्ता है, इसीलिए तो तुम्हें साथ लाया हूँ।'

'मैं... मैं इसमें क्या सहायता कर सकता हूँ?'

'तुम बहुत कुछ कर सकते हो। तुम यादवों की सेना के सेनापति हो।'

'लेकिन वह तो आपने दुर्योधन के मांगने पर कौरवों के पक्ष में लड़ने के लिए भेज दी है। मैं उसके साथ नहीं हूँ। मैं तो पांडवों के पक्ष में लड़ूंगा।'

'यह मुझे ज्ञात है। मैं राजसभा में अकेले ही जाऊंगा। वैसे तो मैं अपनी रक्षा करने में स्वयं पूर्ण समर्थ हूँ, लेकिन यदि दैवयोग से मैं मारा जाऊँ या पकड़ा भी जाऊँ, तो फिर हमारी सेना दुर्योधन के पक्ष में लड़ने के लिए बाध्य नहीं रहेगी। तब वह सहायता के वचन से पूर्णतः मुक्त होगी और उसके सेनापति तुम रहोगे। इसके पश्चात् तुम अपनी सेना का कोई भी उपयोग करने के लिए स्वतंत्र रहोगे।'

'हूँ। मैं आपकी बात कुछ-कुछ समझ रहा हूँ।'

'जिस समय मैं राजसभा में रहूँगा, तुम उसके मुख्य दरवाजे के बाहर ही रहना और भीतर चलने वाली घटनाओं पर आँख-कान लगाये रखना। यदि कोई खतरा दिखाई दे, तो मुझे संकेत कर देना।'

'भैया। मैं समझ गया मुझे क्या करना है।'

'तुम बुद्धिमान हो, सात्यकि। तुमने यह भी समझ लिया होगा कि मेरे बन्दी बनाये जाने पर या मारे जाने पर तुम्हें क्या करना है?'

'हाँ, भैया। मैंने अपना कर्तव्य भली भाँति समझ लिया है। आप निश्चिंत रहिए और निश्चिंत होकर ही कौरवों की राजसभा में जाना। कोई अनपेक्षित घटना होने पर मैं कौरवों को उचित पाठ पढ़ा दूंगा।' यह कहते हुए सात्यकि की आँखों में चमक आ गयी, जैसे कृष्ण ने यह कार्य उसके कंधों पर डालकर उसे सम्मान दिया हो।

कृष्ण ने संतोष की साँस ली। सात्यकि को साथ लाने का उनका निर्णय सही सिद्ध हुआ। सात्यकि योग्य था, वीर था और एक प्रकार से कृष्ण की पूजा करता था। वह अवश्य अपना कर्तव्य समर्पण भाव से करेगा। अब कृष्ण आश्वस्त होकर कौरवों की राजसभा में प्रवेश कर सकते थे।

इसके बाद कृष्ण और सात्यकि परस्पर हल्की-फुल्की चर्चा करते रहे। उनका रथ हस्तिनापुर की ओर बढ़ा जा रहा था और कुछ समय बाद ही हस्तिनापुर की सीमा में प्रवेश करने वाला था। कृष्ण मन ही मन में उन बातों पर विचार कर रहे थे, जो उनको कौरवों की राजसभा में जाकर कहनी थीं। इन बातों को उन्होंने अपने मन में कई बार दोहराया होगा।

हस्तिनापुर अब निकट ही था। शीघ्र ही वे हस्तिनापुर के मुख्य द्वार पर पहुँच जायेंगे, जहाँ उनका औपचारिक स्वागत किया जाएगा, क्योंकि उनके आने की पूर्व सूचना भेजी जा चुकी थी।

जब पांडवों का दूत यह समाचार लेकर हस्तिनापुर पहुँचा कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण पांडवों की ओर से समझौते के लिए प्रयास करने आ रहे हैं, तो कौरवों में कई प्रकार की प्रतिक्रियाएं हुईं। राजसभा में विदुर ने महाराज धृतराष्ट्र को सम्बोधित करते हुए जब यह समाचार दिया, तो मन ही मन धृतराष्ट्र कांप गये। सोचने लगे कि पता नहीं यह ग्वाला अब यहां क्या करने आ रहा है। इससे पहले जब भी कृष्ण हस्तिनापुर में आये थे, तो कौरवों को उनके कारण कुछ न कुछ हानि ही उठानी पड़ी थी।

पिछली बार वे राज्य के विभाजन के समय आये थे और उन्होंने धृतराष्ट्र को अपनी बातों के जाल में फंसाकर पांडवों के लिए राजकोष का एक भाग देने को बाध्य कर दिया था। इतना ही नहीं उन्होंने यह अनुमति भी प्राप्त कर ली थी कि यदि कोई नागरिक हस्तिनापुर से पांडवों के राज्य में जाना चाहे, तो उसे अपनी चल सम्पत्ति के साथ जाने दिया जाये अर्थात् उसे रोका न जाये। इसका परिणाम यह हुआ था कि बहुत से नागरिक, जो दुर्योधन और उसके भाइयों की उद्दंडता से त्रस्त थे, हस्तिनापुर छोड़कर इन्द्रप्रस्थ चले गये थे।

ये सब बातें धृतराष्ट्र भूले नहीं थे। फिर भी प्रकट रूप में वे बोले- 'यह तो अच्छी बात है, विदुर। वासुदेव के स्वागत का प्रबंध कीजिए। उनको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होना चाहिए।'

पितामह भीष्म ने भी यही कहा- 'भले ही कृष्ण पांडवों की ओर हैं, लेकिन वे हम सबके पूज्य हैं। हस्तिनापुर में उनका आना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। अवश्य ही वे कोई ऐसा प्रस्ताव लेकर आ रहे होंगे, जो हमें स्वीकार्य होगा और युद्ध के कारण होने वाला विनाश टल जाएगा। महाराज, मैं स्वयं उनका स्वागत करने नगरद्वार पर जाऊंगा।'

धृतराष्ट्र ने तत्काल इसकी स्वीकृति दे दी। लेकिन युवराज दुर्योधन इससे भड़क गये। बोले- 'महाराज, कृष्ण भले ही सम्पूर्ण संसार में क्यों न पूजे जाते हों, लेकिन वे इस समय केवल पांडवों के दूत के रूप में आ रहे हैं। उनको अधिक महत्व देना उचित नहीं। उनको दूत की तरह ही राजसभा में बुलाना चाहिए और पांडवों का जो संदेश वे लाये हों, उसे सुन लेना चाहिए। इससे अधिक कुछ करने की कोई आवश्यकता मैं नहीं समझता।'

(अगले अंक में जारी)

कांग्रेस का आत्ममुग्ध महाधिवेशन

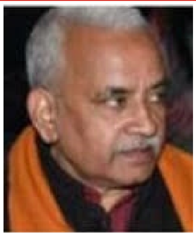

डॉ दिलीप अग्निहोत्री

कांग्रेस का महाधिवेशन पहली बार राहुल गांधी की अध्यक्षता में हुआ। उम्मीद थी कि पार्टी में नई सोच, नया उत्साह दिखाई देगा, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। ताजपोशी के अलावा कुछ भी नया नहीं था। वही पुरानी बात दोहराई गई। इसके मूल में नरेंद्र मोदी थे। मुकाबले की बात चली तो गठबन्धन पर पहुंच गए। इसके अलावा महाधिवेशन की कोई उपलब्धि नहीं रही। विपक्षी पार्टी के सम्मेलन में सत्ता पक्ष पर हमला बोलना स्वाभाविक है, किन्तु पूरा महाधिवेशन इसके हवाले कर देना अजीब था। वह मोदी प्रभाव से मुक्त नहीं हो सका।

महाधिवेशन के विश्लेषण से कई दिलचस्प तथ्य उभरते हैं। एक यह कि महाधिवेशन कांग्रेस का था, लेकिन इसमें माहौल मोदीमय बना दिया गया, जैसे कांग्रेस को अपनी नहीं नरेंद्र मोदी की चिंता है। दूसरा यह कि राहुल गांधी और उनकी पार्टी कांग्रेस पूरी तरह आत्ममुग्ध है। राहुल का विचार था कि उनकी पार्टी अपनी गलती मान लेती है। लेकिन हकीकत यह उजागर हुई कि वह गलती देखना ही नहीं चाहते। मनमोहन सिंह आज भी उन्हें सर्वाधिक पसन्द है। आर्थिक प्रस्ताव आज भी पी चिदंबरम प्रस्तुत करते है। जो अपने को पांडव घोषित कर दे, तो आत्मप्रशंसा के लिए क्या बचेगा।

राहुल को यह बताना चाहिए था कि कांग्रेस ने पांडवों जैसा कौन सा कार्य कर दिया है। वह अक्सर अज्ञातवास में चले जाते हैं, क्या इतने मात्र से कांग्रेस को पांडव कहा जा सकता है? फिर वह कहते हैं कि यह गांधी जी की कांग्रेस है। यदि ऐसा है तो गांधी जी की इच्छा पर अमल क्यों नहीं हुआ। आजादी के बाद गांधी जी ने कहा था कि कांग्रेस का कार्य समाप्त हुआ। अब इसको समाप्त कर देना चाहिए। तीसरा दिलचस्प तथ्य यह कि राहुल अपनी नाकामी पर भी बहुत खुश हैं। जब उन्होंने कहा कि भाजपा लगातार हार रही है, तब ऐसा लगा कि वह कांग्रेस का चित्रण कर रहे हैं, गलती से भाजपा का नाम ले दिया। फिर पता चला कि वह कुछ उपचुनाव से खुश हैं। जबकि वह जानते हैं कि उपचुनाव से आम चुनाव की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

राहुल गुजरात विधानसभा चुनाव की चर्चा भी उपलब्धि के रूप में करते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि कांग्रेस पांचवी बार भी यहां सरकार बनाने से नाकाम रही। जबकि उसने सभी जातिवादी नेताओं की चौखट पर दस्तक दी थी। गुजरात चुनाव में उनका इतने मंदिरों में जाना अप्रत्याशित था, इसलिए लोगों का विशेष ध्यान गया, क्योंकि उत्तर प्रदेश, बिहार और फिर त्रिपुरा, नागालैंड, मेघालय में उनका यह रूप दिखाई नहीं दिया। वैसे मंदिर जाना उनका अधिकार है, इस पर आपत्ति कोई नहीं कर सकता। लेकिन यह भी सच्चाई है कि उनकी यूपीए सरकार ने राम की कथा को काल्पनिक बताया था। यह बात सुप्रीम कोर्ट को दिए गए हलफनामे में कही गई थी। रामसेतु को तोड़ने पर उनकी सरकार कटिबद्ध थी, लेकिन ऐसा करने से उसे रोका गया। मोदी सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में कहा कि रामसेतु आस्था का विषय है, इसका संरक्षण होगा। राहुल विचारधारा की बात करते हैं। रामसेतु जैसे विषय विचारधारा निर्धारित करते हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर भी राहुल ने तंज कसा। भारत की कोई धरोहर दुनिया में लोकप्रिय हो, कांग्रेस को इस पर भी आपत्ति है।

राहुल ने कहा कि दलितों, आदिवासियों पर हमले हो रहे हैं। किसी भी जिम्मेदार नेता को ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। कानून व्यवस्था की कुछ अप्रिय घटनायें हो सकती हैं। लेकिन पूरे देश में हमले होने की बात करना आपत्तिजनक है। इससे दुनिया में भारत की छवि खराब होती है। राहुल को ऐसी निराधार बातों से बचना चाहिए। इनका उन्हें लाभ भी नहीं मिला। चार वर्षों से वह यही आरोप लगा रहे हैं, लेकिन तब भी दलितों और आदिवासियों ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया।

इसी प्रकार राहुल पिछले चार वर्षों से नरेंद्र मोदी के कपड़ो पर तंज कसते आ रहे हैं। एक बार तो विचार करते कि इस तरह के आरोपों से उन्हें या उनकी पार्टी को क्या लाभ मिल रहा है? क्या सूटबूट की बात से आमजन ने नरेंद्र मोदी को बेईमान मान लिया? क्या राहुल कुर्ते की फटी जेब के कारण गांधीवादी मान लिए गए थे? इसमें संदेह नहीं कि ललित मोदी, विजय माल्या, नीरव मोदी ने भारतीय व्यवस्था का लाभ उठाया। ललित मोदी और माल्या का पूरा आर्थिक साम्राज्य कब बना, राहुल को इस पर भी प्रकाश डालना चाहिए। नरेंद्र मोदी सरकार इनकी सम्पत्ति का जब्त कर रही है। कोई व्यक्ति फिर ऐसे चंपत न हो, इसके इंतजाम किए जा रहे हैं। राहुल को समाज की नब्ज पता होती तो ऐसी बातें न करते। इन भगोड़ों के बाबजूद आमजन को नरेंद्र मोदी की ईमानदारी और नेकनीयती पर विश्वास है। उन्होंने कई लाख करोड़ के लूप-होल बन्द किये हैं। यह धन कुछ लोगों की जेब में जा रहा था।

कांग्रेस ने यहां अपनी कमजोरी छिपाने का पूरा प्रयास किया। लगातार मिल रही पराजय पर आत्म-चिंतन नहीं हुआ। भाजपा के आत्मविश्वास पर निशाना लगाया गया। अपने डगमगाते आत्मविश्वास की चिंता नहीं थी। इसके इलाज के लिए गठबन्धन का ही भरोसा है। जब कोई पार्टी अपनी जमानत जब्त होने पर भी खुश होने लगे, तो मान लेना चाहिए कि उसने अकेले चलने का मंसूबा छोड़ दिया है। पूर्वोत्तर के तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव और उत्तर प्रदेश के उपचुनावों के फौरन बाद कांग्रेस का महाधिवेशन आयोजित हुआ था। इस प्रकार माहौल खुशनुमा नहीं था। फिर भी इनके प्रति बेपरवाही बनी रही। कांग्रेस को यह विश्वास था कि पूर्वोत्तर राज्यों में भाजपा के कदम नहीं पड़ेगी। ऐसे में वास्तविक राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा उसी के पास रहेगा। लेकिन भाजपा के कदम वहां सत्ता तक जा पहुंचे। कांग्रेस देखती रह गई। गोरखपुर और फूलपुर में कांग्रेस उम्मीदवारों की जमानत जब्त हो गई। इसकी कांग्रेस को कोई परेशानी नहीं। वह उस गठजोड़ की जीत पर जश्न मना रही है, जिसने कांग्रेस को अपने से दूर कर दिया था। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और सपा में गठबन्धन हुआ था। लेकिन स्थानीय निकाय चुनाव में सपा ने उसे पूछा तक नहीं। फिर उपचुनाव में सपा ने उम्मीदवार उतार दिए, बसपा ने समर्थन दिया। अंततः कांग्रेस को भी अपने उम्मीदवार उतारने पड़े। इनकी जमानत नहीं बची। कांग्रेस को इसकी समीक्षा करनी चाहिए थी। लेकिन वह सपा की जीत में अपनी कमजोरी भूल गई। यदि कांग्रेस न लड़ती, और बसपा की तरह सपा को समर्थन दे देती। लेकिन जब लड़ी थी, तब वह गैरों की जीत पर खुश कैसे हो सकती है? महाधिवेशन में देश के सबसे बड़े राज्य के प्रतिनिधियों को क्या सन्देश दिया गया, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

आज देश के करीब सात प्रतिशत इलाके में ही कांग्रेस का शासन बचा है। चार बड़े और दो छोटे राज्यों में उसकी सरकार है। महाधिवेशन में सबसे ज्यादा विचारविमर्श इसी पर होना चाहिए था। अपनी मजबूती के तरीके तलाशने चाहिए थे। लेकिन नरेंद्र मोदी, भाजपा पर हमला और गठबन्धन पर ही पूरा फोकस रहा। कांग्रेस यह समझने को तैयार नहीं कि गठबन्धन में मजबूती के हिसाब से ही महत्व मिलता है। कांग्रेस अपने जीवन की सबसे कमजोर स्थिति में है।

कांग्रेस पता नही किस खुशफहमी में है। सोनिया गांधी ने कहा कि जनता कांग्रेस के साथ है। महाधिवेशन में मनमोहन सिंह की तारीफ की गई। मतलब कांग्रेस यदि फिर सत्ता में आई तो उसी प्रकार का शासन देगी। राजनीतिक प्रस्ताव में समान विचारधारा वाले दलों से एक साथ आने की अपील की गई। भाजपा पर अहंकार का आरोप लगाया गया। कांग्रेस आमजन के विश्वास जीतने में विफल हो रही है। इसका दोष किसी अन्य को नहीं देना चाहिए।

आत्मविश्वास होना अनुचित नहीं होता। कांग्रेस को आत्मविश्वास और अहंकार का फर्क समझना चाहिए। अब वह ईमानदारी की दुहाई देगी तो, शायद लोग आसानी से विश्वास न करे। सरकार का विरोध करना उसका अधिकार है, लेकिन उसे अपनी सीमा भी समझनी होगी। यूपीए सरकार की छवि आज भी लोगों के जेहन में है। ऐसे में वर्तमान सरकारर पर आरोप भी संभल कर लगाने होंगे। पर ये महत्वपूर्ण बातें महाधिवेशन के एजेंडे में ही नहीं थी। स्पष्ट है कि कांग्रेस में अपनी शक्ति बढ़ाने और अकेले अधिक से अधिक सीटें जीतने की इच्छाशक्ति नहीं रही। राहुल अपनी पार्टी और देश को विश्वास दिलाने में नाकाम रहे। कांग्रेस की निराशा ऐसे महाधिवेशन से दूर नहीं हो सकती। ■

तमन्ना उसकी की है जो कभी हासिल नहीं होगा
कभी कश्ती की बाहों में कोई साहिल नहीं होगा
जला दूँ तुम कहो तो दिल की सारी ख्वाहिशें अपनी
मगर फिर भी हमारा दिल तेरे काबिल नहीं होगा
बहुत समझा लिया है हमने अपने दिल को ऐ हमदम
तेरी दुनिया में दोबारा ये दिल शामिल नहीं होगा
भरोसा कर लिया मैंने लगाया इल्जाम जो तुमने
सफ़ाई दें भी क्या अपनी गवाह हाजिर नहीं होगा
अब चलो हम हार जाते हैं हमें जब हारना ही है
दिल्लगी के खेल में तुमसे
बड़ा माहिर नहीं होगा
हां बड़े अहसान हैं हम
पर खुदाया शुक्रिया तेरा
दर्द ए उल्फत में भी 'जानिब'
दिल काफिर नहीं होगा

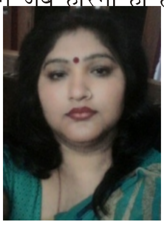

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

कभी तो दिन वो आएगा, सभी के अपने घर होंगे
मिलेंगी रोटियाँ सबको, न सपने दर-बदर होंगे
मिलेंगे बाग खेतों से, न होगी बीच में खाई
पलायन गाँव छोड़ेंगे, सदय पालक शहर होंगे
रखेंगे रास्ते पक्के, लगा सीने से गलियों को
बढ़ेंगे शुभ कदम जिस पथ, प्रगति के दर उधर होंगे
जुड़ेगी धूप छाया से, विभाजन की मिटा रेखा
चढ़ेंगे गाँव जब सीढ़ी, शहर भी हमसफर होंगे
हवाएँ एक सी बहतीं, वही जल अन्न है सबका
दिलों से दिल मिलेंगे,स्वाद भी साझे अगर होंगे
जलेंगे दीप घर घर में,रहेगा पर्व हर मौसम
पपीहे मोर गाएँगे, मधुर
कोकिल के स्वर होंगे
विफल हर चाल दुश्मन
की, करेंगे देशप्रेमी सब
हमारे दस्तखत जग के,
फलक पर पुरअसर होंगे

-- कल्पना रामानी

न लिख इश्क बदनाम हो जायेगा
हर गली में तेरा नाम हो जायेगा
करके परदा निकल शामो-सहर
वरना हर सूं नजारे जाम हो जायेगा
चांद का हसीन मुखड़ा देखकर
जीना सबका हराम हो जायेगा
कर रही गुफ्तगू जो जुल्फ है तेरी
उंगलियों का मचलना आम हो जायेगा
तीरे नजर हो गया चार जो मेरे सनम
आंख का दिल को पैगाम हो जायेगा
कह देना हाल दिल का शौक से मगर
टूटा कहीं जो कत्लेआम हो जायेगा
थामकर हाथ मत निकलना बाजार में
राज दिल का खुलेआम हो जायेगा
ठहर गये जो तुम पल दो पल के लिए
जुल्फ की छांव में कोहराम हो जायेगा

-- प्रीती श्रीवास्तव

झूठी शान अब हमसे दिखाई नहीं जाती
ये दुनियादारी की रस्में निभाई नहीं जातीं
मत डाल इतना बोझ इन कंधों पर खुदा
ये जिम्मेदारियां मुझसे उठाई नहीं जाती
झूठे चेहरे जज्बात लिए फिरते हैं लोग
दिल की बात हरेक से बताई नहीं जाती
समझना सीख कभी खामोशियां मेरी
हर बात लफ्जों में बताई नहीं जाती
यूँ तो गम में भी मुस्कुरा देते हैं मगर
इन आँखों से पीर छुपाई नहीं जाती
जख्म भी भर गए निशान भी मिट गए
फिर भी कुछ बातें भूलाई नहीं जातीं

-- नीतू शर्मा

चंचल नदिया जैसा ये मन, बह जाता भावों में ये मन
उलझन में है हर पल रहता, बुनता ताने बाने ये मन
कभी रेत के टीले चढ़ता, कभी बर्फ से खेले ये मन
कभी गगन को है छू जाता, कभी छुए है लहरें ये मन
स्वर्गलोक में कभी ले जाए, कभी नरक दिखलाए ये मन
नये विचारों से लड़ता है,
हलचल रोज मचाए ये मन
ये चाहे हो जाए कुछ भी
दिन में चाँद दिखाए ये मन
सारे जग से भले छिपा लो
सारा हाल बताये ये मन

-- डॉ सोनिया गुप्ता

विवाह बंधन तोड़ दूँ क्या?, अकेला तुझे छोड़ दूँ क्या?
हर महीने रख पगार हाथ, मायके ओर दौड़ दूँ क्या?
स्नेह-मोहब्बत का है रिश्ता, टकराहट में मोड़ दूँ क्या?
रमेश जी खूब कमाते हैं, तुझको भी यह होड़ दूँ क्या?
दिल बहुत दुखाता है मेरा, तेरे नाम के व्रत तोड़ दूँ क्या?
मान लो सर्वोपरी हूँ मैं ही, समाज में तुझे गोड़ दूँ क्या?
दर्ज करा दी है तेरी रिपोर्ट
सास-ननद को जोड़ दूँ क्या?
क्रोध में बेलन हाथ लगा,
तेरा सिर फोड़ दूँ क्या?
कमतर ना समझना सविता
कहीं-कभी भी ठौड़ दूँ क्या?

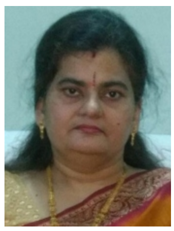

-- सविता मिश्रा

क्यूँ तबीअत कहीं ठहरती नहीं
कट तो जाती है पर गुजरती नहीं
जब कहे असलियत है सुनती नहीं
भटक सा ले यकीन जमती नहीं
जिंदगी तपन मानके जलती
पीर आखों से अब छलकती नहीं
तरस आता घिरे मुसीवत जो
मदद करके कसक ठहरती नहीं
सोचते ज्ञान पा इजाफा हो
रेखा आसानियों उमड़ती नहीं

-- रेखा मोहन

अनसुनी करता नहीं उसको सुनाकर देखना
हौसला रखकर खुदा को सच बताकर देखना
मुंतजिर तेरी निगाहें रूह भी बेचैन कुछ
है हसीं ये जिन्दगी तू दिल लगाकर देखना
साजिशें कब तक चलेंगी तीरगी की नूर पर
कोहरे के जिस्म को सूरज दिखाकर देखना
ऐ खिजा चुन ले जरा अब आशियाँ अपना कहीं
रूह में यादें बसी हैं
सर झुकाकर देखना
है यही फरियाद तुझसे
आबशारे जिन्दगी
खुश रहे आलम 'अधर'
खुद को मिटाकर देखना

-- शुभा शुक्ला मिश्रा 'अधर'

जिंदगी बन कर तेरी मेरी कहानी रह गई
आँखों में बस मेरी अश्कों की रवानी रह गई
रास न आया जिंदगी को मेरा आँचल फूलों का
काँटे ही दामन में इकलौती निशानी रह गई
हसरतों की कब्रगा होकर मेरा दिल रह गया
चाहतें सारी की सारी अब रुहानी रह गई
शोर सन्नाटों का सुनती ही रही मैं रात भर
साथ मेरे तन्हा रोती
रातरानी रह गई
मैं किसी की भी दुआओं
में न शामिल हो सकी
इश्क की राहों में तनहा
मैं दिवानी रह गई

-- प्रिया वच्छानी

कौन मुर्दा, कौन जिंदा है, यहां पर
कौन कितना नेक बंदा है, यहाँ पर
छीन ली इज्जत ये, किसने नारियों की
आजकल इंसा दरिंदा है, यहाँ पर
मन के काले, तन के उजले हैं सभी अब
मासूम जितना, उतना गंदा है, यहां पर
जिसमें मुनाफा सौ गुना, है मंजूर वो ही
हो गलत चाहे, वो धंधा है, यहां पर
लूटकर खाया है, जिसने जिंदगी भर
बस वो ही बेशर्म शर्मिंदा है, यहां पर
पाक जिनकी रूह, हो मन साफ जिसका
लोग ऐसे 'जय' चुनिंदा है, यहां पर

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

कविता

खामोशी का लिबास पहन
बहुत कुछ कहने का मन करता है कभी कभी
शब्दों में तुझे पिरो कर
गुनगुनाने का बहुत
मन करता है कभी कभी
तू बेखबर नहीं जानती हूँ मैं
बस यूँ ही तुझे आजमाने का
मन करता है कभी कभी

-- डॉली अग्रवाल

भूल स्वीकार

दीपिका माँ बन गई, इतना सुनते ही पूरे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गयी। परन्तु क्षणभर बाद खुशी मायुसी में बदल गयी, जब दीपिका के परिवार वालों को पता चला कि बच्चा तो किन्नर है।

पूरे परिवार ने दीपिका के उस नन्हें- मुन्ने को स्वीकार करने से मना कर दिया। खुद दीपिका के पति यानी उस नवशिशु के बाप ने भी यह कहते हुए मुँह फेर लिया कि 'हम इस कचडे का क्या करेंगे, इसे देदो किसी किन्नर संगठन को अथवा अनाथालय को, कोई पूछेगा तो कह देंगे- बच्चा मृत जन्मा था।' पर दीपिका तो अपने शिशु को अपनी मातृछाया में पालना चाहती है, उसे अपनी छाती का दूध पिलाना चाहती है, आखिर क्या कमी है। उसके सुघड़ से राजकुमार में, रूप-रंग से कौन बता सकता है कि वो... है? और दीपिका की आंखों से गंगा-जमुना की धारा फूट पड़ी।

यह देख दीपिका के पति का हृदय पिघलने की वजाय और अधिक पत्थर सा कडा हो गया। आगबबूला होते हुए बोला- 'तुझे अगर मेरे साथ मेरे घर में रहना है तो इस मनहूस बच्चे को अपने से अलग करना ही होगा।'

दीपिका रहम की भीख मांगते हुए गिड़गिड़ा उठी- 'पिछले वर्ष देवर आलोक का बाईक एक्सीडेंट हुआ था, तब डाक्टर ने क्या कहा था? कि आलोक कभी बाप नहीं बन सकते। फिर वो क्यों नहीं निकाले आपने घर से, उनमें और मेरे बेटे में क्या फर्क है?'

इतना सुनते ही दीपिका के पति, सास-ससुर, देवर आदि सब सन्न रह गये। तभी कमरे में डाक्टर साहब आ पहुंचे, उन्होंने समझ लिया कि झगड़ा किस बात पर हो रहा है। उन्होंने दीपिका के परिवार वालों को समझाया कि अब किन्नर समाज भी हमारी- तुम्हारी तरह ही सम्मान जनक जिंदगी जी सकते हैं, उन्हें भी वो हर अधिकार प्राप्त हैं जो हमें हैं और फिर ये हमारी ही तो देन हैं, हमारे ही समाज का एक हिस्सा हैं, फिर इन्हें किसी दूसरी दुनिया का प्राणी क्यों समझा जाये।

यह सुनकर दीपिका के परिवार वालों की आंखें खुल गईं। उन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर ली।

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार के विरोध में नेता जी का अनशन जारी था और भ्र्ष्टाचार से त्रस्त जनता तन-मन-धन से उनके साथ खड़ी थी। मन में नेता जी से मिलने की आस लिए और एक अदद फोटो खिचवाने की चाह से विवेक भी भीड़ का हिस्सा बन गया। पर विशाल भीड़ में उन तक पहुंचना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन था। उनके समर्थक उनको चारो ओर से घेरे खड़े थे। अब ऐसे में उनसे मिलना एक सपने जैसा ही था। तभी एक आइडिया दिमाग में कुलबुलाया। सरकते-सरकते विवेक उनके सुरक्षा गार्ड तक जा पहुंचा और द्वद्द का नोट उसके हाथो में सरकते हुए बोला ' अरे भैया, नेता जी के चरण स्पर्श करना चाहता हूँ। अब मना मत करना। नोट की गर्मी अपने हाथों में महसूस करते हुए सुरक्षा गार्ड भी मुस्कुरा दिया और कुछ ही पलों में, विवेक अपने बुद्धि

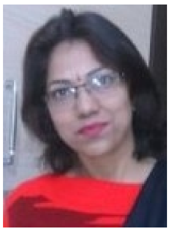

और विवेक के बल पर भ्रष्टाचार के विरोध में युद्ध लड़ रहे नेता जी के चरणों में अपना सिर रखे उनके साथ फोटो खिंचवा रहा था।

-- अंजु गुप्ता

सरकारी माल

किशनलाल अपने बेटे मगन लाल व बहू के साथ नया घर देखने के लिए आया हुआ था। घर दिखाने के लिए आये हुए दलाल ने घर की तारीफ की 'देखो! कितना बड़ा ह ल है। ये किचन भी काफी बड़ा है। और यह बैडरूम भी काफी बड़ा है। आपके लिए बहुत बढ़िया सौदा है ये। प्रकाश, पानी की कोई कमी नहीं है। अच्छे लोग और अच्छी सोसाइटी है।' कहने के बाद उसने मगन लाल और किशनलाल की तरफ उम्मीद भरी नजरों से देखा।

मगनलाल कुछ बोलता उसके पहले ही बहू बोल पड़ी 'ऐसा है भैया! यह एक ही बेडरूम है और मेरा बेटा पांच साल का हो गया है। हम नहीं चाहते कि वह भी वही सब भुगते जो हमने अपने बचपन में भुगते हैं। मुझे तो कोई और इससे बड़ा घर दिखाओ।'

और बहू की बातें सुनकर किशनलाल की आंखों के सामने आज से पच्चीस साल पहले का श्य घूम गया जब मिल की तरफ से मिली दस बाइ दस की कोठरी में ही वह अपनी पत्नी और उसके भाई के साथ ही मगनलाल के साथ भी बड़े सुख से रहता था। जगह की कभी कोई कमी महसूस नहीं हुई थी।

तब लोगों के घर छोटे होते थे, लेकिन दिल

कितना बड़ा होता था। खुद अभावों में रहकर भी दूसरों की मदद करके खुश होते थे और अब घर बड़े और दिल छोटे होते जा रहे हैं।

-- राजकुमार कांदु

कोचिंग की वैशाखियाँ

कुमार- 'राहुल कहाँ जा रहे हो?'

राहुल- 'कोचिंग!'

कुमार- 'क्यों? तुम तो बहुत नामी पब्लिक स्कूल में पढ़ रहे हो, फिर कोचिंग की क्या जरुरत है?'

राहुल- 'अपने आप पढ़ने में मन नहीं लगता और बिना कोचिंग के ट प रैंकिंग लाना असंभव है।'

कुमार- ऐसा नहीं है। मैं तो स्वाध्ययन करता हूँ और हमेशा टॉप दस में रहता हूँ। आज से दो-तीन दशक पहले कोचिंग के बिना भी तो विद्यार्थी बड़ी-बड़ी प्रवेश परीक्षाओं में चयनित होते थे। यह कैसी शिक्षा

पद्धति है कि विद्यार्थी कोचिंग की वैशाखियों के बिना एक कदम भी चल नहीं सकते।

राहुल अवाक हो उसका मुख देखता रह गया।

-- डॉ रमा द्विवेदी

मास्टर जी

सोमनाथ जी ने जैसे ही घर में कदम रखा, रमा ने लम्बी सामान की लिस्ट थमा दी। सोमनाथ जी समझ गए आज रमा गुस्से में है। रमा ने फिर पुराना राग अलापना शुरु कर दिया था- 'वो हमारे मौहल्ले के बिजनसमैन रवि ने अपने बेटे को पास कराने के बदले कितने रुपए ऑफर किए थे, किसी को पता भी नहीं चलना था। पर नहीं आपको तो अपने उसूल पसंद हैं। पर उसूलों और ईमानदारी से जरुरतें पूरी होती हैं ख्ववाहिशें नहीं!'

रमा चाहती थी कि सोमनाथ जी तनख्वाह के अलावा कोई और भी कमाई रखें, पर सोमनाथ जी अपने उसूलों के पक्के और ईमानदार थे। वो बहुत बार समझा चुके थे कि जो है उसी में जीना सीखो, पर रमा किसी भी तरह से आमदनी चाहती थी। वो यही कहती- 'क्यों आप ओवरटाईम करके स्कूल में बच्चों को पढ़ाते हैं उन्हें ट्यूशन के लिए घर बुलाईए ना!' सोमनाथ जी कहते- 'रमा वो गरीब बच्चे हैं कहाँ से लाएंगे ट्यूशन के पैसे??'

रमा के पास हर बात का जवाब रहता वो भी कह देती- 'हम तो जैसे बहुत अमीर हैं ना!'

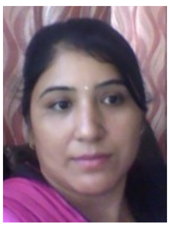

सोमनाथ जी बच्चों को उसूलों और इमानदारी से जीना सिखाना चाहते थे पर रमा उनकी हर ख्वाहिश पूरी करना चाहती थी कैसे भी।

-- कामनी गुप्ता

निर्णय

एक दिन की बात है। घृणा और प्रेम में बहस छिड़ गई। बड़ा कौन है तू या मैं।

घृणा ने अपना घृणित रूप दिखलाया। जमकर

कोसा। गालियां बकीं। प्रत्युत्तर में प्रेम मात्र मुस्कराता रहा। अन्ततः घृणा ने प्रेम का महत्व स्वीकार कर अपनी हार मान ली।

-- शशांक मिश्र भारती

मूर्तियों के देश में!

विनय कुमार तिवारी

सबेरे-सबेरे सोकर उठा तो तरह-तरह के उवाचों और हो-हल्लों के बीच मैंने अनुमान लगा लिया कि हो न हो लोकतंत्र पर एक बार फिर कोई खतरा मँडरा रहा है! वाह भाई वाह अपने देश में लोकतंत्र तो बड़ा पिद्दी निकला! एक खतरे से फारिग नहीं हो पाता कि दूसरा खतरा आ घेरता है। जबकि इसी देश में और भी तमाम चीजें हैं, लेकिन उन पर खतरा नहीं मँडराता। यह लोकतंत्र भी न! लोकतंत्र न होकर जैसे कोई जू-जू का बच्चा हो, जब देखो तब खतरे में पड़ा रहता है।

आँख मींचते बिस्तर छोड़ मैं उठ खड़ा हुआ और इन जैसे तमाम खतरों के बीच अलसुबह ही अपने वाले भगवान की मूर्ति का दर्शन करने निकल पड़ा। चलते-चलते क्षितिज पर उभर रहे सूरज पर निगाह गड़ी और मैंने 'जानि मधुर फल' वाले सौन्दर्यबोध के साथ उन लाल बाल-सूरज को लाल सलाम दिया। वैसे भी, इस सर्वहारा टाइप के देश में लोकतंत्र, लाल रंग के राजनीतिक सौन्दर्यबोध के बिना चल नहीं सकता। इधर सूरज महाशय भी लाल से पीले होते गए और उनके सौन्दर्यबोध कराने की क्षमता से मैं सहम गया। समय के साथ रंग बदलते सूरज मुझे बेहद लोकतांत्रिक टाइप के प्रतीत हुए। इस बीच मैंने देखा, चमकीले होते सूरज की देखरेख में चिड़ियों का एक झुंड भी मजदूरों की तरह धूप में पसीना बहाने उड़ चला, लेकिन इधर हम अभी सूरज से लाल सलामी पर ही अटके थे।

खैर, परिवर्तन को प्रकृति का नियम मानकर मैंने किसी छवि से चिपकना उचित नहीं समझा, क्योंकि अकसर मैंने प्राचीन होती मूर्तियों को म्यूजियम में ही पहुँचते देखा है! ऐसे ही उस दिन पुरानी मूर्तियों को कला-नमूने के तौर पर मैंने वहाँ संरक्षित देखा। लेकिन, प्रचीन मूर्ति-कला के इस प्रत्यक्षीकरण के साथ मैं मूर्ति-भंजक कला से भी परिचित हुआ तथा वहाँ संरक्षित सभी मूर्तियों को खंडित अवस्था में देखा। जैसे, किसी की नाक टूटी, तो किसी का सिरविहीन धड़, तो किसी की टांग टूटी मिली। मूर्तियों कर इस खंडन-कला को नायाब-नमूना मानने वाला ही था कि गाइडनुमा उस व्यक्ति के यह बताने पर कि सैकड़ों-हजारों वर्ष पहले मूर्ति-विरोधी शासकों की मूर्ति-भंजक कला का ये नमूना भर हैं! मैं उस मूर्ति-भंजन कला पर सिहर उठा। फिर विस्मित होते हुए सोचा, 'म्यूजियम में संरक्षित इन खंडित मूर्तियों को देखकर जन्नत से वे अपनी इस कला पर आज अवश्य ही गर्वित होंगे, क्योंकि, यहाँ आकर अब ये कलात्मक प्रदर्शन की चीज बन चुकी हैं।'

हलांकि, इन सब के बीच एक क्षण तो मूर्ति-भंजकों के प्रति कोफ्त हुई, लेकिन अगले ही पल भंजन-कला में क्रूरता देखने से मन ने इनकार कर दिया। बल्कि, मुझे ऐसे लोग लोकतंत्र के प्रेमी के साथ ही लोकतंत्र के सेनानी टाइप के लगे! और फिर म्यूजियम के उस परिसर में तलवार हाथ में लिए अकड़ से मूर्तिवत खड़ा वह राजा भी अपने समय का, भावी भारत के लोकतंत्र और यहाँ के सर्वहारा-वर्ग का प्रणेता जान पड़ा। वाकई ये राजा लोग, जिनके होते हुए यह खंडन-कला विकसित हुई होगी, बड़े जीवट वाले दूरदर्शी तथा बहादुर रहे होंगे। निश्चित ही, हजार या सैकड़ों साल पहले इनके ऐसे ही ठाट-बाट के सामने मूर्ति-भंजन किया गया होगा! इसी के साथ मूर्ति-भंजकों और इस अकड़ूँ राजा के प्रति मन श्रद्धावनत होकर सोचने लगा, 'अहो यदि ये उस समय न होते, तो हम आज एक महान लोकतांत्रिक देश बनने की ओर अग्रसर ही न हुए होते। बताइए न जाने ऐसी कितनी मूर्तियों के बनने और टूटने के बाद यह देश आज के जैसा बना होगा!' इस प्रकार अपने देश का लोकतंत्र, मूर्ति-गढ़क मजदूर से लेकर मूर्ति-पूजक से होते हुए मूर्ति-भंजक तक की एक महान-यात्रा है, जिसके हर एक पड़ाव पर एक महान देश-प्रेमी मिलेगा।

वैसे भी, इस देश में मूर्ति-विसर्जन का कल्चर भी है, पूजा हुई नहीं कि मूर्ति विसर्जित! वाकई, इस कल्चर में बाजे-गाजे के साथ भीड़ के सामने बकायदा उत्सव-भाव से विसर्जन कार्य सम्पन्न किया जाता है और विसर्जित मूर्ति अपने एकाकीपन के साथ क्षरित होते हुए घुलती रहती हैं। मतलब आगे फिर मूर्तियों के गढ़ने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है, इससे मजदूरों को काम मिलना एवं व्यापारियों का बिजनेस बढ़ना हो जाता है। इधर लोकतंत्र के नुमाइंदों के बीच, मजदूरों का भल्लोभाई बनने के चक्कर में उनकी गढ़ी मूर्तियों पर फूलमाला चढ़ाने की प्रतिस्पर्धा भी विकसित हो जाती है, जिससे फूलों की खेती को बढ़ावा मिलने के साथ किसानों की पौ-बारह होती है। शायद यही कारण है कि इस देश का सर्वहारा वर्ग गद-गद होकर छेनी-हथौड़ा लिए झोला उठाए कहीं भी, किसी की भी मूर्ति गढ़ने के लिए तैयार बैठा रहता है। इस कल्चर में, हमारे देश के परम लोकतांत्रिक देश बनने और आर्थिक आत्मनिर्भरता का भरपूर स्कोप छिपा है।

इन स्थितियों के बरक्स मूर्तियों का बनना या बिगड़ना, तोड़ना या तुड़वाना या इनका विसर्जन करना ही लोकतंत्र है, इसी कल्चर में पले-बढ़े हम लोकतांत्रिक देश बने। आखिर, जिन देशों में मूर्तियों का कल्चर नहीं होता वे निरे अलोकतांत्रिक टाइप के होते हैं और लोकतंत्र वहाँ पानी भरता होगा या फिर खूबसूरत म्यूजियम वाले विकसित टाइप के देश होंगे। अपना देश तो विकासशील लोकतांत्रिक देश है, तमाम उवाचनुमा हो-हल्ला यहाँ लोकतंत्र के पुष्ट होने का प्रमाण है। कुछ भी हो, अपने देश के लोकतंत्र का लबादा भी यहाँ की मूर्ति-कल्चर जैसा ही है।

इधर जिसे कोई भगवान मान ले उसकी परिक्रमा करना भी जरूरी होता है। अन्यथा उसे अपने भगवान की कृपादृष्टि हासिल नहीं होती। एक बात है, आराध्य की कृपादृष्टि पाने के लिए उनके परिक्रमा पथ पर अपने तर्क और बुद्धि को पीछे छोड़कर चलना होता है, शायद तभी अपने अच्छे दिनों की कामना करनी चाहिए। मैं भी अपने भगवान के परिक्रमा-पथ पर था। उस पथ पर सुध-बुध खोए श्रद्धालुओं के बीच भिक्षार्जन हेतु तरह-तरह के दिव्यांग टाइप के लोग कतार में बैठे मिले, जिनकी ओर मैंने एक फूटी कौड़ी भी नहीं फेंकी।

इसी बीच एक पीत वस्त्रधारी मुस्टंडा मेरे लिए अच्छे दिनों के अपने आशीर्वचनों के साथ मेरे पीछे हो लिया। मैंने अपने अच्छे दिनों की कामना में दिव्यांगों का खयाल किए बिना उसे दस रुपए का एक नोट पकड़ा दिया और दक्षिणा पाते ही वह मुस्टंडा आशीर्वचनों के साथ वापस हो लिया। इधर मैं भी परिक्रमा पूरी कर चुका था। वाकई! जिस देश में मूर्तियाँ होती हैं, वहाँ ऐसे ही परिक्रमा-पथ होते हैं। ■

लघुकथा

चिड़िया

शाम गये दलान में हरसिंगार के पेड़ के पास ही उछल कूद रही थी चिड़िया। प्यार से सब उसे चिड़िया ही बुलाते थे। बहुत चुलबुली थी ना। हरसिंगार के पेड़ के पास अम्मा तख्त पर बैठे-बैठे ही कई बार टोक चुकीं थीं 'रे लड़की कुछ काम कर लिया कर, नही तो अपनी माँ का हाथ ही बँटा लिया कर', लेकिन दस साल की बेपरवाह चिड़िया पर असर कहाँ होता ।

'अरे वाह अम्मा खूब महक रहा है हरसिंगार इस साल!' दिन में शहर से आया था अजीत और अपने गाँव के दोस्तों से मिलकर लौटा, तो भतीजी पर एक नजर डालते हुए छत पर चला गया।

पौ फटते ही हरसिंगार के फूल कुम्हलाये पड़े थे और चिड़िया गुमसुम हो चुकी थी।

-- शिप्रा खरे

गज़ल

सौगात इश्क की मिली दर्द पहली बार है
खबर सारे जहाँ को हुई वाशिंदा बीमार है
गुमसुम रहा करता है महफिलों में वो
खुश रहने को तन्हाईयों की दरकार है
जान बूझकर हारा दिल की बाजी वो
दिलबर पर उसकी एक जीत उधार है
गलत नहीं हुआ कभी फैसला उसका
इस बार वो इंसानियत का शिकार है
कन्हैया हो गया वो सबसे करता इश्क
बस यही खूबसूरत मुकद्दस लूटमार है
उम्र हो गयी तेरी मोहब्बत कर ले मणि
खुदा की रहमत का तू भी तलबगार है

-- मनीष मिश्रा मणि

समय देकर तो देखो/शायद सब कुछ ठीक हो जाए
पुराने-कडवे रिश्तों में/शायद थोड़ी मिठास भर आए
दुश्मनी की मशाल/शायद थोड़ी कम हो जाए
भटके हुए को उसका मार्ग मिल जाए
घर में फैली सीलन का
शायद कोई ईलाज मिल जाए
दो पीढियों के बीच का छेद
शायद पुरी तरह भर जाए
जिन्होंने किया छल तुमसे
शायद उन्हें गलती मालूम हो जाए
तुमनें भी अगर की होगी गलतियां
तो शायद तुम्हें उनका पछतावा हो जाए
और तुम्हारे जीवन आनंद से भर जाए
समय देकर तो देखो/शायद सब कुछ ठीक हो जाए

-- श्रीयांश गुप्ता

कितने मासूम से सवाल रहे, बवाल बिना बात होते रहे
ख्याल अपने में सब थे रहे, खुदी को खोते राह चलते रहे
जिद में जो भी थे रहे जलते रहे, हदों को मिटाते मिलाते रहे
सरहदों आफताब तकते रहे, कितने मायूस से मिजाज रहे
मुकाम आसपास सबके रहे, जुकाम दूरियाँ कराते रहे
दुकान अपनी वे चलाते रहे, शकून उससे कभी पाते रहे
चिलमनों उलझे कभी मन सुलझे, चिर-मना हो के कभी वे विहरे
रहे सिहरे भी कभी मन दुहरे,
कभी चेहरों पे रहे थे पहरे
आया अहसास तो कयास गए,
प्रयास पनपे पराकाष्ठा गहे
'मधु' अपने से लगे मोह गए,
हो के मर्मज्ञ अज्ञ अपने लगे

-- गोपाल बघेल 'मधु'

बदलनी पड़ेगी अब मुझको आदत मेरी
बदल जाऊँ बस इतनी है इबादत मेरी
देता सबको है वो परबर दिगार लेकिन
इम्तेहान कितने लेगा शिकायत मेरी
एक तरफा प्यार की सजा ये मिली हमें
ठुकरा के मुझे चली गई मुहब्बत मेरी
कोई नही चोट पहुँचा पाये कभी मुझको
जब तक न हो उसको खुद इजाजत मेरी
बल से बुद्धि हो बेहतर है सदा 'कोयल'
देखना है बड़ी बुद्धि है या है ताकत मेरी

-- दीपिका गुप्ता 'कोयल'

जिम्मेदारियों का जरा भी अहसास नहीं है
लगता है उसे खुद पर विश्वास नहीं है
कुछ ऐसे दिन दिखाए हैं जमाने ने उसको
कि खुशियों की अब उसे तलाश नहीं है
सारी की सारी उम्मीदें टूट गई उसकी
कुछ पाने की उसे अब आस नहीं है
घिर गया है अंधेरों से जीवन उसका
मैंने देखा है ज्ञान का प्रकाश नहीं है
ड्रामेबाज है बहुत बड़ा वो 'नन्हाकवि'
मुझे लगता है कि वो उदास नहीं है

-- शिवेश अग्रवाल 'नन्हाकवि'

हर आंदोलन का यही अंजाम होता है
आखिर में बेबस आम आदमी रोता है
दुकानें, रेहड़ी सिर्फ उसकी जलती हैं
सोचो ठेकेदार और नेता क्या खोता है
क्या मिलता है इमारतों को जलाकर
आम आदमी ही उनका बोझ ढ़ोता है
भूल जाते हो मुश्किल से बसें मिलती हैं
अपनी ही पूंजी को फिर भी डुबोता है
जिम्मेदारी कोई नहीं लेता नुकसान की
दूसरों पर डालकर अपने पाप धोता है
सोचो हर बार मार किस पर पड़ती है
क्यों आकर बहकावे में भ्रम में सोता है
हर बार चेताती है 'सुलक्षणा' तुमको,
क्यों पछतावे के सागर में लगाता गोता है

-- डॉ सुलक्षणा अहलावत

भूखे की भूख का भी तू ख्याल कर
सिर्फ खुद को ही मत मालामाल कर
मालपुओं की पार्टियाँ खूब उड़ाता है
दिलको रख कभी जमीं पर उतारकर
जिंदगी से ज्ञान कुछ ले ले तू अज्ञानी
गरीबों की जिन्दगी में भी कुछ बहार कर
अत्याचारों से परे भी दुनिया कुछ और है
देख तू भी तो शोषक का चोला उतार कर
जी रहे हैं कुपोषण में कितने मासूम पता है
कभी देख उनका भी जीवन तू जरा जा कर
ठंड में सिकुड़ते लोग हैं कैसे रातें गुजारते
तू पाता है सुख रजाइयों में रातें गुजार कर
उनके दुखों को जरा तू भी झेलकर देख
दुआएँ देंगे तुझे वो दिल से मनुहार कर

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

इतना मत खुद पे ताप सहो, तुम एक जलावन बन जाओ
इतने न विभीषण पालो तुम, के खुद ही रावण बन जाओ
है अलग अलग छत्रप जितने, सबकी धरती क्यों हड़प रहे
है राज दिया तुम राम बनो, मत आप युँ वामन बन जाओ
हे पतित पावनी गंगा माँ, कब तक यूँ पाप हरोगी तुम
इतना भी मैला मत धोना,
तुम आप कृपण ही बन जाओ
जो भी आता है राहों में
सबको गलबहियाँ मत डालो
न धूल सभी की साफ करो,
तुम स्वयं न झाड़न बन जाओ

-- मनोज डागा 'मोजू'

कुंडली

नैतिक मूल्यों को रखा, बड़े गर्व से ताक
खूब उड़ाई धूल में, संस्कारों की खाक
संस्कारों की खाक, धूसरित करती माया
चकाचौंध पुरजोर आधुनिकता की छाया
'अनहद' दौड़ें दौड़ करें भी काम अनैतिक
रखें ताक पर मूल्य, पूर्वजों के सब नैतिक

-- अनहद गुंजन

दुनिया में जिधर देखो हजारों रास्ते दिखते
मंजिल जिनसे मिल जाए वो रास्ते नहीं मिलते
किसको गैर कह दें हम किसको मान लें अपना
मिलते हाथ सबसे हैं दिल से दिल नहीं मिलते
करी थी प्यार की बातें कभी हमने भी फूलों से
शिकायत सबको उनसे है कि उनके लब नहीं हिलते
जमाने की हकीकत को समझ जाओ तो अच्छा है
ख्वाबों में भी टूटे दिल
सीने पर नहीं सिलते
कहने को तो ख्वाबों में
हम उनके साथ रहते हैं
मुश्किल अपनी ये है के
हकीकत में नहीं मिलते

-- मदन मोहन सक्सेना

रंग न डालो मुझ पर ऐसे, बलिहारी मैं जाऊँ
भीगे तन मन और वसन सब खड़ी-खड़ी शरमाऊं
लाल हरा पीला गुलाल है, सजा हुआ जो मुख पर
पिचकारी ने भिगो दिया है, लाल लाल हो जाऊं
तुम में कोई और छिपा है, आज शरारत ऐसी
अँखियों से मैं नाप तौल कर, तुम्हरे भाव लगाऊँ
नख से शिख तक हुई रँगीली, मन कोरा कोरा है
तुम्हरे अंग लगूं जब प्रियवर, भीगी भीगी जाऊँ
इधर उधर ना नजरें फेंको, मेरा दिल जलता है
मेरी और निहारो केवल,
पल पल लुटती जाऊँ
रंग लुभावन तभी लगे हैं,
जब तुमने रंग डाला
तेरे नाम की मैं जोगनिया
खुद में रमती जाऊँ

-- भगवती प्रसाद व्यास 'नीरद'

रुके रुके से कदम मुड़ गये बढ़ा न सके
तमाम कोशिशें की पर उन्हें भुला न सके
कभी तो मुड़ के जरा देख लो मेरी जानिब
तुम्हारी सिम्त से अबतक पलक गिरा न सके
कहाँ कहाँ से है चटका ये दिल मेरा देखो
सिये हैं जख्म कई पर तुम्हें दिखा न सके
हुआ जहान में रुसवा तू खामखा ऐ दिल
तल्खियों से कभी फिर निजात पा न सके
उठीं हैं कितनी दफा रात ये अकेले में
सुना के लोरी कभी इसको हम सुला न सके
मुझे वो भूल गया फिर भी याद आता है
नक्श उसका कोई दिल
से मिटा न सके
वजूद बिखरा पड़ा था
यहीं कहीं 'गुंजन'
समेट खुद न सके औ
तुम्हें बुला न सके

-- चारु अग्रवाल 'गुंजन'

कर्मफल

डॉ दिवाकर दत्त त्रिपाठी

रानी के सिर से माँ बाप का साया किशोरी होने से पहले ही उठ गया था। रानी जब अट्ठारह की हुई, तो भाइयों ने उसके लिए वर ढूँढना शुरू कर दिया। भाइयों को ज्यादा दौड़धूप नहीं करनी पड़ी, बगल के ही गाँव में एक लड़का मिल गया, जिसके पास संपत्ति के नाम पे एक कच्चा घर था और परिवार के नाम पर एक बूढ़ी माँ। मुंबई की किसी मिल में काम करता था, महीने में तीन-चार हजार कमा लेता था। शादी की तिथि तारीख पक्की हो गई।

रानी ने बचपन से अब तक सिर्फ दुःख ही देखे थे। माँ का मुँह तक नहीं देखा, कभी-कभी भाभियाँ ताने भी देती थी 'करमजली कहीं की! पैदा होते ही माँ को खा गई।' बेचारी रानी चुपचाप सब सुन लेती थी। कभी-कभी हृदय की वेदना आँखों तक आ जाती थी, तो चुपचाप उसे अपने दुपट्टे के कोने में दफना देती थी। उसे अब भी याद है, बरसात के दिनों में घर की कच्ची दीवार एकाएक गिर गयी थी और बापू उसी के नीचे दब गये थे। बेचारी रानी कई दिनों तक अपनी किस्मत को कोस-कोस के रोती रही थी।

उसकी जिंदगी में पहली बार खुशी का कोई मौका आया था। वह रोज खुशियों के ताने-बाने बुनती थी। मगर उसे यह भी याद आता था कि अगर आज अम्मा-बापू जिंदा होते, तो कितना अच्छा होता, और उसकी आँखे गीली हो जाती थीं। धीरे-धीरे वह दिन भी आ गया जब द्वार पे बारात आयी। रानी को सिर से पैरों तक सजाया गया, वह बिल्कुल राजकुमारी लग रही थी।

सुबह रानी की विदाई हुई। वह अपने भाइयों के गले लगके बहुत रोई। उसे आज अपना घर छोड़के जाने का दुःख भी था।

रानी का पति बहुत ही अच्छा आदमी था, वह रानी का पूरा ख्याल रखता था। वह जब आता था, मुंबई से रानी के लिए कपड़े लाता था, क्रीम पावडर लाता था और साथ में लाता था ढेर सारा स्नेह। वह रानी को बहुत प्यार करता था। उसने रानी से यह भी वादा किया था कि 'रानी ! मैं बहुत ही जल्दी इस कच्चे घर को पक्का करवा दूँगा। ताकि बरसातों में तुझे दिक्कत न हो।'

मगर नियति को कुछ और ही मंजूर था, इस बार जब रानी का पति आया तो वह सूख के काँटा हो गया था। उसे बार-बार खाँसी आ रही थी, तमाम इलाज करवाया मगर कोई फायदा नहीं हुआ।

वह शायद उसकी आखिरी रात थी, रानी उसी के पास बैठी थी। उसने मरियल सी आवाज में कहा- 'रानी मुझे माफ करना, मैं तुझसे बहुत प्यार करता हूँ, मगर मैंने तेरे साथ दगा किया। पिछले साल कुछ यारों के बहकावे में आकर मैं कोठे पे गया, शायद भगवान मुझे उसी की सजा दे रहे हैं।' रानी ने रोते हुए कहा कि 'तुम ठीक हो जाओ बस, मुझे कोई गिला नहीं।' मगर उस बेचारी की अश्रुधारा उसके पति के सूख रहे जीवनरूपी पौधे को हरा न कर सकी। भोर की पहली किरण के साथ उसके पति का शरीर ठंडा हो गया। बेचारी रानी पर दुखो का पहाड़ टूट गया, वह फिर अनाथ हो गई। वह पथराई आँखों से देखती रही और लोग उसके पति की लाश को जलाने के लिए लेकर चले गये, वैसे ही जैसे उसके बापू को लेकर चले गये थे।

वक्त ने रानी के अच्छे दिन छीन लिए। उसने भी दृढ़ निश्चय कर लिया कि मदद के लिए अपनी फूटी किस्मत लेकर किसी रिश्तेदार के यहाँ नहीं जायेगी। कभी-कभी तो भूखा सोना पड़ा, मगर किसी के आगे हाथ न फैलाया और न ही कोई रिश्तेदार मदद को आगे आया। हाँ, रानी के पड़ोस में ही रहने वाले दिलेराम को जब यह बात पता चली तो उसने ग्राम प्रधान से इस बात का जिक्र किया। ग्राम प्रधान एक निहायत लंपट आदमी था। उसने जब यह जाना कि रानी, विधवा है, अकेली है, जवान है तो उस कामी ने रानी का अंत्योदय कार्ड बनवा दिया। अब रानी को भूखा नहीं सोना पड़ता था।

समय चलता गया, बरसात आई। रानी का कच्चा घर कमजोर साबित हो रहा था। इस बार उसने दिलेराम से कहा कि अगर प्रधान जी इंदिरा आवास दे देते, तो अगले साल की बरसात तक शायद घर पर छत हो जाये। दिलेराम ने फिर प्रधान से रानी की यह बात कही, प्रधान ने कहा कि उसे मेरे पास भेज दीजिएगा। इस बार प्रधान के दिमाग में एक घिनौनी योजना चल रही थी।

जब रानी प्रधान से मिलने आई तो प्रधान ने उसे बड़े प्यार से बैठाया और उसकी बात सुनी और कहा ठीक है, आई हो तो चाय पी लो और फिर चली जाना। तुम्हारा काम हो जायेगा।

थोड़ी देर बाद प्रधान का एक आदमी चाय लेकर आया रानी को चाय पीने के बाद अजीब सा लगने लगा, उसके बाद उसकी आंखें मुँदने लगीं। जब उसकी आँखें खुलीं, तो वह एक बंद कमरे में निर्वस्त्र पड़ी थी। और थोड़ी दूर पर प्रधान बैठा मुस्कुरा रहा था। रानी ने कहा- 'आपने ठीक नहीं किया, एक गरीब विधवा की मजबूरी का फायदा उठाया है, मैं पुलिस में जाऊँगी, पूरे गाँव को बताऊँगी।' प्रधान ने कहा कि 'अगर तुमने मुँह खोला तो मैं तुम्हारी नंगी तस्वीरों को सार्वजनिक कर दूँगा, जो मेरे मोबाइल में हैं। जाओ मेरा काम हो गया, तुम्हारा भी हो जायेगा।'

उस पूरी रात रानी अपनी मजबूरी और दुर्भाग्य पर रोती रही। अगली दोपहर दिलेराम ने बताया कि तुम्हारा नाम आवास वाली सूची में डाल दिया गया है।

एक दिन प्रधान जी खुद रानी के यहाँ आये और अपना मोबाइल दिखाते हुए बोले कि थोड़ा मेरी तरफ आ जाना। बेचारी लोकलज्जा के भय से फिर गई, इस बार वह होश में थी, और उसको नोचने के लिए तैयार था नवनियुक्त ग्राम विकास अधिकारी, इस तरह रानी का शरीर, अब प्रधान बड़े लोगों को और अपने खास लोगों को तोहफे में सौंपता था। प्रधान के लिए रानी मुहरा हो गई थी, किसी को भी खुश करने का साधन। रानी ने जब भी विरोध किया, प्रधान ने मोबाइल के फोटो दिखाकर धमकाया और रानी हर बार हार गई।

सब कुछ ज्यों का त्यों चल रहा था, मगर इधर कुछ दिनों से रानी को लगातार बुखार हो रहा था। प्रधान ने गाँव के डाक्टरों से रानी की दवा करवाई, मगर सिर्फ इसलिए क्योंकि रानी के बीमार होने से उसके शरीर पर असर आता और उस नीच प्रधान के लिए रानी का शरीर बहुत काम की चीज थी। मगर रानी के स्वास्थ्य में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ। गाँव के सारे झोलाझाप डाक्टरों की दवा फेल हो गई। अंततोगत्वा प्रधान जी ने रानी को शहर के हास्पिटल में भेजा।

जब डाक्टरों को पता चला कि मरीज का पति किसी अनजान बीमारी से मरा था और मुंबई में रहता था, तो उन्हें शक हुआ और उन्होंने एचआईवी की जाँच लिख दी। जाँच पाजिटिव थी। रानी को जब पता चला कि उसे एड्स हुआ है, तो वह दुखी भी हुई और खुश भी। दुखी इसलिए हुई कि वह निरपराध थी और खुश इसलिए हुई क्योंकि उसे पता था कि जिस-जिसने उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर उसका शारीरिक शोषण किया है, यह बीमारी उन सबको भी हो गई होगी।

जब यह बात प्रधान को पता चली तो उन्हें साँप सूँघ गया, उन्होंने तत्काल अपने पापकर्म के सारे साथियों को बुलाकर पूरी बात बताई। यह बात पता चलते ही सबकी आँखो के आगे अंधेरा छाने लगा। अब सबसे बड़ी समस्या थी कि जाँच करवाने कैसे जाया जाये। हर जगह जान पहचान के लोग हैं, लोग सोचेंगे कि हम लोग एचआईवी की जाँच क्यों करवा रहें हैं?

अंत में इस समस्या का हल यह निकला कि किसी जान पहचान वाले आदमीं को बुलाकर खून के नमूने निकालकर शहर को भेजा जाये। एक झोलाछाप ने सबके सैंपल निकाले और शहर भेजे। और जब शहर से रिपोर्ट आई तो सबके चेहरे उतर गये। दूर तक नैराश्य और भय का एक मृत सागर नजर आ रहा था, क्योंकि सबको एचआईवी का संक्रमण था।

सभी सोच सोच के मरे जा रहे थे, मगर अब क्या? अब तो पाप उघर गया था। पाप छिपाये नहीं छिपता। धीरे-धीरे पूरे गाँव में दीवारों से कानों तक और कानों से कानाफूसी बनकर हर किसी को यह खबर लग गई कि प्रधान और उनके गुर्गे रानी का शारीरिक शोषण करते थे। जिससे उन्हें वही बीमारी लग गई, जो रानी का मर्द मुंबई से लाया था। मतलब रानी को एचआईवी का संक्रमण उसके पति से हुआ और उसके पति को यह बीमारी मुंबई की किसी रेड एरिया से मिली।

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

भयावह त्रासदी हैं बिहार और बंगाल के दंगे

मृत्युंजय दीक्षित

रामनवमी के दिन से ही बिहार और बंगाल हिंसा की आग में जल रहे हैं, लेकिन देश के सांसद संसद ठप करने और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपनी खिसकती जमीन को बचाने के लिए दिल्ली में डेरा डालकर मोदी विरोधी मोर्चा बनाने में जुटी हुई हैं। लगातार तीन दिनों तक बंगाल हिंसा की आग में जलता रहा। केंद्र सरकार ने ममता बनर्जी से रिपोर्ट तलब कर ली, तो उन्होंने टका सा जवाब दे दिया कि केंद्र ने बिहार सरकार से रिपोर्ट क्यों नहीं मांगी? ममता बनर्जी को आसनसोल से पलायन कर रहे हजारों हिंदुओं की चिंता नहीं है लेकिन उन्हें एअर इंडिया की हिस्सेदारी को बेचे जाने की बड़ी चिंता है? ममता को बंगाल की नहीं, यूपी में बुआ-बबुआ गठबंधन बना रहे इसकी बड़ी चिंता है।

यह बात पूरी तरह से सत्य है कि पूर्वोत्तर में भाजपा को मिली ऐतिहासिक जीत के बाद सभी विरोधी दल बुरी तरह से बौरा गये हैं। उनमें से ममता बनर्जी एक है। बिहार और बंगाल में हिंसा के दौर में सेकुलर मीडिया की रिर्पोटिंग भी काफी खतरनाक तरीके से की गयी। हिंसा की तह में जाये बगैर सभी सेकुलर मीडिया में केवल बीजेपी और संघ को गाली देने की होड़ प्रारम्भ हो गयी। बिहार में तो तेजस्वी यादव ने जमकर अपनी भड़ास निकाली। उन्होंने यहां तक बयान दिया कि देश को साम्प्रदायिकता से बचाने के लिए लालू ने अडवाणी जी को गिरफ्तार किया, लेकिन नीतिश कुमार भाजपा नेताओं को बचा रहे हैं। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने भी अपने बचाव में बयानबाजी की, जिसका असर यह हुआ कि बिहार में अभी भी आग लगी हुई है। आज बिहार के कम से कम चार जिले हिंसा की आग में जल रहे हैं। दोनों राज्यों में हिंसा का पैटर्न लगभग एक जैसा है।

दंगों के कारण सबसे बुरा हाल बंगाल का हो रहा है। बंगाल के पुरूलिया, मुर्शिदाबाद, वर्धमान वेस्ट और रानीगंज सहित बंगाल के तमाम हिस्सों में हिंसा की घटनायें हुईं, जिनमें सबसे भवायह मंजर आसनसोल में देखा जा रहा है। वहां के स्थानीय नागरिकों का कहना है कि रामनवमी के दिन शांतिपूर्वक तरीके से निकल रहे जुलूस में बज रहे डीजे और उसके मार्ग को लेकर समुदाय विशेष के लोगों ने अपना विरोध दर्ज कराया। कहा-सुनी के बाद मामला शांत हो रहा था, लेकिन तभी लोगों ने पत्थरबाजी शुरू कर दी और फिर तोड़फोड़, हिंसा आगजनी और अफवाहों का दौर शुरू हो गया। पूरा आसनसोल शहर तीन दिनों तक हिंसा की आग में जलता रहा। लोंगो के घरों और दुकानों तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों को लगातंर तीन दिनों तक लूटा गया। महिलाओं के साथ जमकर छेड़छाड़ तथा रेप की घटनाओं के समाचार भी प्राप्त हुए हैं।

बंगाल के हालात निश्चय ही बेहद डरावने हैं। वहां का स्थानीय प्रशासन पूरी तरह नपुंसक बन गया है। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि हम लोग अपने आप को बचाने के लिए पुलिस अधिकारियों तथा अन्य सहायता नंबरों पर फोन करते रहे, लेकिन किसी के कांनों में जूं तक नहीं रेंगी। जब केंद्रीय मंत्री बाबुल सुप्रियो आसनसोल के हालातों का जायजा लेने के लिए वहां पर जा रहे थे, तब पुलिस के साथ तीखी झड़प हुई, जिसके बाद उन पर ही एफआईआर दर्ज हो गयी। जवाब में उन्हें भी एफआईआर करानी पड़ी है। बंगाल में हजारों हिंदुओं ने पलायन कर दिया है तथा वहां के रेलवे स्टेशन ऐसे हिन्दुओं से भरे पड़े हैं।

खबर तो यह भी है कि राज्यपाल केशरीनाथ त्रिपाठी को रामनवमी के जुलूस के दौरान हुई हिंसा में घायल डीसीपी से मिलने नहीं दिया गया और उन्हें आसनसोल भी नहीं जाने दिया गया। आसनसोल की घटना एक भयावह त्रासदी है। आज देश की संसद व कोर्ट के पास ऐसी घटनाओं पर बहस के लिए समय नहीं है। पूरा बंगाल आज हिंसा की आग में जल रहा है। बंगाल में इंटरनेट की सेवा बंद कर दी गयी है। लेकिन मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगाल को अपनी जागीर समझ लिया है तथा वह केवल एक विशेष समुदाय को लक्ष्य बनाकर अपनी राजनैतिक रोटियां सेंक रही हैं। ममता को पता है कि अब बंगाल में आने वाले चुनावों में उनका भाजपा से ही सीधा मुकाबला होने जा रहा है। इसलिए बंगाल के दंगे एक सुनियोजित साजिश के तहत हो रहे हैं।

अब समय आ गया है कि केन्द्र बंगाल सरकार के खिलाफ कड़ा कदम उठाये और वहां राष्ट्रपति शासन लगाकर दंगों की गहन जांच कराकर हिंसा प्रभावित लोगों को उचित मुआवजा व सहायता प्रदान करवाये, नहीं तो ममता के गुंडे बंगाल में हिंदुओं का जीना हराम कर देंगे। बंगाल की हिंसा में इस बात की जांच करना बेहद जरूरी है कि इस हिंसा की आड़ में बेरोजगार वामपंथी व अन्य कांग्रेसी उपद्रवियों का हाथ तो नहीं है। साथ ही इस बात की जांच बेहद आवश्यक है कि इन दंगों के पीछे बांग्लादेशी घुसपैठियों तथा रोहिंग्या मुसलमानों की भूमिका तो नहीं है। बंगाल में रामनवमी के दौरान भड़की हिंसा में ममता बनर्जी, भाजपा व संघ को जमकर गाली तो दे रहे हैं, लेकिन यह नहीं पता कर रहे कि कहीं इस हिंसा के पीछे कहीं ममता की तृणमूल कांग्रेस के नेताओं का तो हाथ नहीं है।

रामनवमी से पहले ही ममता बनर्जी ने अपनी बयानबाजी के कारण राज्य में तनाव के हालात पैदा कर दिये थे। भाजपा के जुलूसों से आगे निकलने के लिए ममता ने अपने कार्यकर्ताओं को जुलूस निकालने के आदेश दिये, लेकिन राज्य के अधिकांश हिस्सों में भाजपा सहित तमाम हिंदू संगठनों को हथियारों के साथ जुलूस निकालने की अनुमति नहीं दी जा रही थी। मीडिया रिपोर्टों में रामनवमी के पहले से राज्य में तनाव व हिंसा का अंदेशा बताया जा रहा था। लेकिन राज्य के तनाव को दरकिनार करते हुए ममता को तो दिल्ली में देश का पीएम बनने के सपने आ रहे थे। बंगाल जल रहा था और वह पर्यटन करने के लिए दिल्ली आ गयी। वह बंगाल की जमीन को बचा नहीं पा रही है और पीएम मोदी व बीजेपी को घेरने का प्लान बना रही हैं। ममता को पीएम मोदी व केंद्र की नीतियां पसंद नहीं हैं। राज्य में शांति व स्थिरता के लिए वह केंद्र की सहायता नहीं चाहती। बंगाल का प्रशासन राज्यपाल को अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करने दे रहा है।

यही मुस्लिम तुष्टीकरण में संलिप्त ममता बनर्जी का तीसरे मोर्चे का राजनैतिक प्लान है। वह हिंदुओं के खून की होली खेल रही हैं। बंगाल में आज हिंदू समुदाय थर-थर कांप रहा है। पता नहीं कब कोई मुस्लिम गुंडा उनकी बहन-बेटी को उठाकर ले जाये। केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर का यह कहना सही है कि जिस समय बंगाल जल रहा था, उस समय ममता बनर्जी अपने राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए दिल्ली में है। यह साबित हो गया है कि बंगाल में तृणमूल कांग्रेस से जुड़े लोग न केवल भगवान राम के निर्दोष भक्तों को निशाना बना रहे हैं, अपितु उन्होंने पुलिसकर्मियों पर भी हमला किया। आज जब देश में सबका साथ सबका विकास की बात चल रही है, तब तथाकथित सेकुलर राजनैतिक दलों के शासित राज्यों में बेहद सुनियोजित साजिशें करके दंगे कराये जा रहे हैं तथा देश के वातावरण को गलत तरीके से मोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

दंगे बिहार और बंगाल में हो रहे हैं तथा मुस्लिम तुष्टीकरण में लगे नेता केवल भाजपा और मोदी को ही दोष दे रहे हैं। पहले बंगाल में वामपंथियों की दादागीरी चलती थी, वे अब केरल में अपनी अंतिम सांसें गिन रहे हैं। वहीं दूसरी ओर अब बंगाल में ममता की दादीगीरी का दौर समापन की ओर है। ■

ग़ज़ल

अहसान अपने वोह उँगलियों पे गिनाते हैं
जिनके जुल्मों का हम पर कोई हिसाब नहीं
अपने हक के लिए लड़ते हैं सरे आम वोह लोग
अपने फर्ज से जिनको कोई सरोकार नहीं
कभी भी आ टपकते हैं अपनी फुर्सत में
हमारी मशरूफियत का जिनको कोई ख्याल नहीं
अपनी तारीफ में वोह कर देते हैं सुबह से शाम
किसी को उठता देखने का जिन्हें गुमान नहीं
मचा के रखते हैं वोह शोर अपनी शोहरत का
किसी भी मजलिस में जिनका कोई मुकाम नहीं
गैरों की क्या बात करें हम इस जमाने में
आज तो अपनों को भी अपने पे ऐतबार नहीं
अपनी खुदगर्जी की राह में चल रहा हैं इंसान
किसी भी दोस्त के आने का अब इंतजार नहीं

-- जय प्रकाश भाटिया

भारत में ध्वस्त लाल सलाम

मुकेश सिंह

भाजपा ने एक बार फिर से चमत्कार कर दिया। देश में फिर मोदी लहर की धमक सुनाई दी है। इस बार यह मोदी मैजिक पूर्वोत्तर भारत में दिखा है, जहाँ भाजपा ने कांग्रेस और वामदलों का सूपड़ा साफ करके खुद को सत्ता पर काबिज कर लिया है। पूर्वोत्तर भारत में ऐसा पहली बार हो रहा है, जब यहां के अधिकतर राज्यों में कांग्रेस सत्ता से बेदखल हो गई है और पूरे पूर्वोत्तर भारत में भाजपा ने अपनी सरकार बना ली है। भारत के चुनावी इतिहास में यह भी पहली बार हो रहा है जब माकपानीत वाम दल सत्ता से बाहर हो गए हैं और देशभर से इनका सूपड़ा ही साफ हो गया है।

ऐसे में त्रिपुरा की यह हार वामपंथी विचारधारा के लिए एक गंभीर खतरा है, क्योंकि पिछले चंद वर्षों से देशभर में वामपंथ और राष्ट्रवाद की विचारधारा के बीच एक अघोषित अन्तर्द्वंद चल रहा है। ऐसे समय में त्रिपुरा का यह नतीजा वामपंथियों को निराश करनेवाला है, क्योंकि वामपंथ का गढ़ कहे जानेवाले त्रिपुरा के नागरिकों ने वामपंथी विचारधारा को सिरे से खारिज कर दिया है और भाजपा समर्थित राष्ट्रवाद की विचारधारा पर अपना विश्वास जताया है। और यह हार वामपंथियों के लिए बड़ी हार है।

दरअसल ६० सीटों वाले त्रिपुरा विधानसभा के चुनाव में भाजपा ने ५० सीटों पर चुनाव लड़ा और बाकी के नौ सीट उसने अपने सहयोगी इंडीजेनस पीपुल्स फ्रंट ऑफ त्रिपुरा के लिए छोड़ दी थीं। इस चुनाव में भाजपा गठबंधन ने ४३ सीटें जीतकर पहली बार प्रदेश में सरकार बनाने का करिश्मा कर दिखाया। राज्य में सत्तारूढ़ मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में वाम मोर्चा बुरी तरह से हार गया। भारतीय जनता पार्टी की ४३ सीटों के मुकाबले वाममोर्चा को सिर्फ १६ सीटें ही मिल पाई हैं, जो वामपंथ के लिए एक बड़ी शिकस्त है। चूंकि त्रिपुरा में माकपा की अगुवाई वाला वाम मोर्चा ही अब तक की सबसे बड़ी पार्टी थी और वह पिछले २५ सालों से सत्ता पर काबिज थी।

इसके बीच वाममोर्चा के लिए जो सबसे अहम रहे २० सालों से त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक सरकार, जिन्हें देश का सबसे इमानदार मुख्यमंत्री होने का गौरव प्राप्त है। और यही कारण है कि विगत वर्षों में विपक्ष को कोई ऐसा नेता नहीं मिल सका जो माणिक सरकार से मुकाबला कर सके। पर विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने मोदी के सहारे यह अभूतपूर्व कारनामा कर दिखाया और मोदी बनाम माणिक के नारों से त्रिपुरा पर फतह हासिल कर ली।

वैसे वामदलों की हार और भाजपा की इस जीत का एक मुख्य कारण चुनाव में मतदाताओं का बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना भी है। दरअसल इस बार त्रिपुरा के विधानसभा चुनाव में रेकॉर्ड ६२ फीसदी से अधिक मतदान हुआ। इस चुनाव प्रदेश के लगभग ६२ः मतदाताओं ने चुनावी इतिहास में अधिकतम मतदान का एक रिकॉर्ड बना दिया है, जिसका परिणाम प्रदेश में एक बड़े बदलाव के रूप में सामने आया है।

माणिक सरकार की विदाई देश की सत्ता पर काबिज पार्टियों के लिए भी एक कड़ा संदेश है। उन्हें अब समझना होगा कि देश की जनता पहले के मुकाबले अधिक जागरूक हो गई है और ऐसे में उन्हें जनता के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करना होगा। अब देश की नीतियां जनता के हितों को ध्यान में रखकर बनानी होंगी। जनता को नजरंदाज कर कोई भी पार्टी अब सत्ता में बनी नहीं रह सकती, फिर चाहे उनके पास कितने भी स्टार चेहरे क्यों न हो, क्योंकि देश की जनता अब पार्टी, नेता और सड़ी-गली विचारधाराओं से ऊपर उठकर जनता को महत्व देनेवालों को चुन रही है। २०१४ के आम चुनाव के बाद से देशभर में चल रही सत्ता परिवर्तन की लहर उसी की एक झलक है।

हम उदाहरण के तौर पर त्रिपुरा की बात कह सकते हैं। वैसे त्रिपुरा उत्तरपूर्वी राज्यों में अपेक्षाकृत शांत माना जाने वाला राज्य रहा है। लेकिन पिछले दिनों राज्य में अकस्मात बढ़ी आपराधिक गतिविधियों ने यहां की जनता में कानून व्यवस्था के खिलाफ काफी रोष पैदा कर दिया था। इसके अलावा प्रदेश में उद्योगों का भी भारी अभाव है। यहां की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। पर ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बेरोजगार युवाओं की एक बड़ी फौज है जो बेरोजगारी से मुक्ति चाहती है। साथ ही लोग अब धर्म और जातपात की राजनीति से भी निजात पाना चाहते हैं और यही वजह है कि इसबार पूर्वोत्तर की जनता ने सत्ता परिवर्तन को तरजीह दी और व्यवस्था परिवर्तन के लिये वोट किया। जिसके फलस्वरूप पूर्वोत्तर भारत कांग्रेस के साथ-साथ वामपंथ से भी मुक्त हो गया।

यहां एक बात ध्यान देने योग्य है कि भारत की जनता ने मोदी के कांग्रेसमुक्त भारत के आह्वान को काफी संजीदगी से लिया है। अब त्रिपुरा की जनता ने भी मोदी के वामपंथ मुक्त त्रिपुरा के आह्वान को अपना पूर्ण समर्थन दिया। इसका मुख्य कारण है उक्त पार्टियों का एक लंबे अर्से तक देश और प्रदेश की सत्ता में बने रहना और विशाल जनादेश के बावजूद जनता के हितों को नजरंदाज करना। एक लंबे समय से देश एवं प्रदेश की सत्ता पर काबिज उक्त पार्टियों ने सदैव ही जनता को नजरंदाज करके व्यक्ति तथा पार्टी को ही प्रमुखता दी है। यह इसी का नतीजा है कि जनता ने मोदी पर अपना भरोसा जताते हुए इन पार्टियों को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। पार्टी कार्यकर्ताओं की मनमानी और गुंडागर्दी को उनका जन्मसिद्ध अधिकार समझना आज दोनों ही पार्टियों को महंगा पड़ा है। फिर पूर्वोत्तर राज्यों के इस चुनाव परिणाम को प्रधानमंत्री मोदी के 'न्यू इंडिया' के विजन में जनता की भागीदारी के तौर पर भी देखा जा सकता है। ■

इलेक्ट्रानिक के महान किरदार

संजय वर्मा 'दृष्टि'

वर्तमान में फेसबुक, वाट्सअप ने टॉकीज, टीवी, वीडियो गेम्स, रेडियो आदि को काफी पीछे छोड़ दिया है। कहने का मतलब है कि दिन और रात इसमें ही लगे रहते हैं। यदि घर पर मेहमान आते वो आपसे कुछ कह रहे। मगर लोगों का ध्यान बस फेसबुक, वाट्सअप पर जवाब देने में और उनकी समझाइश में ही बीत जाता है। मेहमान भी रूखेपन से व्यवहार में जल्द उठने की सोचते हैं। घर के काम तो पिछड़ ही रहे। फेसबुक, वाट्सअप का चस्का ऐसा कि यदि रोजाना सुबह शाम आपने राम राम या गुड मोर्निंग नहीं की तो नाराजगी।

इसका भ्रम हर एक को ऐसा महसूस होता कि मैं ही ज्यादा होशियार हूँ। अत्यधिक ज्ञान हो जाने का भ्रम चाहे वो फेक खबर हो, उसका प्रचार। भले ही खाना समय पर ना खाएं किन्तु खबर एक दूसरे को पहुंचाना परम कर्तव्य है। पड़ोसी और रिश्तेदार अनजाने हो जाते, मगर दूर के ढोल सुहावने लगते। फेसबुक और वाट्सअप की दुनिया में मालवी कहावत कुछ यूं है- 'साँप घर साँप पावणा, बस जीप (जुबान) की लपालपी' यानी फेसबुक, वाट्सअप आभासी दुनिया की सैर करवाते। यदि भूल से फेसबुक, वाट्सअप वाले मित्र सामने खड़ा या पास बैठा हो, पहचान करने में परिचय देना ही होता है, क्योंकि इनके दोस्तो की संख्या हजारो में पहुँच जाती है। आजकल असली घी काफी महंगा है और शुद्ध नहीं मिलता। जनरल नॉलेज भी आउट ऑफ कोर्स। बेरोजगार रोजगार की तलाश में पहले ही परेशान। सब अब क्या करें? ये वर्तमान में सब पर हावी है। मनोरंजन के साधनों को पीछे छोड़ दिया है।

जिसके जितने ज्यादा मित्र वो उतना ही सीनियर। कई तो इस कला में इतने माहिर हो गए कि रचनाएं चुराकर अपने कवि होने की पुष्टि तक कर लेते हैं। बेचारा ओरिजनल कवि अन्य लोगों को चोरी घटना का दुखड़ा फेसबुक, वाट्सअप पर बाँटता रहता है। मगर कुछ नहीं होता। कई तो फिल्म के स्टार के फोटो लगाते ताकि लोग समझे कि फिल्म स्टार में अपनी पहचान है। मगर वो निकलता कुछ और ही है। इनकी पहचान के लिए आधार कार्ड को जो भूमिका निभाना चाहिए वो भी रास्ता भूल जाता है। पहले के जमाने मे हाथों में जप की

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

माया महाठगिनी हम जानी

शरद सुनेरी

सब कहते हैं-मंहगाई बढ़ गई। कितना सरासर झूठ कहते हैं। इन झूठों के मारे यदि कल शाम तक धरती रसातल में मिले, तो आप अचरज न कीजिएगा। अब देखिए न! कल तक जो सिगरेट का कश तीन रुपये में मारा जाता था, वहीं पर हमारे यार चार-चार रुपये की सिगरेट के गोल-गोल छल्ले बेफिक्री से हवा में उड़ा रहे हैं। पान और गुटकों की पीक भी अब जमीन पर पड़ने के बाद ज्यादा चमकदार दिखाई देती है। पिछले बजट में उनकी शान में सदा की तरह वृद्धि हुई। शक्कर के बढ़े दाम भी चाय में शक्कर की मात्रा कम न करवाने की हिम्मत न करवा सके। उधर पत्नी ने एक चम्मच शक्कर कम क्या डाली, इधर साहब का पारा तुरंत सातवें आसमान पर जा पहुँचा।

कहने का तात्पर्य- शक्कर हो या तेल, फल हो या सब्जी, डीजल हो या पेट्रोल, शराब हो या परफ्यूम, या फिर दवा हो या दारू, सब वैसे ही प्रयोग में लाए जा रहे हैं। जैसे सब पहले मायाजाल में भ्रमित हैं। याद कीजिए प्रधानमंत्री ने वादा किया था- 'हम गरीबी हटा देंगे।' उनका संकल्प पूरा हुआ। हट गयी गरीबी। सब इस लायक हो गए कि अधिक कीमतें देकर उन्हीं चीजों को खरीदने लगे। अब बताइए यदि आप गरीब होते तो बढ़ी हुई कीमतें देकर मंहगी चीजें खरीदते? कभी नहीं। इधर सरकार ने आपकी औकात बढ़ा दी। और आप हैं कि मंहगाई बढ़ गई का नारा लगा रहे हैं।

मेरे पिता शिक्षक थे, निरीह जंतु। भारत में शिक्षक की यही परिभाषा बुद्धिजीवियों, लक्ष्मीपतियों और बलपतियों ने रखी है। वे पचास वर्ष पूर्व बड़ी ही शान से सीना ठोंककर बताते थे कि वेतन के रूप में उन्हें साठ रुपये मिलते थे। हम भारतीयों में यही बड़ी बुरी आदत है। अपनी गरीबी का ढिंढोरा भी बड़ी शान से पीटते हैं। सुदामा तक इस मोह से न बच सका। पहुँच गया चीथड़े लटकाकर द्वारिका कि हम द्वारिका-धीश के मित्र हैं, गरीब हैं तो क्या? वो तो कृष्ण थे, तो मामला संभाल लिया और जैसे-तैसे खींचकर ले गए राजमहल के भीतर। वरना आजकल के लक्ष्मीपति होते तो बच्चू को छठी का दूध याद आ जाता।

मेरी सरकार बड़ी रहमदिल है, जो साल में दो बार धनवान होने का अवसर मुझे प्रदान करती है। बल्कि यदि यह कहूँ तो ज्यादा ठीक होगा कि साल में दो बार धनवान बना देती है। मैं इतना कृतध्न नहीं हूँ कि सरे बाजार उसे कोसूँ! मेरे माध्यम से समाज के अन्य लोग भी धनवान होते जाते हैं। पर वे सरकार का उपकार नहीं मानते। अहसान फरामोश कहीं के! कहते हैं- मंहगाई बढ़ गई। अभी उस दिन रिक्शेवाले ने मुझसे उसी स्थान पर ले जाने के दस रुपये अधिक लिए। कारण पूछा तो वही राष्ट्रीय-घोष दोहराया- मंहगाई बढ़ गयी है साहब! मैंने बड़े भारी मन से अपनी जेब हल्की की। उसे दस रुपये अधिक देकर धनवान कर दिया।

सच कहता हूँ मंहगाई मुझे बड़ी अच्छी लगती है। जो मुझे धनवान बनाती रहती है। इस मंहगाई ने शिक्षकों तक का सम्मान बढ़ा दिया साहब। लड़की का बाप अब शिक्षकों से अपनी बेटी का ब्याह करने से नहीं घबराता। बड़ी शान से बताता है- पहले जमाने के राष्ट्रपति के बराबर तनख्वाह मिलती है हमारे दामाद को।

बड़ी विडंबना है, सब एक ही राग आलाप रहे हैं। एक ने कही दूजे ने मानी, गुरूजी कहे दोनों ज्ञानी। यहाँ सब ज्ञानी बने हुए हैं। सरकार की उदारता नहीं देख रहा है कोई। यदि सरकार न होती तो हम धनवान न होते। भिखारियों को अब एक रुपया देने में लाज आती है। मैं तो देने के पहले आसपास देख लेता हूँ कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा। ऊँचे खानदान के भिखारी तो पाँच रुपये से कम नहीं लेते।

सब कहते हैं- मंहगाई आसमान छू रही है। मैंने आसमान की ओर आँखें फाड़कर देखा। मुझे वहाँ मंहगाई न दिखी। काले-काले पानीदार बादल दिखे। मैंने कहा न यह झूठों की दुनिया है। मैं समझ गया। मंहगाई याने काले-काले बादल। अब मुसीबत देखिए न। ये बादल बरस गये तो सारी धरती गीली-गीली हो गई। अब मंहगाई आसमान से धरती पर उतरी पर कीचड़ बनकर। ऊपर आसमान में मंहगाई के काले-काले बादल और इधर नीचे धरती पर मंहगाई का गंदा-गंदा कीचड़। ऊपर बादल, नीचे कीचड़। मुझे कबीरबाबा याद आ रहे हैं। वे भी यही कहते थे- माया महा ठगिनी हम जानी। ■

कंगाली में आटा गीला

अंशु प्रधान

वे भाग गए हैं। वे अपनी लुंगी-धोती सब समेट के विदेश भाग गए हैं। आप कहते हैं कि अपनी पाई-पाई वसूल कर करेंगे। वे कहते हैं अपनी धोती भी न देंगे जाओ, जो करना है सो कर लो। ये दीगर बात है कि कर्जेदारों की इज्जत बड़ी होती है शानो-शौकत की नींव पर खड़े इज्जत के हवामहल इतने शानदार होते हैं कि मामूली लोगों की आंखें उन्हें देखने के लिए ऊपर नहीं उठतीं। इसलिए वे निरापद ईंट-पत्थर के मामूली इज्जत के मकान बनाया करते हैं। उनकी सारी जिंदगी बस इसी एक तिकड़म बैठाने में गुजरती है कि जिन्दगी की गाड़ी को आखिर कैसे दौड़ाया जाए। वे जौहरी नहीं होते इसलिए जीवन की परख में भी कच्चे साबित होते हैं।

वे हीरे के जौहरी हैं इसलिए बखूब अपना हुनर जानते और पहचानते हैं। उनकी कसौटी पर कभी हीरा तो कभी आदमी चढ़ता है। वे कर्ज भी वहां से खाते हैं जिसे चुकाना न पड़े। वे उधार लेकर घी पीना जानते हैं और आप मेहनत करके भी सूखी रोटी गटकना। वे शान से जीना जानते हैं और आप केवल शान दिखाकर ही खुश हो लेते हैं। वे लाखों के कपड़े पहनते हैं पर उफ्फ नहीं करते, आप छोटे मोटे ब्रांड की जबतक पब्लिसिटी खुद को हीरो बनाते हुए न कर लें, तब तक चैन से नहीं बैठते।

एकाएक देश में कर्जदार होना सभ्यता का प्रतीक बना है। हीरा व्यापारी, शराब व्यापारी, कपड़ा व्यापारी, अनाज व्यापारी, पेट्रोल व्यापारी, जो जितना बड़ा कर्जदार है वो उतना ही सभ्यता का प्रतीक है। ऐसे कर्जदार लोग इज्जत के पर्याय हैं। अब वे दिन गए जब आप एक कटोरी चीनी भी उधार मांगने में शर्माते थे। अब जमाना है उधार पर चलिए, बेधड़क चलिए, एक आत्मविश्वास के साथ चलिए। ये आत्म विश्वास आपके चेहरे पर दिखना चाहिए कि दुनिया की रईसी पर सिर्फ और सिर्फ आपका हक है, बाकी किसी का नहीं।

वे लोग मूर्ख होते हैं जो उधार की एक-एक पाई ब्याज समेत चुकाने में अपनी एड़ियां घिसा करते हैं। अपने रसूख के छेदों को गंभीरता का ताना-बाना बनाकर ढका करते हैं। वे ऐसी-ऐसी मुद्राएं बनाकर समाज में उतरते हैं कि आप उनके सामने हाथ मिलाना तो दूर भरपूर मुस्करा भी नहीं सकते, नहीं तो वे नाराज हो जाएंगे। अपनी सच्चाई वे ही जानते हैं और उसके सुराखों को छुपाने के तरीके भी वे ही जानते हैं और आप उनके बाह्य आडम्बर से भ्रमित होना जानते हैं।

छोटे और बड़े आदमी के अपने-अपने कई तरह के आडम्बर होते हैं। छोटा आदमी अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए गंभीर होने का नाटक करता है, जबकि रसूख वाला आदमी अपनी कमजोरी छुपाने के लिए बेइंतहा जिंदादिली से खुद को समाज में स्थापित करता है। वाचाल दोनों ही हैं, अभिनय दोनों ही करते हैं। मगर कोल्हू के बैल की सी जिन्दगी गुजारना छोटे आदमी की नियति है। इसलिए हीरे के जौहरी बनिये, और दूसरों को बनाइये अपनी छद्म सहनशीलता दिखाकर। तभी आप जिन्दगी के मजे लूट सकते हैं। ■

(पृष्ठ ८ का शेष) **बौद्ध-मुस्लिम टकराव**

देते रहते हैं। यह मुस्लिम कट्टरवादियों की बुनियादी रणनीति है जिस पर चलकर मुस्लिम जनता को युद्ध के लिए तैयार किया जा सकता है। अतः हो सकता आज लंका और बर्मा के बौद्ध इस रणनीति का प्रतिरोध कर अपनी प्रतिक्रिया उसी भाव से प्रकट कर रहे हो? जो भी हो फिलहाल शांति हो सकती है, लेकिन वह कितने दिन स्थिर रहेगी इस पर प्रश्न चिन्ह लगा रहेगा। ■

वेदों की देन है सत्य और अहिंसा का सिद्धान्त

मनमोहन कुमार आर्य

आजकल सत्य और अहिंसा की बात बहुत की जाती है। सत्य और अहिंसा इन शब्दों का उद्गम स्थल वेद और समस्त वैदिक साहित्य है। वेद वे ग्रन्थ हैं जो सृष्टि के आदि में ईश्वर से मनुष्यों को प्राप्त हुए थे। वेद का अर्थ ज्ञान होता है। सत्य का अर्थ सत्तावान होता है। इसे इस प्रकार भी समझ सकते हैं कि जिस पदार्थ की सत्ता है, उसके गुण, कर्म व स्वभाव अवश्य होते हैं, उनका यथार्थ या ठीक ज्ञान सत्य कहलाता है। ईश्वर की सत्ता है तथा जीवात्मा और प्रकृति की भी सत्ता है। अतः ये तीनों पदार्थ सत्य कहे व माने जाते हैं। इसी प्रकार ईश्वर तथा जीवात्मा और प्रकृति के जो गुण कर्म व स्वभाव उनका यथार्थ ज्ञान सत्य कहा जाता है।

अहिंसा का अर्थ होता है- हिंसा न करना। इसका भाव है कि दूसरों के प्रति वैर भावना का त्याग करना। हम दूसरों के प्रति हिंसा तभी करते हैं जब हमारा दूसरों के प्रति वैर भाव होता है या फिर हमारा निजी स्वार्थ होता है। हिंसा इसलिए नहीं करनी चाहिए कि हम नहीं चाहते कि दूसरे लोग व प्राणी हमारे प्रति हिंसा करें। हिंसा जिसके प्रति की जाती है उसको हिंसा से दुःख व पीड़ा होती है। यदि हम चाहते हैं कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार न करे तो हमें भी दूसरों के प्रति हिंसा का त्याग करना होगा। इसके लिए हमें दूसरों के प्रति अपने मन व हृदय में प्रेम व स्नेह का भाव उत्पन्न करना होगा तभी हिंसा दूर हो सकती है। इससे हमारे मन व हृदय में शान्ति उत्पन्न होगी जिससे हमारा मन व मस्तिष्क ही नहीं बल्कि शरीर भी स्वस्थ एवं दीर्घायु होगा। अतः हर उस व्यक्ति को दूसरे प्राणियों के प्रति अहिंसा का व्यवहार करना चाहिए जो अन्य के द्वारा अपने प्रति हिंसा का व्यवहार होना पसन्द नहीं करता।

वेदों के आधार पर वेद मर्मज्ञ ऋषि दयानन्द ने एक नियम बनाया है जिसमें कहा गया है 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' एक नियम यह भी है मनुष्य को अपना हर काम सत्य व असत्य का विचार करके करना चाहिए। सत्य का ग्रहण और उसका पालन ही सभी मनुष्यों का धर्म होता है। जो मनुष्य सत्य को नहीं जानता और सत्य का पालन नहीं करता वह धार्मिक नहीं होता। जिस प्रकार अपने गंतव्य पर पहुंचने के लिए हमें उस गंतव्य की ओर जाने वाले मार्ग व साधनों का ज्ञान होना आवश्यक है, उसी प्रकार से मनुष्य जीवन को सफल करने के लिए भी सत्य का ज्ञान व उसका पालन आवश्यक होता है। कहा भी जाता है 'सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप।।' अर्थात् सत्य से बढ़कर तप व धर्म नहीं है और झूठ से बढ़कर पाप नहीं है। जिसके हृदय में सत्य विद्यमान है उसके हृदय में जानो ईश्वर विराजमान है।

वेद सब सत्य विद्या के ग्रन्थ हैं। संसार में ऐसा कोई मत व पंथ नहीं है जो यह सिद्ध करे कि उसके मत व धर्म के ग्रन्थ पूर्णतया सत्य पर आधारित हैं। ऋषि दयानन्द ने अपने विश्व प्रसिद्ध व संसार की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' में सभी मतों की असत्य मान्यताओं को प्रस्तुत कर ज्ञान व विद्या के आधार पर उनकी समालोचना की है और सभी मतों में विद्यमान असत्य मान्यताओं को तर्क व प्रमाणों से सिद्ध किया है। अतः वेद, वेदानुकूल दर्शन, कुछ उपनिषद व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ ही सत्य विद्याओं के ग्रन्थ सिद्ध होते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वैदिक साहित्य के इन ग्रन्थों से ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति सहित मनुष्य के कर्तव्यों व लक्ष्य का यथार्थ बोध होता है।

दूसरों को पीड़ा देना अधर्म कहलाता है। कोई भी विवेकी मनुष्य व विद्वान इस कृत्य को उचित नहीं कह सकता। अतः मनुष्य हो या पशु-पक्षी, किसी को भी पीड़ा देना अधर्म व महापाप होता है। दूसरों को पीड़ा देना उनके प्रति हिंसा ही कही जाती है। इससे बचने का उपाय यह है कि हम स्वयं को अहिंसक स्वभाव व भावना वाला बनायें। ऐसा करने पर ही हम वस्तुतः मनुष्य बनते हैं। वेद मनुष्य को मनुष्य बनने की प्रेरणा व आज्ञा देते हैं। 'मनुर्भव' इस एक शब्द में ईश्वर ने वेद के द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनने अर्थात् मननशील होकर सत्य को जानने व उसका आचरण करने की प्रेरणा की है।

यह भी ध्यान देने की बात है कि हमें सबसे यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए। यथायोग्य का अर्थ होता है जैसे को तैसा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम असत्य व हिंसक आचरण करने वाले मनुष्य का सुधार नहीं कर सकते। हमारे विरोध न करने से उसकी हिंसा की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। इसका दोष हम पर ही होगा। मनुष्य को सुधारने के चार तरीके होते हैं- साम, दाम, दण्ड और भेद। जो व्यक्ति सज्जन है उसे प्रेम से समझाया जा सकता है। यदि वह नहीं सुधरता तो कुछ दमन करना होता है। उस पर भी यदि वह न सुधरे और हिंसा का आचरण यदि करें तो फिर उसको दण्डात्मक हिंसा से ही सुधारा जा सकता है।

अहिंसा का यह अर्थ कदापि नहीं होता कि कोई हमारे प्रति हिंसा का व्यवहार करें और हम मौन होकर उसे सहन करें। यदि ऐसा करेंगे तो हिंसक मनुष्य का स्वभाव और अधिक हिंसक होगा और वह अन्य सज्जन लोगों को भी दुःख देगा। वेद हिंसक मनुष्य या प्राणियों के प्रति यथायोग्य व्यवहार की ही प्रेरणा देते हैं। गीता में कृष्ण ने भी कहा है कि 'विनाशाय च दुष्कृताम्' अर्थात् दुष्टता करने वाले मनुष्य की दुष्टता को कुचल दो। ऐसा करके ही अहिंसा का पालन व सत्य की रक्षा अनेक अवसरों पर होती है। अतः मनुष्यों को अहिंसा का प्रयोग करते हुए विवेक से कार्य लेना चाहिए। यह भी कहा जाता है कि अहिंसा कायर लोगों का आभूषण होता है। कुछ सीमा तक यह बात ठीक भी है। हमें एक सीमा तक ही लोगों का बुरा व्यवहार सहन करना चाहिए और यदि वह न सुधरे, तो फिर उसका उचित निराकरण यथायोग्य व उससे भी कठोर व्यवहार करके करना चाहिए।

योगदर्शन वेदों का एक उपांग है। अष्टांग योग में योग का पहला अंग यम है। यम पांच होते हैं- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह। महाभारत एवं भारत में बौद्ध व जैन मत की स्थापना से भी हजारों व लाखों वर्ष पूर्व से हमारे योगी, ऋषि-मुनि व वैदिक धर्मी लोग अहिंसा व सत्य सहित पांचों यमों का पालन करते आये हैं। ये यम किसी एक मत के लिए नहीं अपितु सभी मनुष्यों के पालन व आचरण करने योग्य हैं। सभी को इनकी मूल भावना के अनुसार आचरण करना चाहिए। इसी से मनुष्य जीवन शोभायमान होता है। ■

गीत

साध लिया है मौन सत्य ने, झूठ बराबर बोल रहा है
आड़म्बर ने आसन पाया, धर्म भटकता डोल रहा है
नैतिकता अपहरित हुई है, तार तार हैं मर्यादाएं
मूल्यहीन होती मानवता, रक्तहीन हो चली शिराएं
निडर हुआ अँधियारा इतना, दिन का उड़ा मखोल रहा है
आड़म्बर ने आसन पाया, धर्म भटकता डोल रहा है
फंदा कसा हुआ खेतों पर, खुली छूट है उद्योगों को
गलियों पर कानूनी बंदिश, हर आजादी राजपथों को
रोज रोज होता घोटाला, खोल सभी की पोल रहा है
आड़म्बर ने आसन पाया, धर्म भटकता डोल रहा है
चीख चीखकर थकी अयोध्या, मंदिर का निर्माण कराओ
घर की खाली गुल्लक बोली, काला धन वापिस तो लाओ
घाटी में दुश्मन का नारा, जिगर हमारा छोल रहा है
आड़म्बर ने आसन पाया, धर्म भटकता डोल रहा है

-- सतीश बंसल

आयो मदन गोपाल रंग ले होली में
खेलत गोपी-ग्वाल, गोरिया होली में
रंगो के रसिया के रस की रार मची है
पीके भंग करत हुड़दंग गोरी से आँख लड़ी है
मल-मल रंगते गाल गोरिया होली में
नीला, पीला, लाल गोरिया होली में
कामदेव ने रतिकन्या पर बाण चलाए
सोई जगी उमंग, अंग-अंग उमसाए
मर्यादा की टूटी ढाल गोरिया होली में
यौवन है बेहाल गोरिया होली में
लेके हाथ गुलाल करत सखियों से ठिठोली
गली-गली में ढूंढत है वृषभानु किशोरी
छेडत सबहिं गोपाल गोरिया होली में
हो जा मालामाल गोरिया होली में

-- डॉ रमा द्विवेदी

बाल कविताएं

छुटकू सा है मन गौरैया, फुदके नाचे ता ता थैया
जब भी यह घबराता है, खिड़की पर आ जाता है
खूब उड़ेगा आसमान में, नाम करेगा इस जहान में
सपने खूब सजाता है, पंखों को सहलाता है
घर से बाहर शोर बड़ा है, धूल धुँऐ का जोर बड़ा है
कुछ समझ ना पाता है,
मुश्किल में फँस जाता है
पेड़ो को हम ना कटवायें
सुंदर सुंदर फूल उगायें
यही विचार तब आता है
मन फिर फुदका जाता है

-- शिप्रा खरे

मेरे आंगन नीम के ऊपर, छोटी चिड़िया का सुन्दर घर
तिनका-तिनका से है सजाया, सजा-संवारकर है बनाया
उसने उसमें अण्डे दे डाले, प्रेम पूर्वक उनको पाले
नहीं उसे है जाड़े का डर, छोटी चिड़िया का सुन्दर घर
हरदम खुश रहती है चिड़िया, मन में फूटती हैं फुलझड़ियां
प्यारे कितने होंगे बच्चे, चूँ-चूँ करेंगे सीधे सच्चे
धीरे-धीरे उग आयेंगे पर, छोटी चिड़िया का सुन्दर घर
वह उड़ना उन्हें सिखायेगी, दूर-दूर घुमाकर लायेगी
स्वच्छन्द गगन में उड़-उड़कर, मेरे आँगन में आ गायेगी
हम रह जायेंगे मुस्कराकर
छोटी चिड़िया का सुन्दर घर
खुले आकाश में पालेगी
छाना चुगना सिखायेगी
मेरे आँगन नीम के ऊपर
छोटी चिड़िया का सुन्दर घर

-- शशांक मिश्र भारती

तितली हूँ मैं प्यारी सी, उड़ती हूँ मैं न्यारी सी
खाना खाती फूलों में, झूला झूलती फूलों में
चाल है मेरी न्यारी सी, तितली हूँ मैं प्यारी सी
बहुत दूर से आती हूँ, बच्चों के मन भाती हूँ,
लगती हूँ मैं सुन्दर सी,
तितली हूँ मैं प्यारी सी
पंख है मेरे रंग बिरंगे
लगते चमकीले रंग रंगीले
सबके मन को भाती हूँ,
नहीं हाथ में आती हूँ।

-- कालिका प्रसाद सेमवाल

नया साल है फिर से आया, नई उमंगें लेकर आया
नया साल है नए साल में, हम फिर से संकल्प करेंगे
कभी किसी को दुःख ना देंगे, नहीं किसी का बुरा करेंगे
नया साल है नए साल में, हम नूतन कुछ काम करेंगे
सब संतों की महानता से, रोशन अपनी राह करेंगे
नया साल है नए साल में, जीवन को खुशहाल करेंगे
मात-पिता का आदर करके, अपना भी उत्थान करेंगे
नया साल है फिर से आया, नई उमंगें लेकर आया

-- लीला तिवानी

रहता वन में और हमारे, संग-साथ भी रहता है।
यह गजराज तस्करों के, जालिम-जुल्मों को सहता है।
समझदार है, सीधा भी है, काम हमारे आता है।
सरकस के कोड़े खाकर, नूतन करतब दिखलाता है।।
मूक प्राणियों पर हमको तो, तरस बहुत ही आता है।
इनकी देख दुर्दशा अपना, सीना फटता जाता है।।
वन्य जीव जितने भी हैं, सबका अस्तित्व बचाना है।
जंगल के जीवों के ऊपर, दया हमें दिखलाना है।।
वृक्ष अमूल्य धरोहर हैं, इनकी रक्षा करना होगा।
जीवन जीने की खातिर, वन को जीवित रखना होगा।
तनिक-क्षणिक लालच को, अपने मन से दूर भगाना है।
धरती का सौन्दर्य धरा पर, हमको वापिस लाना है।।

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

सड़क किनारे जो भी पाया, पेट उसी से यह भरती है।
मोहनभोग समझकर, भूखी गइया कचरा चरती है।।
कैसे खाऊँ मैं कचरे को, बछड़ा मइया से कहता है।
दूध सभी दुह लेता मालिक, उदर [...] है।।
भोजन की आशा में बछड़ा, इधर-[...] है।
कोई चारा लेकर आये,
दरवाजे को झाँक रहा है।।
हरी घास के लाले हैं तो,
भूसा मुझे खिलाओ भाई।
मेरे हिस्से की खा जाते,
तुम सारी ही दूध-मलाई।।

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

मेरे पास आओ माँ, गीत कोई सुनाओ माँ
इम्तिहान खत्म हुए अब, मौज करेंगे मिलकर सब
बंटु, बंबु और जीतू आओ, यारो कुछ नया सुनाओ
दिनभर वक्त हमारा अब, नतीजे आएंगे सोचेंगे तब
दीदी मुझसे अब जलेगी, मेरे बैट बल्ले की चलेगी
कागज कलम का खेल बंद,
याद नहीं होते थे वो छंद
पापा,दादु और दादी सुनो,
सब को छोड़ बस मुझे चुनो
कहानियाँ मुझे सुनानी पड़ेंगी,
मेरी मांगे अभी और बड़ेंगी

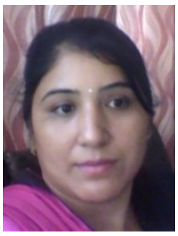

-- कामनी गुप्ता

गौरैया बड़ी प्यारी है, सब चिड़ियों से न्यारी है
सब कहते हैं लुप्त हो रही, मेरे चौबारे आती है
गौरैया से प्यार मुझे है, मुझसे प्यार वह भी है करती
सुना-सुना खुशियों के तराने
नवजीवन वह भरती है
तेजी से कटते पेड़ों को रोको
मोबाइल टावर हैं इनके दुश्मन
घोंसला बनाने की जगह इन्हें दो
उल्लसित कर देगी यह तन-मन

-- लीला तिवानी

लघुकथाएं

बेरोजगार

फर्स्ट क्लास एम.ए. और बी.एड. करने के बाद भी रवि को कहीं मनचाही नौकरी नही मिल पा रही थी। नौकरी की तलाश में वो जहां-तहाँ भटकता फिरता। वो बढ़ा हताश निराश सा रहने लगा रोज की तरह वो आज सुबह भी नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जा रहा था कि अचानक उसके दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। उसने दरवाजा खोला तो देखा सामने एक पन्द्रह सोलह साल का लड़का खड़ा हुआ था। उसके हाथ में कुछ गलीचे थे। वो लड़का रवि से गलीचे खरीदने का आग्रह करने लगा। रवि ने एक बार उसे ध्यान से निहारा और फिर उससे कहा- 'इस उम्र में काम कर रहे हो! ये तुम्हारी पढ़ने-लिखने की उम्र है। पढ़-लिख लोगे तो अच्छी नौकरी मिल जायेगी, वरना जीवनभर गली-गली घूमते रहोगे!' रवि की ये बातें सुनकर वो लड़का थोड़ी देर शांत रहा। फिर उसने रवि से पूछा- 'भैया आपने कितनी पढ़ाई की है?'

रवि ने गर्व और अकड़ से कहा- मैं फर्स्ट क्लास एम.ए. बी.एड. हूँ।' लड़का कुछ रुका और झिझकते हुए बोला- 'और काम क्या करते हैं?' अब रवि चुप था और वो बालक गली में गलीचे बेचते हुए जा रहा था।

-- पंकज 'प्रखर'

डाकिया

'डाकिया काका उदास क्यों हो क्या बात है?' रामबाबू डाकिया को उदास देख चिंटू ने कहा।

'क्या बताऊँ चिंटू डिपार्टमेंट ने चेतावनी दी है कि या तो कंप्यूटर या स्मार्ट फोन चलाना सीखो, ताकि उससे तुम अपना काम कर सको, नहीं तो अगले महीने से आपको सेवानिवृत कर दिया जाएगा?' रामबाबू डाकिया ने जवाब दिया। 'अरे काका तो इसमें क्या बड़ी बात है? सीख लो ये सब तो आसान है।'

'चिंटू आसान तो है, लेकिन जब हम इस विभाग में लगे थे, तो केवल पांचवीं पास थे और धीरे-धीरे काम सीख गए थे, लेकिन तीन साल लग गए थे। अब तो अफसर कहते हैं एक महीने में ही सीखो! अब तुम ही बताओ, इतने कम समय मे कैसे सीखें? अब तो नौकरी गई हमारी, और अभी तो हमने अपने बच्चों की पढ़ाई और शादी भी नहीं की है, पता नही क्या होगा।'

इतना कहकर रामबाबू उदास हो गया। चिंटू सोच में था कि टेक्नोलॉजी तो मनुष्य की सहायता के लिए है, लेकिन यहां तो उसकी वजह से मनुष्य का जीवन खराब हो रहा था।

-- राजेश मेहरा

‘इच्छा मृत्यु’ पर सुप्रीम कोर्ट की मुहर

जवाहर लाल सिंह

इच्छा मृत्यु यानी लिविंग विल पर सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों की संविधान पीठ ने फैसला सुनाया है. कोर्ट ने लिविंग विल में पैसिव यूथेनेशिया को इजाजत दी है. संविधान पीठ ने इसके लिए सुरक्षा उपायों के लिए गाइड लाइन की है. पैसिव यूथेनेशिया और लिविंग विल को लेकर संवैधानिक पीठ ने अपने ५३८ पेज के फैसले में विस्तार से बताया है. सुप्रीम कोर्ट ने यह भी साफ कर दिया कि आपात स्थिति या बेहद जरूरी नाजुक हालत में जब मरीज की हालत बेहद गम्भीर खतरे में हो, तभी चिकित्सा उपकरण हटाने के लिए सहमति ली जाए.

महाभारत की कथा में एक जादुई तालाब के किनारे अपने अचेत पड़े चार भाइयों को देख रहे युधिष्ठिर से यक्ष ने पूछा था, ‘सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है?’ युधिष्ठिर ने कहा, ‘सबको मालूम है कि मृत्यु अवश्यंभावी है, लेकिन सब ऐसे जीते हैं जैसे मृत्यु आनी ही नहीं है.’ हमारी मृत्यु जन्म के साथ ही पैदा होती है, उसके पहले कोई मृत्यु नहीं होती, जीवन इस मृत्यु को पीछे धकेलता जाता है, जन्मदिन की बधाई इस बात की बधाई है। यह बात गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने तब कही थी जब उनसे किसी ने पूछा कि जन्मदिन की बधाई क्यों, उम्र तो एक साल घट गई.

मौत से आप बच नहीं सकते. बुद्ध ने अपने बचपन में ही समझ लिया था कि बीमारी आती है, बुढ़ापा आता है और मृत्यु आती है. लेकिन सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने जब इच्छा मृत्यु पर कुछ शर्तों के साथ मुहर लगाई तो दरअसल वे जीवन और मृत्यु के दार्शनिक संबंध या मृत्यु की अपरिहार्यता पर ही नहीं, उस सामाजिक संकट पर भी ध्यान दे रहे थे, जो समाज में वृद्धों के अकेलेपन और बीमारी से पैदा हुआ है.

बूढ़ा या बीमार होना अभिशाप नहीं है, अकेला होना कहीं ज्यादा बड़ा अभिशाप है. आप अकेले होते हैं तो बुढ़ापा कहीं ज्यादा तेजी से आपका पीछा करता है. बीमारी कहीं ज्यादा जल्दी आपको घेरती है. यह सच है कि हमारे पुराने समयों में भी ऐसे बुजुर्ग रहे जो घरों की उपेक्षा झेलते रहे, अकेले कोनों में बीमार पड़े रहे, लेकिन इच्छामृत्यु जैसे खयाल ने उनको नहीं घेरा. भारतीय समाज में यह एक नई परिघटना है। ऐसे बुजुर्ग बढ़ रहे हैं जिनको अपने लिए यह इच्छामृत्यु चाहिए. निस्संदेह एक गरिमापूर्ण जीवन के गरिमापूर्ण अंत की कामना से ही यह जरूरत उपजी है.

अरुणा शानबाग के जिस मामले से यह सारा प्रसंग इतना बड़ा हुआ, उसका एक सबक और है. ४२ साल तक कोमा में रही अरुणा शानबाग के लिए इच्छामृत्यु की मांग वे लोग करते रहे जो उन्हें बाहर से देखते रहे. इसका विरोध उन लोगों ने किया जो उनकी देखभाल करती थीं. किंग एडवर्ड कालेज मुंबई की वे नर्सें अपनी एक सोई-खोई सहेली को रोज बहुत एहतियात से संभाल न रही होतीं, तो वह ४२ साल इस हाल में नहीं बचती. इन नर्सों ने कहा कि वे जब तक संभव होगा, अरुणा शानबाग को जिंदा रखेंगी. एक अपराध ने अगर अरुणा शानबाग को हमेशा के लिए कोमा में भेज दिया, तो कुछ लोगों के सरोकार ने उनके लिए जीवन की लड़ाई लड़ी. उनके जीवन को गरिमापूर्ण बनाया. अदालत ने भी इस सरोकार का सम्मान किया था, तब परोक्ष इच्छामृत्यु के अपने फैसले की छाया ४० बरस से सोई एक बेखबर काया पर नहीं पड़ने दी थी.

दरअसल जीवन का मूल्य इसी में है. हम जितना अपने लिए जीते हैं, उतना ही दूसरों के लिए भी. दूसरों से हमारा जीवन है, हम दूसरों के जीवन से हैं. लेकिन नए समय के दबाव सबको अकेला कर रहे हैं. परिवार टूटे हुए हैं, बच्चे परिवारों से दूर हैं, मां-पिता अकेले हैं, टोले-मोहल्ले खत्म हो गए हैं, फ्लैटों में कटते जीवन के बीच बढ़ता बुढ़ापा एक लाइलाज बीमारी में बदलता जाता है. एक बहुत बारीक मगर क्रूर प्रक्रिया में हम सब जैसे भागीदार होते चलते हैं.

इच्छा मृत्यु इसी क्रूर प्रक्रिया से निकलने की एक लंबी आखिरी सांस जैसी गली है. सुप्रीम कोर्ट अगर यह गली न खोलता तो वे हताशाएं और बड़ी होती जातीं, जो हमारे समय में ऐसे विकल्पों को आजमाने लायक बनाती हैं. शायद यह फैसला कुछ लोगों को याद दिलाए कि उनके अपने इतने अकेले और हताश न छूट जाएं कि वे अपनी मृत्यु के लिए मेडिकल बोर्ड बनवाने लगें. यह बहुत सदाशय कामना है, लेकिन ऐसी ही कामनाओं के बीच जीवन की सुंदरता और सहजता बचती भी है.

संभावना और डर इस बात का है कि इस कानून का लोग गलत फायदा न उठाने लगें. ऐसे ही आज आधुनिक समाज में सामाजिकता और पारिवारिक रिश्तों की अहमियत कम और धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है. घर में बूढ़े बुजुर्ग के प्रति सेवा भाव कम होता जा रहा है. बुढ़ापे में अनगिनत लाइलाज बीमारियों में सबसे बड़ी बीमारी है मशीनी युग में मानवीय संवेदना का अभाव या सिकुड़ते वक्त का तकाजा. बहुत सारे बुजुर्ग अपनी संपत्ति को अपने हाथ में बचाकर रखते हैं ताकि उस संपत्ति के लालच में उनकी संतान अंतिम समय तक सेवा करते रहेंगे. आजकल इस प्रकार की सेवा के लिए नर्स या परिचारक उपलब्ध हैं और वे अच्छी तरह से सेवा करना भी जानते हैं. पर बड़े बुजुर्ग अंतिम घड़ी में चाहते हैं, अपने आस पास अपनों की उपस्थिति और सेवा भाव, मीठे बोल और सद्व्यवहार, जिसकी दिन प्रति दिन कमी होती जा रही है.

उम्मीद की जानी चाहिए कि हमारा भारतीय समाज अत्यंत कठिन परिस्थितियों में ही इस निर्णय या विकल्प का उपयोग करेगा. हमारा दर्शन है जब तक सांस तब तक आस. बड़े बुजुर्ग उस बूढ़े वृक्ष की भाँति हैं जो फल नहीं देने की स्थिति में भी छाया तो दे ही सकते हैं. बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद ही हमारे लिए छाया है, वरदहस्त है. जय श्रीराम के साथ में हम लोग अंतिम यात्रा में यही तो कहते हैं कि राम नाम सत्य है अर्थात् मृत्यु ही अंतिम सत्य है. ■

जागो दलितो! जागो!!

संजय सिंह राजपूत

बुद्धू चमार के बेटे चेथरु ने आज घर को सर पर उठा लिया है। आज तक इतने गुस्से में उसे मैंने तो कभी नहीं देखा था। आम तौर पर वह बहुत सामान्य रहता है। उसे राजनीति से कोई दूर दूर तक का नाता नहीं रहा है। वह सिर्फ पढ़ने, थोड़ी देर दोस्तों के साथ खेलने और घर के काम में ही अपने को सीमित रखता है। कालेज पढ़कर सरकारी नौकरी की तलाश कर रही है।

वह बहुत स्वाभिमानी है। कई बार आरक्षण की सहायता से उसे नौकरी मिलने का अवसर भी मिला। लेकिन वह आरक्षण का घोर विरोधी है। वह अपनी मेहनत और ईश्वर पर विश्वास करता है। लेकिन उसका बाप आरक्षण समर्थक एवं राजनीति में भी इच्छुक रहता है। मैंने जब चेथरू से उसके गुस्से का कारण पूछा, तो वह पहले तो बताना ही नहीं चाहता था। लेकिन मेरे बार-बार पूछने पर जो कारण बताया, उसे सुन मेरे होश उड़ गए।

कहने लगा- ‘पिताजी उस दल के समर्थक हैं, जो दलित शोषित पिछड़ों के हक की बात करती है। यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं भी उनको ही पसंद करता था। मैं राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं रखता हूं। लेकिन वह कमजोर वर्ग की आवाज बुलंद करती है, यह जानकर मैं उन्हें पसंद करता था, लेकिन अब नहीं।

इस बात पर मैंने कहा- ‘यह तो ठीक है, पर झगड़े की वजह क्या है?’ उसने कहा- ‘पिताजी का कहना है कि मैं बसपा सुप्रीमो मायावती के उम्मीदवार को ही वोट दूं। यह तो ठीक नहीं है। मैं वयस्क हूं। मेरे पास सोचने-समझने की क्षमता है। अपना भला-बुरा पहचान कर सकता हूं, इसलिए झगड़ा हुआ है।’

मैंने कहा- ‘चेथरू, उनको वोट देने में हर्ज क्या है। आखिर तुम भी उनके नेतृत्व को पसंद करते थे। फिर अचानक नापसंद या वोट ना देना। यह मेरे समझ में नहीं आ रहा है।’ चेथरू इस पर कहने लगा- ‘चचा मैं उन्हें पसंद करता था, क्योंकि वे हमारे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सम्मान और हक के बारे में बोलती थी। लेकिन अब उनका मुखौटा उठ चुका

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

अब नो उल्लू बनिंग!

देवेन्द्र राज सुथार

महान दार्शनिक सुकरात ने कहा था- 'जो व्यक्ति मूर्खता करने बाद अपने आप को मूर्ख माने दरअसल वो सबसे बड़ा ज्ञानी है। और जो व्यक्ति मूर्खता करने के बाद भी अपने आप को मूर्ख नहीं माने दरअसल वो सबसे बड़ा मूर्ख है।' अब इस कथन के आधार पर सोच लीजिए कि आप मूर्ख है या ज्ञानी? समझे जानी! अगर ज्ञानी होते तो पांच-पांच साल के बाद मूर्ख बनने के लिए और मूर्ख बनाने के लिए अपने में से ही किसी एक को मूर्ख बनाने का ठेका नहीं सौंप देते? खैर! मूर्ख बनने के भी अपने मजे हैं। जो मूर्ख होता है उसे पता नहीं होता कि वो मूर्ख है। वह दुनिया की सारी चिंताओं से मुक्त होता है। और जब इस मूर्खता की आयु लंबी हो जाती है तो उसे 'पागलपन' कहते है। और पागल होना मतलब जिंदगी की सारी समस्याओं को विरामचिह्न देकर दूसरों के लिए परेशानियों का प्रश्नचिह्न बनना है। ज्ञातव्य यह है कि मानव को आदिकाल से मूर्ख बनने का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त है। और हर मानव को अपने जीवनकाल में मूर्ख बनने का स्वर्णिम अवसर भारतीय संविधान के सार्वभौमिक मताधिकार तहत मिलता ही है।

वैसे मूर्ख बनाने की कला में अंग्रेज बहुत पारंगत थे। वे खुद को एक दिन मूर्ख बनाते थे और दूसरों को दो सौ वर्षों तक मूर्ख बनाकर रखते थे। मूर्ख बनाने की कला का जन्म भले ही ब्रिटिशों के द्वारा हुआ हो, लेकिन मूर्ख बनने की कला का तो जन्म भारत में ही हुआ है। भारतीयों को मूर्ख बनने का ऐसा चस्का लगा कि वे अब मूर्ख बने बिना रह नहीं सकते। ये कहें कि यहां लोग मूर्ख बनने के आदी हैं। वायदों के पांव पर टिकी कुर्सी पर सियासत की गादी है। भारतीयों को मूर्ख बनने के लिए किसी एक विशेष दिन की आवश्यकता नहीं होती है। जिस तरह भारत की संस्कृति में ३६५ दिन त्योहार और मेले होते हैं, उसी तरह यहां ३६५ दिन मूर्ख दिवस भी होता है। मजे कि बात यह है कि मूर्ख बनने और बनाने का क्रम तो वहीं है। लेकिन मूर्ख बनाने के तरीकों में समय वृद्धि के साथ कई नवीनताएं आ चुकी हैं।

पहले भारतीयों को अंग्रेज उनके ही घर में जबरन कर वसूली कर मूर्ख बनाते थे। और अब लोकतंत्र में पांच ग्राम चिप्स के साथ पांच सौ ग्राम हवा बेचकर लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। और हम काले अंग्रेज चिप्स के चटकारे लेते हुए मूर्ख बनने के मजे ले रहे हैं। है ना कमाल? अंग्रेजों ने अपने समय में देश में अंग्रेजी को रानी का दर्जा दिया और हिन्दी को उसके ही घर में नौकरानी जैसा बर्ताव कर हमें मूर्ख बनाया। और आज जब देश मूर्खता के तथाकथित अंग्रेजी व्यूह से आजाद माना जा रहा है, तो भी हम काले अंग्रेज अब तक मूर्ख बनकर अंग्रेजी की आशिकी में ही अपना सारा रुपया बर्बाद करते जा रहे हैं। है ना अतुल्य भारत!

बाबूमोशाय! दुनियादारी की रेल में मतलब के लिए मूर्ख बनाने का खेल है। कोई मूर्ख बनाने में पास, तो कोई फेल है। चुनावी नेता से लेकर सिनेमा के अभिनेता तक और दूध वाले से लेकर दारू वाले तक सब मूर्ख बना रहे हैं। फेसबुक पर लड़के-लड़कियों की फेक आईडी बनाकर लड़कों से ही चौटिंग के बहाने प्रेम-व्रेम की बातें करके मूर्ख बना रहे है। तो वहीं हमारे देश के होनहार बाबा लाल और नीली-पीली चटनियों से किस्मत बदलने का नुस्खा बता रहे है। कई बाबा तो बाबियों को गुप्त रहस्य बताने के बहाने गर्भवती तक कर रहे हैं! इस रहस्य का रहस्य बाबियों को नौ महीने बाद पता चल रहा हैं।

सरकार डिजिटल इंडिया में भले ही भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के दावे कर रही हो लेकिन यह डिजिटल इंडिया भी मूर्ख बनने का हक हमसे नहीं छीन सकता, क्योंकि अब तक ऐसे आधार कार्ड का अविष्कार ही नहीं हुआ, जो मूर्ख बनने पर रोक लगा सके। तभी तो नरेंद्र मोदी के डिजिटल इंडिया में नीरव मोदी और विजय माल्या ने मूर्ख बनाने के सारे कीर्तिमान भंग कर डाले। यदि आप अभी भी इस भ्रम में जी रहे हैं कि आप लोकतंत्र हैं, तो यह सबसे बड़ी मूर्खता है। जनाब! इसे ठोकतंत्र या मूर्खतंत्र कहिए! अब नो उल्लू बनिंग। ■

नानी का गांव

संजय सिंह राजपूत

'क्या हाल है भाई रमेश आज उदास लग रहे हो। घर में सब ठीक-ठाक है ना?'

'हां भाई घर में तो सब ठीक ही है।'

'फिर उदास क्यों हो?' घूरा ने पूछा।

रमेश बहुत धीमी स्वर में बोला, 'क्या बताऊं यार! मेरी धर्मपत्नी हमेशा मेरे साथ रहने की कसमें खाती है, जिससे मर्जी झगड़े मोल लेती है। यह जानते हुए भी कि मैं उनसे पार नहीं पा सकता, फिर भी मैं उसका साथ देता हूं। मेरे कुछ अपने लोग भी हैं, जो मेरे हर समय में मेरा साथ देते हैं, चाहे वे जिस लालच से मेरा साथ देते हों, लेकिन साथ देते हैं। चूंकि घर से लेकर बाहर तक उर्मिला ही मालिकन है। मुझसे ज्यादा सामाजिक-राजनीतिक जिम्मेदारी उसकी बनती है, लेकिन जब भी कोई दुख पड़ आता है, वह परिवार को छोड़कर अपने मायके चली जाती है।

'तुमको तो पता ही है कि हम रमुआ से जमीन का मुकदमा जीतने ही वाले थे। जीत जाने पर जमीन पर हमारा कब्जा भी हो जाता। तुम तो जानते ही हो जमीन की जीत कोई ऐसी वैसी जीत नहीं होती है बल्कि साख की जीत होती है शायद इसीलिए कहा गया है कि जर, जोरू, जमीन पर जो जीत पा लिया, वह दुनिया को जीतने में काबिल भी है और माहिर भी।

जर, जोरू, जमीन ये तीनों साख की लड़ाई होती हैं। इस लड़ाई में अच्छे-अच्छे मँजे हुए पहलवान की हल्की सी चूक भी सामने वाले को जीत परोस देने में काफी हो जाती। लेकिन वह निश्चिंत हो गयी, यह सोचकर कि हम तो जीत ही गए हैं, अब तो हमारा ही राज होगा। लेकिन अगले ही पल वह मायके चली गई। और तब तक यहां सब कुछ पलट गया, रमुआ ने जमीन पर कब्जा कर लिया और हम हाथ मलते ही रह गए।

'उर्मिला जब बाद में मायके से वापस घर लौट आई, तब मैंने उससे पूछा, 'फैसले आने के वक्त मायके क्यों चली गई थी? हमारा सारा परिश्रम बेकार हो गया।' उस समय उर्मिला ने कुछ जवाब नहीं दिया।

फिर बोली, 'समय आने पर सब कुछ बता दूंगी।' इस बार फिर फैसला आने से पहले ही वह मायके चली गई थी।

आज जब पुनः ऐसे मौकों पर बार-बार मायके जाने का कारण पूछा, तो वह बहुत प्यार से मुझे समझाते हुए बोली, 'प्रियतम मैं खुशी से मायके नहीं जाती हूं, इसके पीछे का कारण तुम जानना चाहते हो तो सुनो। रमुआ से मुकदमा हम लोग लगभग जीत चुके थे, लेकिन उस जमीन पर कब्जा करने वाले लोगों की काफी संख्या थी। किसको देती और किसको नहीं। इसलिए मायके चली गई थी। इससे रमुआ को समाज में नीचा दिखाने का मौका भी मिला। इस बार भी मैं मायके इसलिए चली गई थी क्योंकि मुझे आभास हो चुका था कि फैसला हमारे हक में नहीं आने वाला है क्योंकि सामने वाला संख्या बल में भारी पड़ने लगा था।'

मैंने कहा, 'लेकिन इससे हमारे चाहने वाले मित्र बंधुओं को भी निराशा होती है। क्या तुमने कभी इसके बारे में सोचने की जहमत उठाई है?'

उर्मिला कहने लगी, 'बिल्कुल सोचती हूं, और इसी कारण से मायके चली जाती हूं। ना मैं रहूंगी, ना मेरे पर जिम्मेदारी आयेगी। जब सब कुछ शांत हो जाता है, तब मैं आराम से लौट आती हूं। इससे मेरे अन्दर की गुणवत्ता के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं होता है।'

घूरा ने कहा, 'तुम्हारी धर्मपत्नी तो हमारे देश के सबसे पुरानी पार्टी के राजकुमार व अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की तरह है। वह भी अक्सर साख की लड़ाई में फैसले आने से पहले अपने नानी जी के घर चले जाते हैं। और इधर उनके कार्यकर्ताओं, समर्थकों को अपनी-अपनी जवाबदेही स्वीकारने में नानी याद आने लगती है।' ■

मैं हूँ ना...

राजकुमार कांदु

देवी असमय ही अपने पति को खो चुकी थी। फिर भी हिम्मत न हारते हुए अपने दो छोटे बच्चों के साथ वक्त के थपेड़ों से दो-दो हाथ करने के लिए भव सागर में उतर पड़ी। समाज की तीखी नजरों का सामना करते हुए भी उसने अपना कर्तव्य बखूबी निभाया और दोनों बच्चों को ऊंची तालीम हासिल कराई। दोनों बच्चे अब विदेशों में जम चुके थे। उनकी शादी भी हो चुकी थी और दोनों अपनी घर गृहस्थी में रमे हुए थे। गाहे-बगाहे दोनों ही मां से अपने साथ रहने का निवेदन करते लेकिन वह विनम्रता से उन्हें मना कर देती। उसकी यादें उस घर से जुड़ी थीं जिसमें वह रहती थी और उसे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहती थी।

एक दिन बड़े बेटे ने उसे फिर कॉल किया। आज भी उसका वही निवेदन था। उससे बात करने के बाद वह मोबाइल अभी कानों से हटाने ही जा रही थी कि उसे अपने बहू की तेज गरजती हुई सी आवाज सुनाई दी। बेटा शायद फोन कट करना भूल गया था। बहू कह रही थी- 'क्या जब देखो तब माँ जी के पीछे पड़े रहते हो। उनको यहां बुलाकर क्या करना है? यहाँ कितने खर्चे हैं देख नहीं रहे हो? ऊपर से उनको भी बुलाकर खर्चे बढ़ाने पर तुले हुए हो। अब मुझसे उनकी सेवा वेवा नहीं हो पाएगी.. हां!'

उसकी खुशामद करते हुए बेटे की आवाज सुनकर वह भौंचक्की रह गयी- 'अरी भगवान! तुम क्या मुझे बेवकूफ समझती हो? जानती हो यहाँ नौकर कितने महंगे हैं? आएगी तो घर का काम भी करने में तुम्हें आसानी हो जाएगी और हमारे नौकरानी के पैसे भी बच जाएंगे। बदले में उसे क्या देना है दो वक्त की रोटी ही तो...' कहने के बाद उसकी कुटिलता भरी हंसी बड़ी देर तक देवी के कानों में गूंजती रही। दिमाग में चल रहे अंधड़ के बीच उसने एक फैसला लिया और दृढ़ निश्चय करके उसपर अमल भी शुरू कर दिया।

सुबह बगीचे में टहलते हुए अक्सर उसकी मुलाकात नजदीक की ही कालोनी में रहने वाले शर्मा जी से हुई। औपचारिक बातों से शुरू बात का सिलसिला एक दूसरे के सुख-दुःख व हालचाल तक जा पहुंचा। शर्मा जी की कहानी सुनकर देवी को अपनी योजना और भी उचित जान पड़ी।

शर्माजी के भी दो बेटे थे, जो नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहरों में रहते थे। कुछ साल पहले ही उनकी पत्नी भी भगवान को प्यारी हो गयी थीं। एकाकी जीवन जीते हुए शर्माजी बेटों से तालमेल रखने की हरसंभव कोशिश करते, लेकिन बेटे शहर में अपने परिवार में ही खुश थे। शहर में बड़ा घर लेने की अपनी जरूरत को बताकर बड़े बेटे ने उनसे अपना घर बेच देने की इच्छा जताई थी, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। अब बाप बेटों में मनमुटाव का पैदा हो जाना अवश्यम्भावी था। कड़वाहट इतनी बढ़ी कि शर्माजी ने वसीयत बनवा दी और अपने मरणोपरांत अपनी सारी जायदाद किसी संस्था के नाम लिखवा दी।

अब देवी ने अपनी सोच के अनुसार अपने ही बड़े से घर में वृद्धाश्रम खोलने की अपनी योजना को अमली जामा पहनाने की शुरुआत कर दी। कानूनी औपचारिकता पूरी करने के बाद देवी बेसहारा वृद्धों की सेवा व तीमारदारी में लग गयी। अब उसका नियमित बगीचे में जाना कम होने लगा। बहुत दिनों बाद अचानक शर्माजी से देवी की मुलाकात हो गयी। देवी ने उन्हें अब कम आ पाने की वजह बताते हुए कहा- 'आप आखिर घर में अकेले ही रहते हैं। क्यों न आकर हमारे साथ ही रहें?'

अगले दिन आने का वादा करके शर्मा जी वापस अपने घर चले गए।

अपने वादे के मुताबिक शर्माजी अगले दिन सुबह ही देवी के घर पहुंच गए, जो अब वृद्धाश्रम में तब्दील हो गया था। शर्माजी वहां गए तो वहीं के होकर रह गए। दिनभर वृद्धाश्रम के लोगों की सेवा व उनकी देखभाल में देवी का वक्त बीत रहा था। शर्मा जी हर वक्त उसके साथ रहते व उसका हाथ बंटाते। अब वृद्धों की संख्या बढ़ने लगी थी। सबके लिए प्रबंध करना अब उसके लिए मुश्किल हो रहा था। दानदाताओं की संख्या भी अब आश्चर्यजनक रूप से कम हो गयी थी। आर्थिक तंगी झेलते हुए भी देवी ने खुद को टूटने नहीं दिया और अपने घर के पास ही अपनी खाली जमीन बेचने का इरादा कर लिया। शर्मा जी से सलाह ली। शर्मा जी ने देवी की सारी बात सुनने के बाद कहा- 'अगर तुम बुरा न मानो तो एक बात कहूँ?'

'कहो! बुरा क्यों मानूँगी?'

'तुम महिला होकर अकेले ही इतनी जिम्मेदारियां उठाती हो। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारा हाथ बंटाने को तैयार हूं।'

'नहीं! आप कभी-कभी मेरी मदद कर देते हैं इतना ही बहुत है। इससे आगे बढ़ने पर लोग क्या कहेंगे? हमें समाज का भी तो ध्यान रखना है!'

'लोगों का क्या है? लोग तो कहते ही रहेंगे। हां समाज का मुंह बंद करने का एक उपाय है मेरे पास। अगर तुम चाहो तो मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूं।'

'ये आप क्या कह रहे हैं?'

'मैं ठीक कह रहा हूँ देवी! बच्चे अपनी दुनिया में मस्त हैं। न कोई हमारा है न कोई तुम्हारा। तो क्या हमारी कोई जिंदगी नहीं? हमारे कोई अरमान नहीं? क्या शादी का मतलब सिर्फ शारीरिक सुख ही होता है? क्या भावनाओं की कोई कीमत नहीं? हम आज उम्र के इस पड़ाव पर कम से कम अपनी भावनाएं तो एक दूसरे से साझा कर सकते हैं। फिर भी अगर तुम ना चाहो तो कोई बात नहीं। जैसी तुम्हारी मर्जी!'

'अभी तो मैं अपने लिए नहीं इन बेसहारा बुद्धों के लिए चिंतित हूँ जो मेरे सहारे ही यहां पड़े हुए हैं। स्टोर में दस दिन का ही राशन पड़ा हुआ है।'

'अरे तुम उसकी फिक्र छोड़ो और मेरे सवाल का जवाब दो।'

'तो उनकी फिक्र कौन करेगा?' कहते हुए देवी ने घूम कर शर्मा जी की तरफ देखा।

शर्माजी के चेहरे पर एक गहरी मुस्कान तैर रही थी। बड़े ही रोमांटिक अंदाज में बोले, 'मैं हूँ ना...!'

और 'धत!' कहती हुई देवी उनके आगोश में समा गई। देवी की मौन स्वीकृति से अभिभूत होकर शर्मा जी ने उसके माथे पर चुम्बन लेते हुए अपने प्यार की मोहर लगा दी। ■

सीखना एक सतत प्रक्रिया

भरत मल्होत्रा

सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत निरंतर चलती रहती है। आदमी जितना अधिक सीखता जाता है उतना ही अपना अज्ञान उसे मुखर होकर दिखाई देने लगता है। अज्ञानी या अल्प ज्ञानी स्वयं को बहुत विद्वान समझता है। जैसे-जैसे ज्ञान बढ़ता है वैसे-वैसे ही समझ आता है कि हम महासागर को चम्मच से उलीचने का दुष्कर कार्य साधने का प्रयास कर रहे हैं। अनंत जन्मों के अथक प्रयत्नों से भी यह संभव न होगा। महान यूनानी दार्शनिक सुकरात ने एक बार ये घोषणा कर दी कि मुझसे बड़ा अज्ञानी इस पृथ्वी पर और कोई नहीं है। कृपा करके कोई मुझे विद्वान कहने की भूल न करे। तब उस समय के ज्ञानी महापुरुषों ने कहा कि आखिर सुकरात ज्ञान के नगर में प्रविष्ट हो ही गया।

मनुष्य को सीखने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। हर आयु, हर स्थान, हर समय सीखने के लिए उपयुक्त होता है। इस संसार का सर्वश्रेष्ठ विद्यालय है यह जीवन स्वयं और इस विद्यालय के शिक्षक हैं समय, परिस्थितियाँ एवं हमें मिलने वाले व्यक्ति। जीवन प्रतिपल हमें कुछ न कुछ सिखा रहा है। अगर मनुष्य आँखों और कानों के साथ-साथ दिमाग भी खुला रखे तो कोई व्यक्ति हो या परिस्थिति हमें कुछ ना कुछ सिखाते ही हैं। इसे ही हम जीवन का अनुभव कहते हैं। कुछ अनुभव सुखद होते हैं और कुछ दुखद। प्रायः देखा गया है कि बुरा समय, बुरी परिस्थितियाँ एवं बुरे व्यक्ति हमें अधिक

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

राजकीय बौद्ध संग्रहालय, गोरखपुर की उत्कृष्ट सूर्य-प्रतिमा

वेद प्रताप सिंह

ऋग्वैदिक कालीन देवताओं में सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान था. उस काल में आर्यों ने सूर्य से सम्बन्धित अनेक देवताओं की कल्पना कर ली थी. इनमें सविता, पूषण, मित्र, आर्यमन और विष्णु प्रमुख हैं. इस प्रकार वैदिक काल से ही सूर्योपासना का उल्लेख स्पष्ट रूपेण मिलने लगता है. शनैः- शनैः यह परंपरा सम्पूर्ण भारत में विकसित होती गयी और कालान्तर में सूर्योपासना के निमित्त अनेक मंदिरों तथा मूर्तियों का निर्माण होने लगा.

जैसा कि हम जानते है कि सूर्य-प्रतिमा का प्राचीनतम उदाहरण पटना से प्राप्त एक मौर्यकालीन ठीकरा है जिस पर वे चार अश्वों से जुते हुए रथ पर सवार हैं, उनके साथ सारथी अरुण भी प्रदर्शित किये गये हैं. बोधगया से प्राप्त एक स्तम्भ पर भी सूर्य अंकित किये गये हैं. सूर्य की कुषाणकालीन प्रतिमा मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है जिसमें उनके एक हाथ में तलवार तथा दूसरे में कमल का गुच्छा है. इसमें उनके वाहन के रूप में दो अश्व प्रदर्शित किये गये हैं. वस्तुतः मथुरा सूर्योपासना की ईरानी परंपरा का महत्त्वपूर्ण केंद्र रहा. इसी प्रकार गुप्तकाल में भी सूर्य-प्रतिमाएँ निर्मित हुईं तथा अश्वों की संख्या दो से बढ़कर चार तक हो गयी. इस युग में विदेशी एवं भारतीय तत्वों के मिश्रण से सूर्य प्रतिमा-निर्माण का नया स्वरूप विकसित हुआ. तदनन्तर पूर्व-मध्ययुग में देश के अनेक भागों में तत्कालीन शासकों ने सूर्य-मंदिरों का निर्माण कराया जिनमें गर्भगृह के अंतर्गत प्रधान देवता के रूप में सूर्य-प्रतिमा को प्रतिष्ठापित किया जाता था.

प्रस्तुत लेख में इस संग्रहालय में सुरक्षित एक उत्कृष्ट सूर्य-प्रतिमा (संग्रहालय सूचीकरण संख्या ८८६ /६३) का विवरण निरूपित किया गया है, जो ऐतिहासिक व पुरातात्विक-दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है. वर्ष १९६३ में यह प्रतिमा पुरावशेष विक्रेता कुमारी नीहारिका टंडन से क्रय के फलस्वरूप संग्रहालय को प्राप्त हुई. इसका आकार ३४x३२ सेंटीमीटर है और विन्ध्य क्षेत्र के भूरे-बलुए पत्थर से निर्मित है. उक्त प्रतिमा का प्राप्ति-स्थल वाराणसी जनपद के पाँचों पंडवा, शिवपुर नामक स्थान है. विवेच्य पुरावशेष का प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूप निम्नवत है-

वर्तमान में उक्त आवक्ष प्रतिमा का अधोभाग दुर्भाग्यवश खंडित हो चुका है जिससे यह प्रतीत होता है कि प्रतिमा पूर्व में अपने स्थानक रूप में रही होगी. सूर्य के सिर पर किरीट मुकुट बना हुआ है जो अलंकरण-युक्त है. देवता के उभय नेत्र पूर्णोन्मीलित प्रदर्शित हैं. नासिका का अग्रभाग कुछ घिसा हुआ है. सूर्य अपने दोनों कानों में मकर-कुंडल धारण किये हुए हैं और उनके मुख पर शांति का भाव प्रदर्शित है. यह अपने दोनों हाथों को कंधे तक उठाये हुए हैं और प्रत्येक हाथ में पूर्ण विकसित सनाल कमल-पुष्प धारण किये हुए हैं. दोनों हाथों में कंकण सुशोभित है जो बहुत घिस चुका है. देवता अपनी ग्रीवा में अलंकृत ग्रैवेयक पहने हुए है तथा उनके बाएँ कन्धे पर यज्ञोपवीत है. उक्त प्रतिमा का मुखमंडल अंडाकार पद्म प्रभामंडल से सुशोभित है. इस प्रकार शैलीगत आधार पर इस प्रतिमा का काल लगभग आठवीं शती ईसवी अनुमानित किया गया है.

उक्त परिप्रेक्ष्य में यह भी अवलोकनीय है कि सूर्य-प्रतिमा के निर्माण का प्राचीनतम उल्लेख वराहमिहिर ने अपने ग्रन्थ वृहत्संहिता में किया है. इसके आधार पर सूर्य को उत्तरी वेश-भूषा (उदीच्य वेश) में दिखाने का आदेश दिया गया है. इस वेश के अनुसार वक्षस्थल से पैर तक उनका शरीर ढका रहता है. वे सिर पर मुकुट धारण करते हैं और हाथों में दो कमल-पुष्प के डंठल को पकड़े रहते हैं. उनके कानों में कुंडल तथा गले में हार रहता है. कमर में वियंग सहित उनका मुख एक आवरण से ढका रहता है. अस्तु, उक्त प्रतिमा अपनी शैलीगत लक्षणों के अतिरिक्त साहित्यिक लक्षणों से भी पर्याप्त साम्य रखती है.

आलोच्य प्रतिमा से मिलती-जुलती एक अन्य सूर्य-प्रतिमा का उल्लेख डॉ नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी ने किया है जो राज्य संग्रहालय, लखनऊ में सुरक्षित है. यह प्रतिमा भूरे-बलुए पत्थर से निर्मित है. इस प्रतिमा में भी देवता के सिर पर मुकुट तथा उसके पीछे अंडाकार पद्म प्रभामंडल प्रदर्शित किया गया है. साथ ही, इसमें भी हाथों में सनाल कमल प्रदर्शित है. दुर्भाग्यवश उक्त प्रतिमा का बांया हाथ खंडित हो चुका है. शैलीगत आधार पर यह प्रतिमा लगभग नवीं-दसवीं शताब्दी ईसवी की है.

विवेच्य सूर्य-प्रतिमा के सम्बन्ध में एक ध्यातव्य बात यह भी है कि उक्त प्रतिमा का प्राप्ति-स्थल वाराणसी जनपद रहा है. आठवी-नवीं शताब्दी ई. में वाराणसी प्रतिहार शासकों के साम्राज्य का एक अभिन्न अंग था. अतएव उक्त सूर्य-प्रतिमा प्रतिहारकालीन मूर्तिकला का एक सुन्दर एवं श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है. ■

आरक्षण

बिपिन किशोर सिन्हा

मेरे गांव में एक दलित (चमार) है। लालजी राम उसका नाम है। उसकी पत्नी ने मेरी माँ की बहुत सेवा की थी। लालजी राम भी मेरे पिताजी के हर आदेश पर एक पैर पर खड़ा रहता था। वह रोज ही सवेरे मेरे घर आता था। आम के बगीचे की देखभाल उसी के जिम्मे थी। पिताजी तो अब नहीं रहे, लेकिन मेरे परिवार के सभी लोग उसे आज भी बहुत प्यार करते हैं। उसमें और उसकी पत्नी में एक ही बुरी आदत थी कि दोनों अत्यधिक कच्ची शराब का सेवन करते थे। पसिया टोली मेरे घर के पास ही है जो आज भी नीतीश कुमार की शराबबंदी को ठेंगा दिखाते हुए देसी शराब का जिले में सबसे बड़ा केन्द्र बन चुका है। लालजी की पत्नी पाँच साल पहले कच्ची शराब के सेवन से इस लोक से चली गई। लालजी भी शराबियों के आपसी संघर्ष में एक बार बुरी तरह पिटा, जिसके कारण रीढ़ की हड्डी में चोट आई। फलस्वरूप वह मुश्किल से चल-फिर सकता है, कोई काम नहीं कर सकता। वृद्धावस्था पेंशन और मेरे घर से प्राप्त आर्थिक सहायता ही उसका संबल है।

उसके दो बच्चे हैं, बारी-बारी से दोनों उसे खिलाते हैं। बड़े बेटे वीरेन्द्र का पढ़ने में मन नहीं लगा। किसी तरह कक्षा आठ तक पढ़ा। उसके बाद वह जयपुर चला गया, जहां मेरे गांव के अधिकांश युवक दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करते हैं। छोटा बेटा प्रदीप पढ़ने में कुछ अच्छा था। हमने उसे प्रोत्साहित किया, रुपए-पैसे, किताब-कापी की व्यवस्था की। किसी तरह उसने बी.ए. पास कर लिया। मुझे उम्मीद थी कि दलितों के आरक्षण कोटे में उसे नौकरी मिल जाएगी। लेकिन वहां हर पद के लिए उसकी प्रतियोगिता दलित समाज के क्रीमी लेयर के उन लड़कों से थी जिनके पिता आरक्षण का लाभ लेकर सरकारी नौकरी पाने के बाद शहरों में बस गए थे। प्रदीप ने कई प्रयास किए लेकिन हर बार असफलता ही मिली। इस बीच उसकी शादी भी हो गई।

अत्यधिक तनाव और आर्थिक तंगी के कारण उसके पेट में दर्द रहने लगा। डाक्टरों ने बताया कि उसके पेट में ट्यूमर है। सबने उसे टाटा मेमोरियल हास्पीटल, मुंबई जाने की सलाह दी। लेकिन वहां जाकर इलाज कराना उसके वश में नहीं था। गांव के ही कुछ युवक पिछली गर्मियों में घर आए थे। वे उसे लेकर जयपुर गए। वहां सवाई माधो सिंह अस्पताल में उसका इलाज हुआ। आपरेशन करके ट्यूमर बाहर निकाल दिया गया। गांव के जो युवक जयपुर में रह रहे थे,

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

(आठवीं और अंतिम किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

उसे रोता देखकर छोटी अम्मा ने मुझसे कहा- 'तुम कौन हो और सँजोत को कैसे जानते हो?'

'छोटी अम्मा, तकरीबन एक साल से हम दोनों एक दूसरे को जानते हैं। मैं प्यार करता हूँ इस लड़की से।'

मेरी बात पूरी होते ही सँजोत किसी बिफरी शेरनी सी उठी और अपनी आवाज में ताब लाते हुए उसने कहा- 'तपस्वी! जो तुम मुझे प्यार करते तो मुझे एक तवायफ की बेटी जानने के बाद मुझ से मुँह न मोड़ लेते।'

सँजोत मैने तुमसे मुँह इसलिए नहीं मोड़ा था कि तुम एक तवायफ की बेटी हो। मैंने तो मुँह इसलिए मोड़ा था कि मुझे अंदेशा हो गया था कि हम दोनों की धमनियों में परमार हवेली का खून है।'

'परमार हवेली, मैं कुछ समझी नहीं। तुम कौन हो बेटे?' छोटी अम्मा ने पहली बार मुझे छुआ था। बदले में मैने उनके पैर छूकर कहा- 'जसपाल परमार की बेटी ने अगर मुजरा किया, तो वो खुद को जिंदा नहीं रहने देंगे और मैं अपने पिता को मरने नहीं दूँगा।'

'तुम उनके बेटे हो?'

'हाँ छोटी मां! और वो आपका और अपनी गुड़िया का बेसब्री से हवेली में इंतजार कर रहे हैं।'

'तुम शायद नहीं जानते तपस्वी बेटे, एक बार मैं गुड़िया को लेकर गई थी उस हवेली पर, लेकिन वहां रुक न सकी। जब उस हवेली ने गुड़िया को बेटी मानने से इंकार कर दिया, तो अब गुड़िया किस हक से वहां से जायेगी?'

'छोटी अम्मा क्या सँजोत से मेरा प्रेम उसे कोई हक नहीं देता ?'

'पर तुमने तो कहा तुम भी उनके बेटे हो फिर?'

'कहते हैं कि पालनहार पिता भी पिता ही होता है छोटी मां!'

छोटी मां मेरी बात का कोई जवाब दे पाती, उससे पहले एक साजिन्दा अंदर आकर बोला- 'मुजरे का समय हो गया है सब लोग आ गए।'

उसके जाते ही मैंने कहा- 'छोटी अम्मा! बाकी मैं आपको रास्ते में या फिर हवेली पहुँच के समझाता हूँ। अभी समय नहीं है, हमें तुरंत निकलना होगा।'

कहकर मैंने घूमकर सँजोत की तरफ देखा, तो उसके आंसू उसके गाल और गले को तर कर रहे थे। मैंने उसकी ओर हाथ बढ़ाके के कहा- 'सँजोत! क्या मैं तुम्हें अपने प्रेम के अधिकार से अपने साथ लेकर चल सकता हूँ?'

सँजोत ने छोटी अम्मा की ओर देखा और उनकी स्वीकृति पाकर उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया, जिसे मैंने किसी दीवाने की तरह थाम लिया।

सँजोत का हाथ थामे जब मैं बाहर आया तो वहां पूरे शहर और उसके आस-पास के बड़े कहे जाने वाले लोग गावतकिया के सहारे पीठ टिकाये बैठे थे। हमारे पीछे-पीछे छोटी अम्मा भी बाहर आ गई थी।

'ये लड़का कौन है कामिनी?' पान चबाती एक औरत ने छोटी अम्मा से पूछा था। ये औरत शायद उस कोठे में सबसे वरिष्ठ थी।

छोटी अम्मा कुछ कह न सकी। तभी वहां बैठे लोगो में एक शोर उठा- 'मुजरा शुरू किया जाये, मुजरा शुरू हो।'

एक साथ इतने लोगों को देखकर सँजोत सहम कर मेरे पीछे आ गई। 'मुजरा नहीं होगा।' यह कहकर मैं सँजोत के सामने आ गया।

'ऐ तूँ कौन है बे कल के छोकरे मुजरा नहीं होने देने वाला?' उनमें से एक खड़ा होकर बोला। बाकी लोगों ने उसका समर्थन किया।

'ये मेरी होने वाली पत्नी है और कोई भी इंसान अपनी पत्नी को मुजरा नहीं करने देगा।' मैंने बाबुलंद आवाज में कहा।

मेरी बात सुनके कई लोग ठठा मारकर हंस पड़े। फिर उनमें से एक ने कहा- 'अरे देखते क्या हो, बंद कर दो इस लड़के को एक कमरे में और नाचने दो इस लड़की को आज।'

उसकी बात सुनकर कुछ लोग मेरी ओर बढ़े, सँजोत और छोटी अम्मा के चेहरे का रंग पीला पड गया।

पर मैंने वापस आवाज बुलंद करके कहा- 'जो मुझे किसी ने छुआ भी तो जमीदार जसपाल सिंह परमार से निपटने के लिए तैयार रहे।'

पिताजी का नाम सुनते ही मानो उन सबको सांप सूंघ गया हो। सब अपनी जगह मानो चिपक के रह गए।

'चलो छोटी अम्मा।' कहकर मैं सँजोत का हाथ पकड़े चल पड़ा। पीछे से छोटी अम्मा भी साथ थी। वो सब हमें सिर्फ जाते हुए देखते रहे।

उनके बीच से चलकर हम सीढ़ियां उतरकर नीचे आये। पहले मैने सँजोत को सहारा देकर बिठाया, फिर छोटी अम्मा को।

ड्राइविंग सीट पर बैठकर इंजन स्टार्ट करके मैने होठों पे हास्य लाकर सँजोत से पूछा- 'चलें छोटी अम्मा की बेटी!'

उसने उत्तर में सिर्फ सर हिलाकर 'हाँ' कहा और मैंने गियर डालकर जीप आगे बढ़ा दी।

(समाप्त)

(पृष्ठ ११ का शेष)

कहानी - अनोखा उपहार

'आप कुछ परेशान सी दिख रही हैं माँ! क्या बात है?'

'तुम्हारे भाई अब बंटवारा करके अलग हो चुके हैं नीलू। वह...।'

'अरे! यह कब हुआ माँ? मुझे तो मालूम ही नहीं। अब आप किसके साथ रहेंगी? हाँ, बड़े के साथ ही रहेंगी न! वही तो आपका सबसे अधिक ध्यान रखता है। कभी किसी चीज की कमी नहीं होने देता। फिर आप इतनी परेशान क्यों हैं? अब तो आप जब मन चाहे मेरे पास भी आकर रह सकती हैं।'

माँ की बात बीच में ही काटकर नीलिमा अपनी ही धुन में बोलती चली जा रही थी, फिर अचानक एक नजर माँ की तरफ गौर से देखा तो कुछ पूछने से पहले ही उनकी आँखों की कोरें भरी हुईं देखकर हैरान रह गई।

'वह बात नहीं है बेटी, बात यह है कि जिस दिन तुम्हारे सास-ससुर के वृद्धाश्रम जाने की बात बेटे-बहुओं को पता चली, उसी दिन से उस घर से मेरी विदाई की कवायद शुरू हो गई। तुम नहीं जानतीं, बहुओं में आए दिन खींचातानी और चखचख तो चलती ही रहती थी, पर अलग होने पर मुझे कौन रखेगा इसी बात पर आकर बात टल जाती थी। वृद्धाश्रम के लिए पहले तो मेरे बचाव में अकेलापन बहुत बड़ा हथियार था, लेकिन तुमने उनकी मुश्किल आसान कर दी। अब मुझे अपने समधियों के साथ यहीं रहना होगा।' कहते हुए माँ ने कार से उसका सामान उतरवाकर आते हुए बेटे और दामाद की तरफ इशारा कर दिया।

नीलिमा के तो जैसे होश ही उड़ गए। आँखों के आगे अँधेरा छा गया। पासा पलट चुका था, उसका अंतर्मन जीत का जश्न भूलकर इस अप्रत्याशित हार पर हाहाकार कर उठा। अपने ही बुने जाल में वह स्वयं फँस गई थी।

मगर जली हुई रस्सी में ऐंठन अभी बाकी थी। गुस्से से आग-बबूला होकर चीखते हुए बोली- 'ऐसा कैसे हो सकता है माँ? दो बेटे, दो बहुएँ, उनके दो-दो बच्चे। इतना बड़ा भरा पूरा परिवार। सब तो मेरी इकलौती प्यारी माँ को सर आँखों पर रखते थे और बहुएँ तो जॉब भी नहीं करतीं न...!'

'कल तक ऐसा ही था नीलू, मगर खरबूजे को देखकर ही खरबूजा रंग बदलता है न...!'

'पर मेरी सहमति के बिना उन सबकी यह हिम्मत कैसे हुई? आखिर मैं सबसे बड़ी हूँ। तय तो यही था न कि आपके होते हुए कभी घर का बँटवारा नहीं होगा। और शादी से पहले भाभियों के लिए भी मैंने यही शर्त रखी थी, फिर माँ, आपने भी कोई विरोध क्यों नहीं किया? मैं अभी बड़े से इसका उत्तर माँगूंगी।'

'कैसा विरोध, और किस बात का उत्तर चाहिए तुम्हें बेटी? जबकि तुमने... हाँ नीलू! तुमने खुद ही मुझे यह उपहार सौंपा है।' कहते हुए माँ ने कंधे पर डली हुई शाल के छोर से आँखों की गीली कोरें पोंछ लीं। ■

नारी का अस्तित्व एवं नारी मुक्ति

विनीता चैल

कहते हैं कि आज नारी का अस्तित्व खतरे में हैं पर क्यों? नारी के लिए आज कई कानून हैं। समाज की ओर से नारी के लिए सभ्यता, संस्कृति और नैतिकता के नाम बेड़ियाँ तैयार की हुई हैं, जिसकी रक्षा हेतु समाज और सरकार की ओर से काफी प्रयत्न किये जा रहे हैं। हम मानें या न मानें आज भी समाज में नारियों के पैरों में बेड़ियाँ जकड़ी हुई हैं। नारियां पुरुषों के अधीन हैं हमारे पुरुष प्रधान समाज में एक नारी शोषण ही होता है। अपने परिवार और समाज के खिलाफ जाकर कुछ करने के पहले एक स्त्री सौ बार सोचती है।

हमारे समाज में आज बहुत ही कम नारियां हैं जो समाज में खुद को प्रतिस्थापित कर पाती हैं। नारी मुक्ति केवल एक नारा नहीं है, आज इसे सफल अभियान बनाने की जरूरत है। एक परिवार में जब एक बेटी का जन्म होता है, तो लोगों के चेहरे लटक जाते हैं और बेटों के जन्म पर खुशियों की मिठाई बांटी जाती है। यह हमारे समाज का एक कटु सत्य है, लेकिन ध्यानपूर्वक एक बार हम सोचें तो हमारे समाज में यदि बेटियां न हो तो हमें अपने बेटों के लिए बहू कहाँ से मिलेगी? नारी हमारे समाज की एक ऐसी कड़ी है जो मायके और ससुराल दोनों कुनबों एक साथ जोड़ती है। आज नारी प्रत्येक क्षेत्र में खुद को स्थापित करने लिए लड़ रही है एवं स्वावलम्बी बनाने की दिशा में प्रयत्नशील है।

आज हमारे देश में चारों ओर 'बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ' का नारा गूंज रहा है। यह हमारे देश एवं समाज के लिए बहुत ही उत्तम विचार है। हमें अपनी बेटियों को पढ़ाने और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए अथक प्रयास करने होंगे, क्योंकि एक पढ़ी-लिखी स्त्री न केवल अपने परिवार बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए हितकारी होती है। घर में अगर स्त्री शिक्षित हो तो पूरा परिवार शिक्षित होता है। परिवारों के शिक्षित होने से हमारा समाज एवं सारा राष्ट्र उन्नत होता है।

कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य अपराध है यह बात हम सभी जानते हैं। बेटी पढ़ाओ और बेटी बचाओ इस सुंदर सन्देश के पीछे एक मनोवैज्ञानिक कारण निहित है। स्त्री शिक्षा के साथ-साथ हमें समाज से स्त्री-पुरुष भेद-भाव को भी मिटाना होगा। शारीरिक दृष्टिकोण से स्त्रियों को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जब एक स्त्री के शरीर पर आक्रमण होता है तो उसका तन ही नहीं मन भी आहत होता है। इसलिए हमें अपनी बेटियों को शारीरिक सुरक्षा हेतु विशेष प्रशिक्षण देना चाहिए, ताकि वे आत्मरक्षा कर सकें। प्रभु श्रीराम की पत्नी सीता इस संसार की एक सक्षम एवं दृढ़ संकल्प वाली स्त्री मानी जाती हैं, परन्तु उन्हें भी अपनी असावधानी के कारण रावण रूपी दुराचारी का सामना करना पड़ा। इसलिए आज की स्त्रियों को भी सावधानी पूर्वक समाज में स्वयं को प्रतिस्थापित रखना होगा।

हमारी बेटियां अनमोल हैं यह बात हमारे समाज को समझनी होगी। बेटियां ससुराल और मायका दोनों को जोड़ती हैं। बेटी जियेगी तो ही हमें बहू मिलेगी और संसार में नवजीवन का संचार व निर्माण होगा। इसलिए पढ़ेगी बेटी तो ही आगे बढ़ेगी बेटी। आज हम नारियों को आगे बढ़कर स्वयं को पुरुषों द्वारा बांधी जंजीरों से मुक्त करना होगा। कोई पुरुष कितना भी ताकतवर क्यों न हो एक स्त्री के समान कभी नहीं बन सकता। स्त्री में नवजीवन देने की विशेष क्षमता होती है, पुरुष इस काम को कभी नहीं कर सकता। आज नारी को स्वयं निर्भय बनने की जरूरत है। सही मायने में नारी मुक्ति खुद पुरुषों की बनायी गई रीतियों से मुक्त करना है। आज नारी अपने मन के दर्पण से पुरुष का भय दूर करे, वो पुरुष को मुक्त करें क्योंकि नारी तो मुक्त ही है। जीवन में खुलकर साँस लें और सफलता की उड़ान भरें। ■

शिक्षा क्षेत्र में बदलाव की कड़ी आवश्यकता

महेश तिवारी

यह देश के समक्ष सबसे बड़ी विडंबना है कि जिस दौर में अन्य क्षेत्रों में हम नित नए आयाम स्थापित करने की बात करते हैं, उसी दौर में शिक्षा, जो समाज निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, चरमरा गई है। आज छात्र ही फेल नहीं हो रहे, परीक्षाएं भी फेल हो रही हैं। छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की दर बढ़ रही है। प्रायः किसी क्षेत्र में कोई समस्या हो तो, उसे दूर करने का उपाय किया जाता है। लेकिन शिक्षा का क्षेत्र आज समस्याओं में आकंठ डूबा है, पर उसमें सुधार का कोई उपाय न होना चिंतित करता है। यह दुःखद स्थिति है।

शिक्षा समवर्ती सूची का विषय है। फिर भी देश के एकाध राज्यों को छोड़ दें, तो सभी में शिक्षा के क्षेत्र में मलिन स्थिति है। आज वह व्यवस्था खुद फेल हो रही है, जो जीवन में सफल होने की गारंटी मानी जाती है। वर्तमान में शिक्षा क्षेत्र कई कमियों से दो-चार हो रही है, जैसे शिक्षकों की कमी, शिक्षा की गुणवत्ता में कमी और रोजगारपरक न बन पाना। इतना ही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में नूतनता का अभाव बच्चों की मौत का कारण भी बन रहा है। यह हाल पूरे देश का है। जो परीक्षा सफल और असफल होने की गारंटी बनती है, वह ही फेल हो रही है। ऐसे में यक्ष प्रश्न यह कि क्यों बच्चों पर अधिक नंबर लाने का दवाब डाला जाता है? अधिक नंबर लाना जीवन में सफल होने की गारंटी नहीं हो सकती।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का १०वीं का गणित और १२वीं का अर्थशास्त्र का पेपर लीक हो गया। यह भी शिक्षा व्यवस्था की ज्वंलत समस्या बनती जा रही है। जिससे कोई बोर्ड और प्रदेश अछूता नहीं है, चाहे मध्यप्रदेश बोर्ड हो, उत्तरप्रदेश हो या फिर बिहार बोर्ड। लेकिन अब बट्टा केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की साख पर लगा है, तो यह कष्टप्रद स्थिति है। यह देश का दुर्भाग्य है कि लचर परीक्षा प्रणाली का फल प्रतिवर्ष लाखों छात्रों को भुगतना पड़ता है। कभी पेपर लीक हो जाता है, कभी उत्तरपुस्तिका पर गलत नम्बर दे दिए जाते हैं, तो कभी गलत प्रश्न-पत्र थमा दिया जाता है।

आखिर इन समस्याओं से देश को मुक्ति कब मिलेगी? देश के विभिन्न हिस्सों में कभी टॉपर को फेल कर दिया जाता है, तो कभी फेल होने वालों को टॉपर बना दिया जाता है। शिक्षा के नाम पर यह कैसा खेल चल रहा है। हर बार परेशान छात्र ही होता है, परीक्षा विभाग तो जांच का आदेश देकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री समझ लेता है। ऐसा कब तक चलता रहेगा? एक ओर सरकार विद्यार्थियों का तनाव कम करने की बात करती है, तो दूसरी तरफ परीक्षा प्रणाली की खामियां उनके तनाव को असहनीय बना देती है।

परीक्षा प्रणाली अगर लचर होती जा रही है, तो इसका सबसे बड़ा कारण शिक्षा क्षेत्र से जुड़े कर्मचारी हैं। कर्मचारियों की बेईमानी तो समस्या की जड़ थी ही, अब उसे और बढ़ाने का काम तकनीक ने किया है। इसलिए किसी भी बोर्ड, राज्य सरकारों और संस्थाओं द्वारा परीक्षा आयोजित करना बड़ी समस्या बन गयी है। कुछ समय पूर्व तक बिहार और उत्तरप्रदेश ही परीक्षा प्रणाली में विसंगतियों को लेकर बदनाम थे, लेकिन अब कोई राज्य सुरक्षित नहीं हैं। जिस परीक्षा प्रणाली से देश में योग्य लोगों को छाँटा जाता है, यदि उसकी विश्वसनीयता ही अधर में है, तो ऐसी पढ़ाई का क्या अर्थ?

परीक्षाएं योग्यता का मापदंड मानी जाती हैं, इसलिए उनकी विश्वसनीयता भी बनी रहना आवश्यक है। इसके लिए राज्य सरकारों और केंद्र को कड़े कदम उठाने चाहिए, नहीं तो पुरानी शिक्षा व्यवस्था यानी गुरुकुल पद्धति की ओर बढ़ना चाहिए, क्योंकि गुरुकुल व्यवस्था आज की शिक्षा व्यवस्था से कई मायने में अच्छी और विश्वसनीय भी है। इसके अलावा शिक्षा क्षेत्र की कुछ समस्याओं जैसे किताबों का भारी बोझ और बच्चों की आत्महत्या में कमी भी गुरुकुल पद्धति से लाई जा सकती है। गुरुकुल पद्धति इसलिए भी आज की शिक्षा प्रणाली से बेहतर है, क्योंकि उसमें न अंकों के फेर में छात्र फंसता है, और न एक ही पैमाने पर सभी छात्रों की कुशाग्र बुद्धि का परीक्षण किया जाता है। अतः जरूरत सिर्फ इस बात की है कि शिक्षाशास्त्री, सरकार और अभिभावक कुछ सार्थक पहल करने को तैयार हों। एक उत्तम विकल्प तो पहले से मौजूद है ही। ■

(पृष्ठ २५ का शेष)
जागो दलितो! जागो!!

है। आप ही बताइए अगर मायावती दलितों के शुभचिंतक होती तो क्या अखिलेश से गठबंधन करती? असल में सत्ता के भोगी है। हाल ही में उत्तर प्रदेश के लोकसभा उपचुनाव में बसपा समर्थकों ने सपा उम्मीदवारों को अपना मत दिया था। मैं तब मानता जब गठबंधन के साथी अखिलेश यादव राज्यसभा में जया बच्चन की जगह अंबेडकर को जिताते। अखिलेश और मायावती दोनों दलितों शोषितों के हक की लड़ाई की बातें कर रहे हैं। आप ही बताइए- क्या अंबेडकर दलित नहीं थे। फिर उनको राज्यसभा में क्यों नहीं जिताया?

जया बच्चन एक महिला नेत्री है। लेकिन उनका योगदान क्या है भारतीय राजनीति में या उत्तर प्रदेश की राजनीति में? इसी बात पर कल से ही घर में बहस छिड़ी हुई है। क्या यह दलित का शोषण नहीं है? देश के सारे राजनीतिक दल महागठबंधन करने की तैयारी में हैं। यह अच्छी पहल है। ये सभी एकता और अखंडता के उदाहरण बनेंगे। लेकिन यह एकता सिर्फ इसलिए कि एक व्यक्ति को हराना है। वह व्यक्ति जिसके सामने अमेरिका जैसे विकसित एवं शक्तिशाली देश को झुककर अपने देश के दौरे का निमंत्रण देना पड़ा। क्या उस व्यक्ति के लिए जो हमारे प्रतिद्वंद्वी देश पाक को दुनिया के सामने नीच और आतंकवादी देश लगभग घोषित करा दिया। उस व्यक्ति के लिए महागठबंधन जिसके अमेरिका दौरे के दौरान वहां के राष्ट्राध्यक्ष उनके स्वागत में प्रोटोकाल तोड़कर आगे बढ़े।

उसी अमेरिका के दौरे पर गये पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के कपड़े उतारकर सुरक्षा जांच की जाती है। क्या उस व्यक्ति के लिए जिसके शासनकाल में घोटालेबाज देश छोड़कर भागने को मजबूर हैं। हां, एक गलती उनकी भी है कि वे घोटाले उजागर करने के साथ-साथ उन्हें गिरफ्तार करके जेल में भी डालें।

बस यही कथन था मेरा बाबूजी से और वे आग बबूला हो गए। फिर मुझे भी गुस्सा आया और झगड़ा हो गया। मेरे बाबूजी ढकोसला करने वालों के लिए अपने बेटे को भी भूल गए। मुझ पर हाथ उठाया। मैं नहीं कह रहा कि आप किसको समर्थन करें या ना करें।

क्या आपको नहीं लगता कि हमें और अधिक जागरूक होने की जरूरत है। अपनी इच्छानुसार मताधिकार एवं समर्थन करना चाहिए। आज मैं चेथरू के सामने नतमस्तक हो गया। ■

(पृष्ठ २१ का शेष)
इलेक्ट्रॉनिक्स किरदार

माला होती और लोग अपने आराध्य का स्मरण करते थे। किंतु आजकल माला की जगह मोबाइल आगया।

गांवों में वृक्षों की संख्या से ज्यादा होने के लक्ष्य टॉवर प्राप्त कर रहे हैं। दुनिया में विकास होना भी जरूरी है। लोग चाँद पर बसने की सोच रहे और हम चलनी से चाँद को निहार रहे। हर सदस्य के पास मोबाईल और घरों में चार्जर ऐसे लटकते हैं। मानों पेड़ों पर चमगादड़ लटक रही हो। मोबाइल की फिक्र यदि घर मे कहीं भूल से रख दिया, तो उसकी खोज की चिंता। ये तो हर घरों में रोज ही तमाशा होता है। यानी 'बगल मे छोरो गाँव में ढिंढोरो'। आप और हम क्या कर सकते हैं। इसके चलन में साथ तो चलना ही होगा।

अब चौबीस घंटे में से इसकी रियाज में पंद्रह घंटे लोगबाग दे ही रहे हैं। दूसरे लोगों को इनके रिकार्ड तोड़ने की लगी है। नींद इनकी आँखों से गायब और नींद से बनने वाले सपने हो गए धूम। सपनों में आने वाली प्रेयसी न आने से मजनू का दिमाग भिन्नाभोट हो रिया है। भिया, लो अब सुबह होने को है। एक संदेश त्योहारों एवं कार्यक्रमों की अग्रिम शुभकामनाएं देने को उतावला आ खड़ा हुआ। हमारे सुखद जीवन के लिए कितनी फिक्र रहती है ये तो मानना पड़ेगा। और तो और, संदेश में मिठाइयों और चाय के फोटो भी संलग्न। खाने के लिए हाथ बढ़ाया, तो पीछे खड़ी श्रीमती ने टोक ही दिया- 'क्या ज्यादा ही भूख लगी है?' ■

(पृष्ठ २७ का शेष)
सीखना

सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। सुख का अधिकांश समय तो उसका आनंद लेने में ही निकल जाता है। हम हर प्रकार से लापरवाह हो जाते हैं एवं ये सोचते हैं कि ये समय सदा ऐसा ही रहेगा। परंतु समय कभी एक सा नहीं रहता। जैसे हर दिन के बाद रात का आना तय है वैसे ही सुख के बाद दुख का आना अवश्यंभावी है। यदि हम सुख को अस्थाई जानकर उससे कुछ सीखने का प्रयत्न करके अपने आप को आने वाले दुःख के लिए तैयार करते रहेंगे तो दुःख हमें ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाएगा। जीवन में अच्छा बुरा जो भी मिले उसे सहज रूप से स्वीकार करके उससे कुछ न कुछ ग्रहण करने वाला मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ है। ■

(पृष्ठ ५ का शेष)
महिला दिवस पर...

होगा। क्योंकि आधी आबादी को अनदेखा करके विकास और आधुनिकता की बातें तर्कहीन ही सिद्ध होंगी।

जरूरत इस बात को समझने की है कि स्त्री और पुरुष दोनों एक दूसरे के पूरक हैं प्रतिस्पर्धी नहीं और मानव सभ्यता के विकास एवं एक सभ्य समाज के निर्माण के लिए एक दूसरे के प्रति संवेदनशीलता तथा सम्मान का भाव आवश्यक है।

भारत की अनेकों नारियों ने समय-समय पर यह सिद्ध किया है कि वह अबला नहीं सबला है, केवल जननी नहीं ज्वाला है। जो नाम कल झाँसी की रानी या कल्पना चावला था, आज देश की पहली रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमन, इंटर सर्विस गार्ड ऑफ ऑनर का नेतृत्व करने वाली पहली भारतीय वायुसेना की विंग कमांडर पूजा ठाकुर या फिर भारतीय वायुसेना में फाइटर प्लेन मिग २१ उड़ाने वाली अवनी चतुर्वेदी है।

तो महिला दिवस की सार्थकता महिलाओं के अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता में नहीं अपितु पुरुषों के उनके प्रति अपना नजरिया बदल कर संवेदनशील होने में है। ■

(पृष्ठ २८ का शेष)
आरक्षण

उन्होंने ही चन्दा करके उसका इलाज कराया, जिसमें डेढ़ लाख रु. खर्च हुए। जातीय भावना से ऊपर उठकर युवकों ने उसका इलाज कराया। अभी होली में प्रदीप से मेरी मुलाकात हुई। अब वह ठीक है, सरकारी नौकरी पाने की उम्र पार कर चुका है। एक कंपनी के घरेलू उत्पाद बेचकर वह अपनी आजीविका चला रहा है।

बिहार के पिछले विधान सभा के चुनाव में लालू-नीतीश गठबन्धन को प्रचंड बहुमत मिला था। मैं जब भी घर जाता हूं, लालजी मुझसे मिलने अवश्य आता है। मैं जबतक रहता हूं, उसे खैनी खाने के लिए प्रतिदिन बीस रुपए देता हूं। मेरे चचेरे बड़े भाई स्थानीय राजनीति में सक्रिय रहते हैं। वे भाजपा के मंडल अध्यक्ष हैं। विधान सभा चुनाव के बाद मैं घर गया था। मैंने लालजी से पूछा- 'चुनाव में तुमने किसे वोट दिया था?' उसने भैया को न बताने के वायदे के बाद बताया- 'मैं सबसे झूठ बोल सकता हूं, पर आपसे नहीं। आप मनोज भैया को मत बताइयेगा। उन्होंने मुझसे कमल पर वोट डालने के लिए कहा था, लेकिन मैंने तीर (नीतीश) को वोट दिया।'

मैंने फिर प्रश्न किया- 'तीर में तुम्हें क्या अच्छाई दिखाई पड़ी?' उसने उत्तर दिया- 'बबुआ आप समझते नहीं। लालू भैया ने मीटिंग में कहा था कि कमल वाले पावर में आने पर दलितों का आरक्षण खत्म कर देंगे।' मैंने उससे पूछा कि आरक्षण से तुम्हें कभी कोई फायदा हुआ है? तुम्हारा बी.ए. पास बेटा दर-दर की ठोकरें खाता रहा, लेकिन उसे चपरासी की भी नौकरी नहीं मिली। इसके बाद भी तुमने लालू की बातों पर विश्वास कर लिया। उसने कहा कि जाने दीजिए, बिरादरी के किसी न किसी को फायदा तो मिलता ही होगा।

मैं उसकी त्याग-भावना के आगे नतमस्तक था। मैं घर जाता हूं तो वह पहले की तरह ही आने का समाचार पाकर मिलने आता है और खैनी का पैसा लेता है। उसका बेटा प्रदीप सायकिल से अब भी घूम-घूमकर घरेलू उत्पाद बेचता है। प्रदीप की पत्नी मेरे ही घर में झाड़ू-पोंछा करती है। लालजी का परिवार साठ साल पहले जैसा था, आज भी वैसा ही है। उसे आरक्षण की कभी कोई सुविधा नहीं मिली लेकिन वह आरक्षण नीति में किसी तरह के बदलाव का प्रबल विरोधी है। ■

(पृष्ठ १८ का शेष)
कहानी - कर्मफल

प्रधान और अन्य पाप के भागीदारों का सामाजिक पतन हो गया है। प्रधान के पास अब परधानी भी नही है। एचआईवी की वजह से स्वास्थ्य भी खराब होता जा रहा है। दवाओं के सहारे अपने पापों का बोझ लादे हुए सभी अपनी जिंदगी को घसीट रहे हैं।

रानी भी एआरटी सेंटर पर दवा लेने आती है, उसे सुकून है, अब उसका शरीर नोचने वाले खुद अपना पाप भोग रहे हैं।

उन्हें उनके कर्मों का फल मिल गया है। मगर मैं अक्सर यह सोचता हूँ कि आखिर रानी को ऊपर वाला किन कर्मों की सजा दे रहा है? ■

नवगीत संग्रह 'नदी कहना जानती है' का लोकार्पण

रायबरेली। भीतर से बाहर तक नदी के अविरल, लयबद्ध, कल्याणकारी भाव को समोये वरिष्ठ साहित्यकार रामनारायण रमण जी के सद्यः प्रकाशित नवगीत संग्रह 'नदी कहना जानती है' का भव्य लोकार्पण लेखागार सभागार में दि. ११ मार्च को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती की पूजा-अर्चना एवं अतिथियों के स्वागत-सत्कार से हुआ।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एवं आलोचक डॉ ओमप्रकाश सिंह ने की, जबकि दिल्ली से पधारे युवा कवि एवं आलोचक डॉ अवनीश सिंह चौहान मुख्य अतिथि एवं सुपरिचित गजलगो नाज प्रतापगढ़ी विशिष्ट अतिथि रहे।

डॉ ओमप्रकाश सिंह ने कहा कि रमण जी के गीत समकालीन सन्दर्भों को मजबूती से व्यंजित कर रहे हैं और उनमें संवेदना की गहराई है। उन्होंने मजदूर, किसान, गांव, शहर, बेरोजगारी जैसे विषयों को अपने नवगीतों में बखूबी पिरोया है।

नाज प्रतापगढ़ी ने रमण जी के नवगीतों में उर्दू भाषा के शब्दों के संतुलित प्रयोग एवं रचना कौशल की सराहना की। सुविख्यात गीतकार डॉ विनय भदौरिया ने रमण जी के शीर्षक गीत 'नदी कहना जानती है' की विस्तार से चर्चा की और उनके गीतों को प्रेम में पगा हुआ बताया। ■

डॉ सुलक्षणा सम्मानित

नई दिल्ली। नरेंद्र मोदी विचार मंच की महिला शाखा की हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष एवं प्रमुख समाजसेवी डॉ सुलक्षणा अहलावत को द ग्रेट ह्यूमन आइकॉन अवार्ड २०१८ से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें महिला शक्ति जन-जागृति मंच द्वारा आयोजित एक शाम शहीदों के नाम कार्यक्रम में बॉलीवुड अभिनेता शिवा कुमार और संस्था की अध्यक्षा पूनम त्यागी द्वारा प्रदान किया गया। ■

अन्त. महिला दिवस पर कई लेखक-लेखिकायें सम्मानित

नई दिल्ली। हिन्दी भवन में दो काव्य संग्रहों का अनुराधा प्रकाशन के आयोजन में अन्त. महिला दिवस पर श्रीमती कविता मल्होत्रा की पुस्तक का विश्व विख्यात लेखिका डॉ सरोजनी प्रीतम, आज तक के वरिष्ठ पत्रकार पंकज शर्मा, मनमोहन शर्मा 'शरण', समाजसेवी बी.एस.मक्कर, नीलम आनंद द्वारा अनेक साहित्यकारों व समाजसेवियों की उपस्थिति में भव्य लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर कई महिलाओं एवं लेखकों को सम्मानित किया गया।

पिछले दिनों अनुराधा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक हिंदी भवन में ही अधूरे एहसास एवं काव्य कामिनी का लोकापण हुआ था। इसके उपरान्त मंच संचालक जसवन्त सिंह तंवर ने उपस्थित कवियों व समाजसेवियों का मनमोहन शर्मा के हाथों अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मान कराया गया। डॉ सरला सिंह, हीरेन्द्र चौधरी, सीमा बत्रा, श्री लाल बिहारी लाल, कृष्णा शर्मा, अर्चना भारद्वाज, वंदना मोदी गोयल आदि प्रमुख थे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सभी कवियों ने एक से बढ़कर एक कवितायें सुनाई। लाल बिहारी लाल की संदेशात्मक कविता 'नारी, नाड़ी की तरह करती है हर काम, नारी के सम्मान का विचार होना चाहिये' ने काफी सराहना बटोरी।

इस समारोह में उत्कर्ष मेल के वेबसाइट की भी सराहना हुई जिस पर देश दुनिया की तमाम महिलाओं एवं लेखको की लेख एवं कवितायें प्रकाशित हुई हैं। और चंद दिनों में ही साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। ■

संजय वर्मा 'दृष्टी' सम्मानित

इंदौर। साहित्य सागर संस्था द्वारा ११ मार्च को प्रीतम लाल दुआ हॉल में एक कार्यक्रम में उनकी कृति काव्य रंग के विमोचन पर मनावर के साहित्यकार संजय वर्मा 'दृष्टी' को दीर्घकालीन साहित्य साधना के लिए सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डॉ सरोज कुमार, डॉ मंगल मिश्र, चन्द्रसेन विराट, योगेन्द्र नाथ शुक्ल, रमेश प्रसाद शर्मा 'स्वतंत्र', रशीद अहमद शेख 'रशीद', दिनेशचंद्र शर्मा, डॉ शिव कुमार आचार्य, शोभारानी तिवारी आदि उपस्थित रहे। ■

राजेश पुरोहित सम्मानित

नई दिल्ली। कवि राजेश पुरोहित को साहित्य संगम संस्थान, दिल्ली द्वारा नववर्ष पर आयोजित ऑनलाइन कवि सम्मेलन में पुरोहित को उत्कृष्ट काव्य प्रस्तुति हेतु 'हिन्दवीर सम्मान' से सम्मानित किया गया। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

जय विजय मासिक

कार्यालय- १००२, कृष्णा हाइट्स, प्लॉट ८, सेक्टर २-ए, कोपरखैरणे, नवी मुंबई-४००७०६ (महा.)

मोबाइल-9919997596; ई-मेल-jayvijaymail@gmail.com; वेबसाइट-www.jayvijay.co

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।